यह

रसालंकार बोधिनी

छंदपयोनिधिचंद्रिका.

श्रीस्वामी स्वरूपदासजीकृत.

इसपर

कवि रमणविहारीकृत

छंद रसालंकार प्रकाशिका

टीकासहित

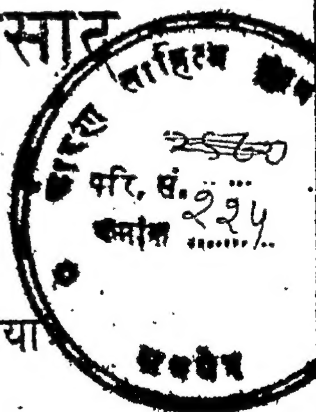
भागीरथात्मज हरिप्रसाद

गौड ब्राह्मणनें

मुंबईमें

जगदीश्वर छापखानेमें छपवाया.

संवत् १९५४.

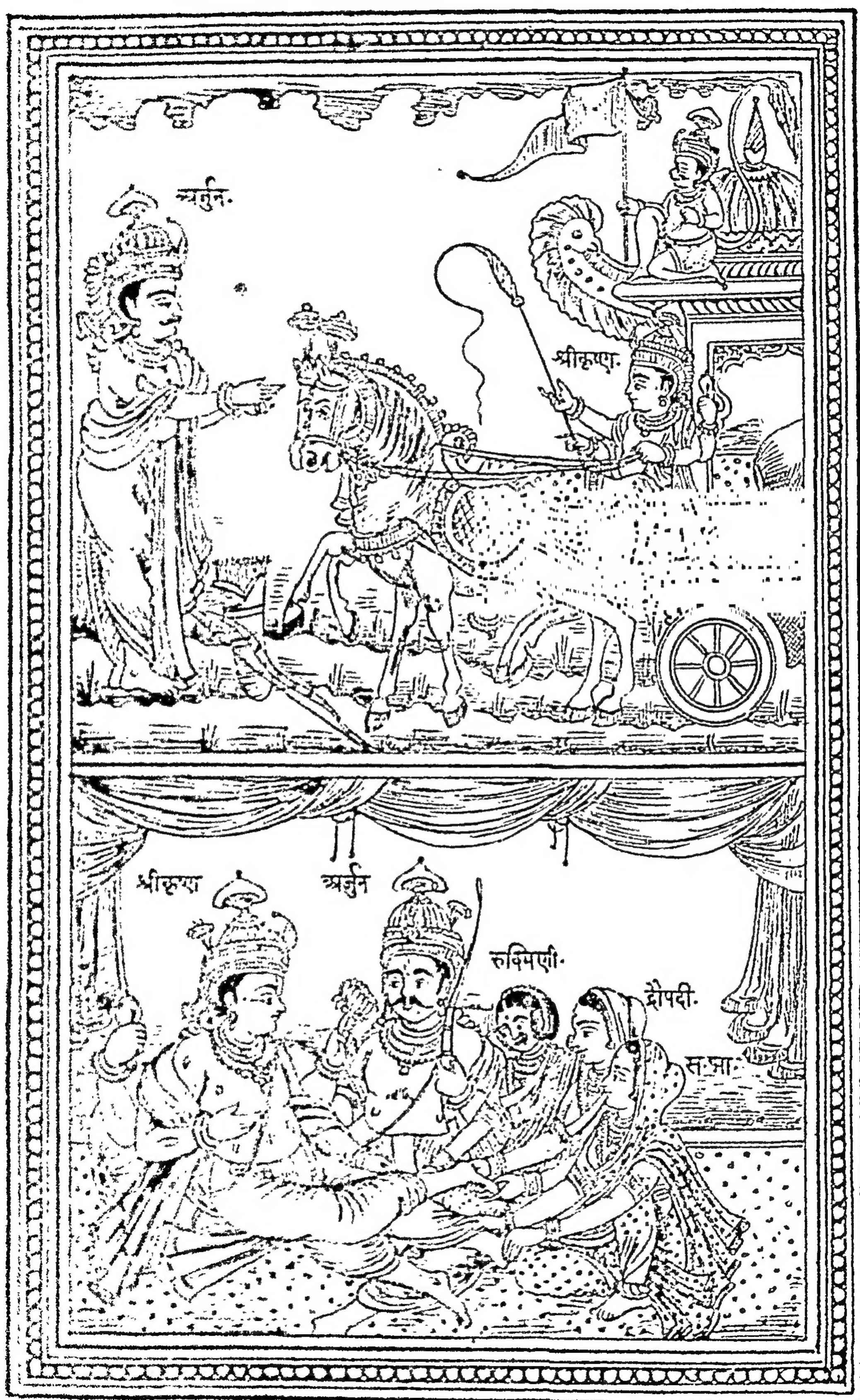


सूचनिका यह रसालंकारबोधिनी पांडवयशेंदुचंद्रिका श्रीस्वामिजी स्वरूपदासजीने संवत् १८९२ के सालमें चैत्र शुक्ल ११ के दिन रचिके तयार करी फिर यह ग्रंथ संवत् १९०९ सन १८५२ के सालमें इंदोर छापखानेमें छापा या अब संवत् १९३७ मार्गशीर्ष शुक्ल ९ भृगुवारके दिन कवि रमणविहारीने भागीरथात्मज हरिप्रसाद गौड ब्राह्मणकी प्रार्थनासे इसपर छंद रसालंकार प्रकाशिका नाम टीका रचिके तयार करी है.





मारुती
लक्ष्मी
भगवान्
गरुड


अर्जुन·
श्रीकृष्ण·
श्रीकृष्ण
अर्जुन
रुक्मिणी·
द्रौपदी·
स·भा·

अथ रसालंकारबोधिनी पांडवयशेंदु-चंद्रिका प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ श्लोक ॥ गुणालंकारिणौवीरौ धनुस्तोत्रविधारिणौ ॥ भूभारहारिणौ वंदे नर नारायणावुभौ ॥ १ ॥ ॥दोहा॥ ॥ध्यान कीरतन बंदना त्रिविध मंगलाचर्न ॥ प्रथमअनुष्टुपमैंकह्योई भयेत्रिधासुभकर्न ॥२॥ नमोअनंतब्रह्मांडके सुरभूपनकेभूप ॥ पांडवयशेंदुचंद्रिका बरनतदासस्वरूप ॥ ३॥

ग्रंथकर्ता ग्रंथके निर्विघ्नताके वास्ते ग्रंथादि देवताके ध्यान कीर्तन औ वंदनरूप मंगलाचरण करते हैं गुणालंकारिणौ इस श्लोक करिके गुणजो धनुषकीपणच औ अलंकारकरिके युक्त अथवा गुणोंकोभी अलंकृत करनेवाले औ धनुष तथा तोत्रको धारण करेहुये जैसेकि धनुषको अर्जुन औ तोत्र कहते हैं घोडाके हांकनेका कोडा यानें चाबुकउसको श्रीकृष्ण धारण कियेहैं औ भूभार यानें पृथिवीके भारके हरनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण औ अर्जुनरूप नरनारायणकी मै वंदना करता हों ॥१॥ ध्यान कीर्तन औ वंदना तीन प्रकारका मंगलाचरण है सो प्रथमके अनुष्टुप् छंदमें तीनो प्रकार कहे जैसेकी रूपवर्णनसें ध्यान औ पृथ्वीके भार हरणमें कीर्तन औ वंदे ऐसा कहनेमें वंदना ॥२॥ अब परमात्माको फिर प्रणाम करिके ग्रंथका नाम प्रगट करतेहैं कि अनेक ब्रह्मांडके नायकोंके नायकउनको नमस्कार करिके मैं स्वरूपदास पांडव यशेंदु चंद्रिका नाम ग्रंथ वर्णन करताहों तहां पांडवनकी विजयरूप जोयश सो तौ चंद्र भयो औ चंद्रिका यानें प्रकाश इसमें यह है कि स्वामीने सेवकको बडाई दी स्वामी श्रीकृष्ण औ सेवक अर्जुन सो अर्जुनका सारथीपना करिकेउनकी जीति कराई यही प्रकाश है ॥३॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

स्वामीकेंपीछेरहैं आदिहोयउच्चार ॥ नरनारायणशब्दकूं दासस्वरूप विचार ॥ ४ ॥ ॥ घनाक्षरी ॥ ॥ गरलतें भीमके सुज्वालाहूतें पांचहूके द्रौपदीकेसभाओ बिराटबनतीनवार ॥ किरीटिके अच्छरके शापतें युधिष्ठिरकुं मारबेकूं मरिबेको उदै भये असिधार ॥ दुरवासा शापवेकूं आयो ताकूं आदेदेके श्रूपदास केते कहे एकछंदमें प्रकार ॥ तेई मेरे ग्रंथ आदि मंगलउदय करो एते ठां अमंगलकूं मंगल करनहार ॥ ५ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ पोढे परिजंक परके सद किरीटीजूकी जंघा परहैके पांय द्रौपदीकी गोदमें ॥ त्यूंही पद अर्जुनके सत्यभाम रुक्मिणीके अंकबीच धरेतीनूं पलोटें विनोदमें ॥ अंतहपुरचारिनके देखत निमग्न भयेराजसूंमेंनेनसीन आनंदकेहोदमें ॥ ज्यों निरंतराईदास स्वामीकी स्वरूपदासत्यूंहोप्यासमेरी चारौपाय ध्यानमोदमें ॥ ६ ॥ गुणिगुण १ अंशीअंश २ विकारीविकारभाव ३ कारणअरुकाज ४ जातिव्यक्ति ५ वषाणेहैं ॥ सेवक औसेव्य ६ उपचार ७ स्तुति ८ सादृशता ९ उपमापरायण ऐतीनपदआनेहैं ॥ नोविकल्पताकोजीवईसमें अद्वैतवादी करेहै अभाव तत्ववेता लोक जाने है ॥ वासुदेव अर्जुनमें घटैहै रु घटै नांहि ऐसो ज्ञान भक्तिलीये श्रूपदास मानेहै ॥ ७ ॥ ॥ दंपतिपरिहास मंगलाचर्न ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ विष्णु कहै रमा तेरे पिताकी त्रिया जो गंगा शिवने छिनायलीनी ताको वैर कालयो ॥ रमा कहेजारत त्रिलोक ऐसोदीनो विषआपतें छिप्यो है का विख्यात विश्वमे भयो ॥

स्वरूपदासजी इस पांचमे कवितमें यह प्रार्थना करते हैं कि जैसे भीमको विषते औ अग्नित्ते पांचोंको इत्यादिक और रक्षा करिके मंगल करते भये तेई भगवान् मेरे या ग्रंथके आदिमें मंगल प्रकास करो ॥ ५ ॥

आपकोजरायो पुत्र कामसौंअनंगनामताकौंनिबिड्हाथली येपूजतनयोनयो ॥ ऐसोपरिहास कियोदंपतिस्वरूपदासमं गलकीरासिध्यानहूदैचित्रव्हैगयो ॥८॥ ॥दोहा॥ ॥हरि- हरसततमगुणमई चहियेगौररुस्याम ॥अन्योंअन्यकेध्यान तें भयेविलोमनमाम॥९॥ ॥कवित्त॥ ॥धनंजय १ विजय २ श्वेतवाहन ३ किरीटी ४ जिष्णु ५ अर्जुन ६ बि भत्सु ७ सव्यसाची ८ नामगहियें ॥ फाल्गुन ९ कृष्ण १० कृष्णसखा ११ नर १२ गुडाकेश १३ वासवी १४ संगीतवे- त्ता १५ विश्वजेत्ता १६ कहियें ॥ कौंतेय १७ गांडीवधारी १८ कपिध्वज १९ अभैकारी और कालखंजारी २० उच्चारकियाच हियें ॥ छत्रीकौं जरूर और कोऊकौं स्वरूपदासवीसनामजपें तेत्रिवर्गसद्यलहियें ॥१०॥

विष्णु सत्वगुणमय गोरवर्ण चाहिये औ शिव तमोगुणमय श्याम चाहिये· परंतु परस्पर ध्यान करिके विष्णु श्याम औ शिव गोरे होते भये उनको मैं नमस्कार करता हों ॥९॥ ये २० नाम अर्जुनको तो प्र- भाससमये स्मरणसे फलजरूरही देइंगे परंतु हर केई वक्त भी अ- र्थ धर्म कामके देनेवाले हैं ॥१०॥

कीर्ति १ लज्जा २ शांति ३ बुद्धि ४ प्रज्ञा ५ धृती ६ आस्तिकता ७ समता ८ अरुदमता ९ तेतनमता विनाशी है ॥ सुधराई १० गिरा ११ क्षमा १२ धीरता १३ उदारताई १४ विद्या १५ उपकारताई १६ विश्वमें विकासी है ॥ व्यासमुखप्राचीदिसासज्जनकुमुदचंद स्वरूपदास बुद्धिसोचकोरनी हुलासी है ॥ श्रीमानुजनकुलयजतासमें उदे इंदु षोडसकला कीताकी चंद्रिकाप्रकासी है ॥११॥ मंगलाचर्नकिमर्थं ॥ आदि १ सभा २ आरन्य ३ विराट ४ औ उद्योग ५ पर्व भीस्म ६ औ द्रोण ७ कर्ण ८ शल्य ९ पर्व कहिये ॥ सुषोप्तिक १० त्रिया ११ शांति १२ अनुशिष्या १३ अश्वमेध १४ व्यासाश्रम १५ मुसल १६ विचारकरि गहियें ॥ महाप्रस्थ १७ लेके स्वर्गआरोहण १८ आदिदेके अनुक्रमहीतें पर्व अष्टादश लहिये ॥ तिनकों संक्षेपचहें बरन्यो स्वरूपदास किरीटीके सारथी सहायनें कर हिये ॥१२॥ ॥ किंप्रयोजनं ॥ सवैय्या ॥ ॥ पांयछतें करिगोन हरी दिस फेरऐ पांव चलै न चलै ॥ जीभछतें गुनियें हरिकोजस फेरयेजीभ हलै न हलै ॥ नैनछते लखि रूपविराटको फेरयेनैन लखैं न लखैं ॥ श्रोतछतें हरिकीरतिकूं सुनिफेरयेश्रोन मिलै न मिलै ॥१३॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लाभजीयकारूजसकों पुनि परमारथसांच ॥ विघ्नसांत-

इस ग्रंथका नाम पांडवयशेंदुचंद्रिका धर्यो तहां पांडवके यशको चंद्ररूप कह्यो तामें सोरह कला चाहिये तहां ये कीर्ति लज्जा आदिक सोरह कला वर्णन करीं ॥११॥ मंगलाचरण किसवास्ते करते हैं सो कहते हैं कि आदिपर्व इत्यादि अठारह पर्व भारतकी इसग्रंथमें संक्षेपतासे वर्णन करने चाहता हों तहां जैसे अर्जुनके सारथी हैंके उनकी सहाय करी थी वैसेही मेरीहू करो ॥१२॥

परलोककी सिद्ध प्रयोजन पांच ॥१४॥ मेरे पांच हुहे मेरी जी
वका हरि हरिदास कीर्तन ग्रंथ किये जस भी हे पढेंगे जिनको
बुद्धि सुकर्म प्राप्ति प्रमार्थ ग्रंथ विषे विघ्नसांति परलोकसिद्धि हैं
हौ श्रीहरिकौ हरिदासनकौं मिश्रित यस साकलोनसरकंजनि
साचंद्र न्याधेन ॥१५॥ ॥अष्टादस पर्व शुचिपत्र प्रथम-
आदिपर्व शुचि॥ ॥कवित्त॥ ॥जन्मेजय सर्पसत्र ययाती
भरत जन्म औ साअवतर्न संभव सिक्षा अनुमानियें ॥ लाखाग्र
हे बकुल्यौ हिडंब औ बकासुरकौ द्रौपदी स्वयंवर औ राधावेध
जानियें ॥राज्य अर्ध लाभ यौ नास वर्ष द्वादसकौ अर्जुनकूं सुभद्रा
दितियालाभ गानियें ॥ खांडु दहिं कृष्ण अरजुन धनुस भारु भ
आदिपर्व शुचिपत्रनीकैकें पिछानियें ॥१६॥ ॥दोहा॥ ॥मुं
निअयेन द्रग वासगति अंकलिखहु अध्याय ॥ वेदें वस्क ग्रह
फिर वसु श्लोक अनुष्टुपन्याय ॥१७॥ ॥सभाशुचि॥ ॥
कवित्त॥ ॥नारदनै देवनकी सभा बहुधा सौं कही पांडुकौं सं
देस मुनिराजसूयकरिवौ ॥ चारो दिग जिते न्यारो भ्रातन तें माग
धकों भीमतें विनाश शिशुपालहुकौं मारिवौ ॥ सभा बीच कूंवौ अ
पमान स्वं सुयोधनकौ मच्छरता लिये पिता मातुलतें लरिवौ ॥ र-
च्यौ द्यूत खिच्यौ चीर ससुरनें दीनौ वर फेर द्यूत तें रा अर्द्ध वनकौ वि
चरिवौ ॥१८॥ ॥दोहा॥ ॥वसु मुनि अध्याय हैं सभाप-
र्वमें जान ॥ चंद्र मही सर अयेन लखि श्लोक प्रमान हि मा
न ॥१९॥ ॥वनशुचि॥ ॥कवित्त॥ ॥भास्कर तें

१ इहां अष्टादशपर्वकी सूचानिका लिखते हैं तहां आदिपर्वमें
२२७ अध्याय औ ८९८४ श्लोक हैं.

२ सभापर्वमें ७८ अध्याय औ २५११ श्लोक हैं.

अरवैपात्र आपत प्रथम भयो कृष्णाको मिलाप इतिहास नृप नलकौ ॥ जिष्णुतप अन्यलाभ कपट निरवाद जुधनाक गौमरंभा आपनास दैत्य दलको ॥ घोषयात्रा मोरवबंधु द्रोपदी हरनतामें जन्म अरु कैयो दुष्टजैद्रथ विकलको ॥ रामकथा तीर्थाटन कर्णजन्म अरनीते चारुबंधु मृत्यु यक्षजोग पानजलकौ ॥२०॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रख उर्मी द्रग वनपरब कही व्यास अध्याय ॥ वेद राग रितु विधु मही संख्या श्लोक जिताय ॥२१॥ ॥ विराटरुचि ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कंकभट बल्लभजी बृहन्नटा ग्रंथकार तंत्रीपाल सेरंध्री आकृती छिपाइवो ॥ द्विजके मोहोत्सवमें हतनजी मृतमल्ल द्रोपदीके काज बंस कीचक खपाय वो ॥ दक्षणगोग्रहण अरु मुंडन सुसर्मा कौ दूजै गोग्रहण कुरुसेन्य मुरछाय वो ॥ पासेको प्रहार भूप मच्छतें युधिष्ठिरके उत्तरातें सो भद्र यव्याह कौ रचाइवो ॥२२॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वार राग वैराटमें कहे अध्याय वरवानी ॥ व्योमांबर शेरकेर सहित श्लोक समूह पिछानी ॥२३॥ ॥ उद्योगसुचि ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ आदि मंत्र नाग पुर गौन भो पुरोहितको दूजो गौन संजयको नीती है-विदुरकी ॥ तीजे भो श्रीकृष्ण गौन मुनि इतिहास कथा धारन विराटरूप देखि सभा धरकी ॥ दसहूं दिसाके भूप आगमनि मंत्रणतें सातग्यारा क्षौहणी मिली है घरघरकी ॥ आगम उलूक दोनूं सेन्या गौन कुरुक्षेत्र रथी संख्या अंबा कथा नारी भये नरकी ॥२३॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राग सिद्धि अरु चंद्रमा पर्व अध्याय उद्योग ॥ वसु

+ १ वनपर्वमें २६९ अध्याय औ ११६६४ श्लोक हैं.

+ २ विराटपर्वमें ६७ अध्याय औ २५११ श्लोक हैं.

+ ३ उद्योगपर्वमें १८६ अध्याय औ ६६९८ श्लोक हैं.

र्त्नउर्मी रितू श्लोकनकोसहजोग ॥२४॥ ॥भीष्मसूचि ॥कबित्त॥ ॥खंडनिरमानउत्पातकोप्रमान हानिभीष्मअभिसेचनप्रणेतासेन्यसारीको ॥अर्जुनविषादगीताअष्टादसध्याय जानितीनवरदानधर्मपुत्रधर्मचारीको ॥इरावानउतरऔसंखहैविराटपुत्रसतरासुयोधनकेबंधुआपकारीको ॥भयोपर लोकबाणसज्यागंगापुत्रपोढेबाणगंगादीनोजसअरखेतून धारीको ॥२५॥ ॥दोहा॥ ॥बाँर इंदु गनपति रदन भीस्म पर्वअध्याय ॥वेदवर्षकर्सिद्धिवानलो श्लोकहिदीये जिताय ॥२६॥ ॥द्रोणसुचि॥ ॥कबित्त॥ ॥द्रोणकीप्रतिज्ञाजुधसंससक अर्जुनकोचक्रव्यूह भेद बध्दसभद्राकेनंदको ॥ नरकीप्रतिज्ञाजुद्ध विनारथबधभयोभूरिश्रवाजेंद्रयओविंदअनुविंदको ॥रात्रिजुद्धघासवीअमोघसक्तिहीतें-भयोपातहैडंबयगनशत्रुनिहकंदको ॥पैंतालीसभ्रातादुर्योधनकेद्रोणपातद्रोणीअस्त्रनारायनप्रेर्योपूजफंदको ॥२७॥ ॥दोहा॥ ॥व्योंम दीप अरु चंद्रमा द्रोणपर्वअध्याय ॥यहअंवर निधि सिद्धिजुत गिनतीश्लोक गिनाई ॥२८॥ ॥कर्नसुचि॥ ॥कबित्त॥ ॥कर्नअभिषेचनऔद्वंदयुद्ध एकद्योसरात्रिसमेंमंत्रसल्यसारथीविचार्योहे ॥दूजेदिनसारथीमहारथीविवादतामेंमरुदेससेनानीको माजनौंधिगार्योहे ॥अर्न्योचीरतेईभुजऐंचदोऊसैन्यबीचपीयोश्रोन भीमसेनदुसासनमार्योहे ॥युधिष्टिरअर्जुनकीस्वतेंमृत्युटारीकृष्णापुत्रवृषसेनजूंझकर्नमारिडार्योहे ॥२९॥ ॥

---

१ भीष्मपर्वमें ११७ अध्यायओ ५८८४ श्लोक हैं.

२ द्रोणपर्वमें १७० अध्यायओ ८९०९ श्लोक हैं.

॥ ॥दोहा॥ ॥रत्न रितू अध्याय है कर्नपर्वमैं सोध॥ चंद राग निधि चक्र विधि गिन्यौ श्लोक कौ बोध॥३०॥ ॥सल्यसुचि॥ ॥कवित्त॥ ॥सल्यस्नान स्कसमडिलूक सकुनी कोवध धर्मपुत्रहीतें न्यास सल्य अर्धदिनमें॥ सुयोधन नीरस-त्यादूतन तें सोध पाय धर्मकटुबाद तें जगायो एकछिनमें॥ कृष्णाग्रज तीर्थपाश कुरुक्षेत्र सरस्वती दोनूं की प्रशंसा पांचो ओन कुंड तिनमें॥ द्रौपदीकूं सभाबीच दिखाई जोवाम जंघा तातें सोई तोरि भीम मारि लियौ रनमें॥३१॥ ॥दोहा॥ ॥रत्न बाण अध्याय है सल्य गदाजतपर्व॥ व्योम नैन कर अग्नि गनि श्लोक भये मिलि सर्व॥३२॥ ॥सुषोसिकसुचि॥ ॥कवित्त॥ ॥द्रोणी अभिषेचन उलूक उपदेश निसा रवड़ग हीते द्रौपदी के भ्राता पुत्र मारे है॥ अठारा हजार सस्त्र अस्त्र तें बिनास कियो पांचू बंधु सेना बाह्य केशव उबारे है॥ द्रौपदी विलाप सुनि भ्रात नर कीनो नेम स सुकौ रु आपकौ है ब्रह्म अस्त्र टारे है॥ बांधि लाये शिरवा छेदि विप्र जानि छांडि दियौ उत्तराकौ गर्भ राख्यौ कृष्ण काम सारे है॥३३॥ ॥ ॥दोहा॥ ॥सर्प पुरान अध्याय हैं पर्व सुषोसिक-मानि॥ व्योम वार वसु श्लोक हैं यहै अनुक्रम जानि॥३४॥ ॥ ॥स्त्रीपर्वसुचि॥ ॥कवित्त॥ ॥संजय युयुत्सु लेके आये राज लोकन कौं गंधारी कोपजुक्त व्यास तें सिरायवों॥ तोहु कोपतिज्वाला नेत्र पाटी बंधी अधोभाग करत प्रनाम धर्मनरवकौं जरायवों॥ मरेनके नाम लेले कहत जुधि

\+ १ कर्णपर्वमें ६९ अध्याय औ ४९६४ श्लोक हैं.

\+ २ शल्यपर्वमें ५९ अध्याय औ ३२२० श्लोक हैं.

\+ ३ सुषुप्तिपर्वमें १८ अध्याय औ ८७० श्लोक हैं.

ष्ठिरसूं रुयोधनमाताकौविलापतापगायवो ॥ लोहमेंबनाय वोमिलायवोअन्वक्षुतैंसोचुरनदिखायवोरुभीमकोबचायवो ॥३५॥ ॥दोहा॥ ॥दीपनैनस्त्रीपर्वमें गिनिअध्याय अनूप ॥ बाणबार मुनिश्लोकहैं कहेव्यासकविभूप ॥३६॥ ॥ ॥सांतिअनुसासनशुचि॥ ॥कबित्त॥ ॥राज धर्मदानधर्मआपतिकह्योहै धर्ममोक्षकोजोधर्मसरसज्याके सयनमें ॥ औरहुअनेकइतिहासदोनपर्वनमेंपांचरत्नगीता विनभीष्ममोक्षइनमें ॥युधिष्ठिरभ्रातापुत्रपितामहगुरुविप्रई नकोविनासदेखितापधोरतनमें ॥कृष्णाउपदेसतेंनाव्यासउपदेस तैंनाभीष्मउपदेसहीतैंसीतलभीमनमें ॥३७॥ ॥दोहा॥ रत्न कालसंध्यासहित सांतिपर्वअध्याय ॥दीपव्योमपुनिवेदविधु श्लोकअनुक्रमगाय ॥३८॥ रागवेदविधुअध्यायहै अनुशास नमेंजोय ॥ नभअंबर वसुदीपजुत श्लोकअनुक्रमहोई ॥३९ ॥ ॥अश्वमेधसुचि॥ ॥कबित्त॥ ॥मरुजज्ञकथाऔ रचामिकरकौशलाभपरीक्षतजन्म अस्त्रतेजतैंबचायोसो ॥ अश्वमोक्षरक्षाजुक्तदीक्षात्यूंयुधिष्ठिरकोसुदर्शनकथाधर्मवे ष्णवबतायोसो ॥ चित्रांगदापुत्रबभ्रूवाहनकोअर्जुनसोंविक्र मसुनतलोगविस्मयउपजायोसो ॥ मषकीसमाप्त भयेदक्षणा अनेकद्रव्यपायोमनवांछितजोजाचवेकोआयोसो ॥४०॥ ॥ दोहा॥ ॥हरचरवसंध्याचंद्रमा अश्वमेधअध्याय ॥ व्योम

---

१ स्त्रीपर्वमें २७ अध्याय औ ७७५ श्लोक हैं.
२ शांतिपर्वमें ३३९ अध्याय औ १४७०७ श्लोकहैं.
३ अनुशासनपर्वमें १४६ अध्याय औ ७८०० श्लोक हैं.
४ अश्वमेधपर्वमें १३३ अध्याय औ ३३२० श्लोक हैं.

अयन पुष्कर अगनि दीन्हे श्लोकगिनाय ॥ ४१ ॥ ॥ व्यासाश्रमरुचि ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ भयोनिरवेद भूपअचक्षविपनगोनप्रथासास सुसराज्योसेवाकाजैकियोसाथ ॥ युधिष्ठिर पिताभक्तिपूर्व अद्भूतकीन्हीतीजेअब्द भेदिबेकूंगयोलीयेराजकांथ ॥ क्षत्तापरलोकव्यासकृपासयेक्षोहनीकेमारेवीरमिले जातेसारेहीभयेसनाथ ॥ दीनेप्रथायुक्तविनासंजयसुन्योहेदाहनारदतेंपूछ्योहैविलापकेकेजोरीहाथ ॥ ४२ ॥ ॥ दोहा ॥ अयनवेदअध्यायहे व्यासाश्रममेंदेखि ॥ रागव्योमसर चंद्रमा गिनतीश्लोकविसेषि ॥ ४३ ॥ ॥ मुसलशुचि ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ भूसुरश्रापकेव्याजतें कृष्णकियोजदुवंसकोनास विचारकें ॥ सीखलीकृष्णकीवीर धनंजयकीनोप्रयान यदुत्रियलारकें ॥ लूटिगईत्रीयआपमर्योचहैव्यासकीसीखतेप्रानकूंधारिकें ॥ भ्रातयेजाईस्कनाईविरागभोवर्वछत्तीसकोराज विसारिकें ॥ ४४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वसुअध्यायमुसलपरव गिनतश्लोकपुनिधारी ॥ व्योमअयनसंध्यासहित लिखिविपरीतिविचारी ॥ ४५ ॥ ॥ महाप्रस्थानरुचि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वज्रनाभिकोमधुपुरी अभिमनसुतपुरनाग ॥ देकोटिननिधि द्विजनकूं चलेतुहिनवनभाग ॥ ४६ ॥ सर्वतीनअध्यायहे पर्व महाप्रस्थान ॥ श्लोकत्तीनसतवीसहे जाहरकहेउंसुजान ॥ ४७ ॥ ॥ ॥ सुर्गारोहणसुचिपत्र ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ चारोभ्रात-द्रौपदीकोयानमेंपतनभयोयुधिष्ठिरव्योम गंगान्हायतनत्या

१ व्यासाश्रमपर्वमें ४२ अध्याय और १५०६ श्लोक हैं.
२ मुसलपर्वमें ८ अध्याय और ३२० श्लोक हैं.
३ महाप्रस्थानपर्वमें ३ अध्याय और ३२० श्लोक हैं.

ग्यौहै ॥ श्वानकथास्कयोधनआदिदेकेनाकविषैदेवदूतगेल बंधुदेरषवेकूंराग्यौहै ॥ अर्जुनकूंआदिदेकेंनरकनिवासदेखेक रतविलापस्कनिअद्भूतसौंलग्योहै ॥ बिचारयौंतहांनिवासइंद्रा दिकआयपासुबतायौविलासनृपसौवतसोजाग्योहै ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ पूरीपांचअध्यायहैस्वर्गारोहणमांहि ॥ श्लोकदो यसत२००हैसबै घटतीबढतीनांहि ॥ ४९ ॥ सर्वअध्याय सर्वश्लो कसंख्या ॥ कालरागगृहचंद्रमा सर्वपर्वअध्याय ॥ छंद रसरधरबाणवस्क विनहरिवंसगिनाय ॥ ५० ॥ अष्टादसअक्षौ हिणी अष्टादसहिपर्व ॥ अष्टादसदिनमेंकटे द्वादशविनुनर सर्व ॥ ५१ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ द्रुपदविराटराजमागधेश सहदेवधृष्टकेतूचेद्यपतिनीकेंनिरधारियें ॥ युयुधानयदुवंसी पांड्यकोशलाधिपतीएकएक अक्षौहनीस्वामीएबिचारियें ॥ कुंतीभोजकेकयकेपांचोभ्रातभासीपुत्रइनकीयुधिष्ठिर कीएककेसंभारियें ॥ सातहीअक्षौहनीएपांडवकीमहासैन्य अष्टवीरविनाकटियुद्धमेंबिचारियें ॥ ५२ ॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ ॥ भगदत्तदैत्यवंसभूरिश्रवाकुरुवंसीसत्यमद्रयाते विंद- अनुविंदजूदेजानि ॥ सिंधुपतीवहीनेऊजेद्रथसुयोधनकोस्क दक्षणकांबोजीयवनकीसैन्यमानी ॥ अक्षौहिनीएकक्षत्तव र्माकीयेआठभईतीनघरहीकीछोटेमोटेभूपतोंवखानि ॥ ग्या रहप्रकारनदीगांजिवकीधारवीचडूबगईच्यारवीरविनासब-

१ स्वर्गारोहणमे ५ अध्याय औ २०० श्लोक हैं.

२ अब सर्व अध्याय औ सर्व श्लोकोंकी संख्या कहते हैं सर्व श्री मन्महाभारतमे १९६३ अध्याय औ ८५१५२ श्लोक हैं एक लक्षमें जो श्लोक बाकी रहे उसमे हरिवंश कियो.

हीकी हानि ॥ ५३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नभनिधिग्रहअरुका लवसु रितुविधुकुरुतुरंग ॥ व्योमकालरितुमहिमुनी नभविधु पांडवसंग ॥ ५४ ॥ व्योमवेदवसुरितुमुनीदीपनयनकुरुवीर ॥ नभवसुनभमुनिरितुमुनिविधुपांडवरनधीर ॥ ५५ ॥ नभदृग ग्रहसंध्याचरणबाणवेददोऊसेन ॥ सारथीआदिकवीरसब मरणहारगनिऐन ॥ ५६ ॥ नभमुनिसरनभवर्ण दृगगजकुरुवंसनकेर ॥ नभ ग्रह व्योमरु कालसर चंद्र पांडु गजहेरि ॥ ५७ ॥ व्योमांबर दृग कालग्रह राग मुनि सिलि होइ ॥ वीर अश्व गज जोडि करि दोनू दलके जोय ॥ ५८ ॥ त्रयोदशी कार्तिककी पांडुराप्रभातसमैप्रारंभभयोहैमहादुस्तरसंग्रामको ॥ सोही मासकृष्णपक्षसप्तमीदिनास्तसमै वाणसज्यासोवनभोगंगापुत्रनामको ॥ द्वादशीअसुरसंध्या द्रोनकोपतनभयोचतुर्दशीकर्णपंथलीनोनिजधामको ॥ अमावस्यासल्यऔसुयोधनविनासभयेरात्रिसमैनीचकामद्रोणपुत्रवामको ॥ ५९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कवितामैंसुधीकरी प्रकटअर्थकेकाज ॥ मंडनषट्अनुप्रासविन छिमाकरहुकविराज ॥ ६० ॥ मोहोराविगरनदीनपै अरथनविगरनदीन ॥ तातेंषट्अनुप्रासविन छमिजहुदोषप्रवीन ॥ ६१ ॥ संस्कृतजे विगरेसवद

कौरवनके घोडे १६ ८३ ९९० औ पांडवनके १० ७१ ६३० घोडे थे कौरवनके शूरवीर २७ ७६ ८४० औ पांडवनके शूरवीर १७ ६७ ०८० थे ऐसे सब दोनों तरफके मिलायके ४५ ४३ ९२० भये २ कौरवनके हाथी २४० ५७० औ पांडवनके १५ ३० ९० दोनो सेनोंके ७६ ९३ २०० घोडा हाथी औ शूर वीर सब मिलके भये.

ताकी भाषा होत ॥ ममकृतपद भ्रष्टहि निरखि छमहु सु कवि बुधि पोत ॥ ६२ ॥ नामस्वरूपही दासकौ स्वरूपदास ज्यूं होई ॥ पार्थ पाथ सब्द हि सबद भाषाके मत सोई ॥ ६३ ॥ वाल्मीक रवि व्यास ससि माघादिक उडु जोत ॥ भाषा कवि जिंगुन कहूं कहुंक कुंकरत उद्योत ॥ ६४ ॥ विधिबुधविधुबुधिबंधुवध बाधबेधज्यूं बोध ॥ मात्रविगिरि विगरे अरथ स्वरूपदास पढिसोधि ॥ ६५ ॥ कारज पखुरि ऐक विन वारिज सो होइ जाय ॥ बुधिजन लेखक दोषको सोधहु चित्त लगाय ॥ ६६ ॥ लगे पटांबर पखुरिया होत फटांबर सोई ॥ मात्रबरन बिपरीततें अर्थ विपर्जय होइ ॥ ६७ ॥ द्रगग्रह वसु अरु चंद्रमा संमत अंकगति बाम ॥ शक्लचैत्र एकादशि ग्रंथजन्म सुखधाम ॥ ६८ ॥ ॥ इतिश्री पांडवयशेंदुचंद्रिकायां स्वरूपदासकृत मंगलाचरन अष्टादशपर्वसूचिपत्र प्रथममयूखः ॥ १ ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नां गायौ जगमीतकूं साहित जुत सांगीत ॥ स्वरूपदास जिनके नहै पूंछ स्रंग पुनीत ॥ १ ॥ छंद अलंकृत रसनकौ करूं सूचिनिका पत्र ॥ बहु व्यापक सामान्य पष आदि हि वरनन अत्र ॥ २ ॥ ॥ प्रथम छंद सुचि ॥ ॥ एकवरनकूं आदले छाई सवणप्रजंत ॥ षट्विसवृत्तभेदके प्रथम हि नाम कहंत ॥ ३ ॥ ॥ छंदपद्धरी ॥ ॥ उक्ता १ अत्युक्ता २ यह प्रमान ॥ मध्या ३ रु प्रतिष्ठा ४ कहि सुजान ॥ सुप्रतिष्ठा ५ रु गायत्रि ६ कीन ॥ उष्णिक रु ७ अनुष्टुप् ८ कह प्रवीन ॥ बृहती ९ अरु पंक्ती १० मानलेहु ॥ त्रिष्टुप ११ जगती १२ अतिजगति १३ तेहु ॥ सक्करी १४ अतिसक्करी १५ होत ॥ अष्टी १६ अत्यष्टी १७ धृति १८ उद्योत ॥ अतिधृती १९ कृती २० प्रकृती २१ अरह ॥ आकृति २२ अरु विकृति २३ जानि येह ॥ संकृति २४ अतिकृती २५ चवन सेष ॥ उतकृति २६ विंस-

षट्नामलेरव ॥२७॥ ॥दोहा॥ ॥छंदवरणप्रस्तारके तेरहक्रोंटिफनीस ॥ ब्यालीसलरवसतरहसहससातसत अटाईस ॥ वरणछंदफलछंदमें भेदकछूनलरवाय ॥तातें वरणहिकेकरम आठौकहौबनाइ ॥६॥ ॥अथवर्णाष्टिक क्रम॥ ॥दोहा॥ ॥संरव्या१ अरुप्रस्तार२ हैशुचि३उ दिष्ट४ अरुनष्ट५ ॥ मेरु६ पताका ७ मर्कटी८ येई क्रमहैं अष्ट॥७॥ कोई पूंछे एते वर्णके रूप केते संरव्या करे ॥ ॥दोहा॥ ॥प्रथमवरणपरदोइको मेलहु अंकविचारि ॥ संरव्यादुगुनहितेदुगुन प्रस्तारहिलौधारि॥८॥ ॥

१	२	१०	१०२४	१९	५२४२८८
२	४	११	२०४८	२०	१०४८५७६
३	८	१२	४०९६	२१	२०९७१५२
४	१६	१३	८१९२	२२	४१९४३०४
५	३२	१४	१६३८४	२३	८३८८६०८
६	६४	१५	३२७६८	२४	१६७७७२१६
७	१२८	१६	६५५३६	२५	३३५५४४३२
८	२५६	१७	१३१०७२	२६	६७१०८८६४
९	५१२	१८	२६२१४४	२७	१३४२१७७२८

अब वर्णाष्टकक्रम कहे हैं संरव्या१ प्रस्तार२ शूचि३ उद्दिष्ट४ नष्ट५ मेरु६ पताका७ मर्कटी८ येंआठ॥७॥ कोई पूछे एते वर्णके रूप केते जैसे कि तीन वर्णके छंदके रूप केतने है संरव्याकरिके कहे जैसे कि एकव र्णके छंदके दोरूप दोयवर्णवालेके चार तीनवालेके आठ ऐसेही छाईस वरणके प्रस्तारलौं उत्तरोत्तर दूनी होती जायगी इसरीतसे तीनवर्णवाले छंदके८ रूप भये संरव्या कोष्टक ऊपर लिरवाहैं ॥८॥ ॥

॥ पूछे रूप केते प्रस्तार करे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लघुकी सूधी रेख कर गुरुकी बांकी रेख ॥ आदि गुरु सब लघु तलक यूं प्रस्तार हि लेख ॥ ८ ॥ आदि गुरूतर धरि लघू अग्र सु आगे ठेल ॥ घटे वरन प्रस्तारते गुरु करि पाछे मेल ॥ ९ ॥ ॥

लघुकी सूधी रेख जैसे। जैसे गुरुकी बांकी जैसे ऽ प्रस्तारके आदि-में सब गुरु लिखिके फिरि प्रथम गुरुके नीचे लघु लिखिके अगाडीके वर्णोंकि नीचे जैसे हों वैसेही लिखे औ जो आदि गुरुके लिखनेसे पीछे रहें उन सब लघुनके नीचे गुरुही लिखा ॥ अथ प्रस्तार स्वरूप इसी माफक कसब करे ॥ ९ ॥ ॥

अथ चारि वरणके प्रस्तारका स्वरूप.

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
।	ऽ		ऽ	ऽ
ऽ	।		ऽ	ऽ
।	।		ऽ	ऽ
ऽ	ऽ		।	ऽ
।	ऽ		।	ऽ
ऽ	।		।	ऽ
।	।		।	ऽ
ऽ	ऽ		ऽ	।
।	ऽ		ऽ	।
ऽ	।		ऽ	।
।	।		ऽ	।
ऽ	ऽ		।	।
।	।		।	।
ऽ	।		।	।
।	।		।	।

॥ मूल ॥ ॥ पूछै गुरु आदिक कितने औ लघु आदिकरूप कितने तथा गुरु लघ्वाद्यंत कितने औ गुर्वाद्यंत कितने तब शुचि करै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संख्याके पूर्णांकते प्रथम अंक जो म्वंत ॥ ते गुरु आदिरु अंत है ते लघु आदिरु अंत ॥ १० ॥ पूर्ण अंक ते तीसरे होवै अंक जितेक ॥ गुरु आद्यंत तिते कहै लघु आद्यंत तितेक ॥ ११ ॥ ॥

कोईने पूछा कि अतरे अक्षरके छंदमें गुरु आदिक लघु आदिक गुरु आद्यंत औ लघु आद्यंत कितने कितने हैं उदाहरण जैसे कि चारि वर्णके छंदमें पूछा कि इसमेसे जिनके गुरुवर्ण आदिमे हैं वे कितने औ जिनके आदिमें लघु है वे कितने औ जिनके गुरुवर्ण आदि औ अंतमे है वे कितने औ जिनके लघु आद्यंतमे है वे कितने तो शुचि करिके कहै शुचि याने संख्याके पूर्णांकको देखै जितने अंक होये उनमेंसे आधे करे आधे छंदमें दौंमे गुरु आदिक औ आधे लघु आदिक होयगे ऐसेही जो पूर्णांक है उससे तीसरा अंक जितनेका होयगा वत नहीं आदि अंत में गुरुवाले औ वत नही लघुवाले होते है. उदाहरणजैसे कि चारि वर्णके छंदमे सोरह पूर्णांक है उनमेसे आठ गुरु आदिक औ आठ लघु आदिक होते हैं. औ सोरह से तीसरा याने सोरहसे दूसरा आठ औ तीसरा चार भये तो चारिके आदि अंतमें गुरु औ चारि हीके लघु होते हैं गुरु आदि जैसे ऽऽऽऽ १ ऽ।ऽऽ २ ऽऽ।ऽ ३ ऽ।।ऽ ४ ऽऽऽ। ५ ऽ।ऽ। ६ ऽऽ।। ७ ऽ।।। ८ लघु आदिक जैसे ।ऽऽऽ १ ।।ऽऽ २ ।ऽ।ऽ ३ ।।।ऽ ४ लघ्वाद्यंतजैसे ।ऽऽ। १ ।।ऽ। २ ।ऽ।। ३ ।।।। ४ इसी तरह सर्वत्र जानना ॥ ११ ॥

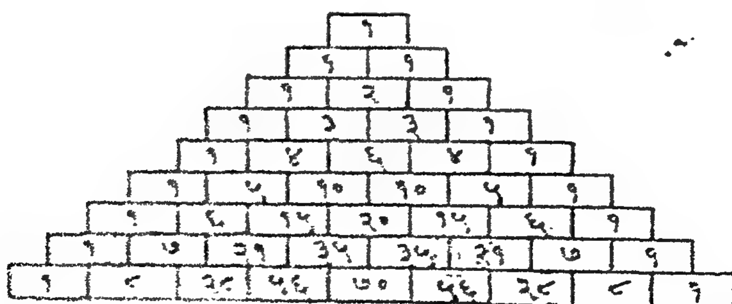
॥ ॥ रूप लिखि पूंछैं ये रूप कितरमो है तब उद्दिष्ट करैं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वरनन पर अंक आदिते यक तें दुगुन धरिष्ट ॥ लघु ऊपरके अंकमे यक धरि दिख उदिष्ट ॥ १२ ॥ ॥ ॥ पूछें अतरमो रूप किसो छे नष्ट कीजे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बेकि व्है तो लघु लिखौ एकी गुरु लखि लेहु ॥ एकीमे येकमे लिये बहुरि अरध करि देहु ॥ १३ ॥ यूंही सम अरु विषमको लघु गुरु लिखत्ते जाहु ॥ प्रस्तार हि के वरण लौ अरध करत ठहराहु ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥

कोई प्रस्तारका रूप लिखिके कहै कि यह रूपके तरवों है तब उस छंदके वरनों पर अंक ऐसे लिखे कि एक लिखिके फिरि एकसे एकपर दूने लिखतो जाय फिरि लघु वरनोंपरके अंक जोरिके एक मिलावे जितने होय वतरवों रूप जाणनो उदाहरण जेसे आठ वर्णके छंदका रूप यह लिखते हैं १ २ ४ ८ १६ ३२ ६४ १२८ / ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ इसमें लघु वर्णोंके अंक ७४ भये इनमें एक मिलायो तो ७५ भये यासो यह पचहत्तरवों रूपह ऐसो कहनो ॥ १२ ॥

जैसे कोईने पूँछा कि आठ वरणके छंदमे पचहत्तरमों रूप - कैसो है तब ७५ यह एकी है इसका गुरु ऽ फिरी इसमे १ मिलायो. ७६ इसके आधे ३८ यह बेकी इसका लघु । इसका आधा १९ इसका गुरु ऽ १ मि० २० आधे १० बेकी लघु । आधे ५ एकी गुरु ऽ १ मि० ६ बेकी ल० । आधे ३ एकी गुरु ऽ १ मि० ४ आधे २ बेकी लघु । २ को आधा १ गुरु ऐसे ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ रूप ये भयो ॥ १३ ॥ १४ ॥

॥ ॥ पूंछे अतरा गुरुका कतरा अतरा लघुका रूप कतरा तब मेरु कीजे॥ ॥चौपाई॥ ॥आदि होय त्रय चतुर पंच थिर ॥ चरण संख्य कोठा क्रमते कर ॥ मेरु प्रमाण यूं कोठा कीजे॥ आद्यंत एकको अंक भरीजे ॥ ऊपरके द्वै अंक मिलावो ॥ दोय कोष्टन तर कोष्ट भरावो ॥ वर्ण मेरु-ऐसे भर भाई ॥ जो ते पिंगलकी मति पाई॥ १५॥ ॥

उदाहरन जैसे कि कोईने पूछा कि आठ वरनके प्रस्तारमें २५६ भेद हैं-इनमे केतने एक लघुके रूप हैं औ केतने दो लघुके औ केतने चार लघुके केतने पांच लघुके केतने छके केतने सतके औ केतने आठके ऐसे ही गुरु संख्याके रूप पूछे तो मेरु करिके कहै. मेरुकी रीति प्रथम एक कोष्ट करि उसमे १ का अंक लिखै फिरि उसके नीचे दो कोठोंमें एक एकका अंक भरे यह एकाक्षर छंदका मेरु इसमें एक लघु एक दीर्घ फिरि दोके नीचे तीन कोष्टक तिनमे बाजूके कोठोंमें एक एकका लिखै औ उपरके दोनों का जोड देके बीचकोष्टकमें २ का अंक लिखै इसमें दो गुरुका एक दो लघुका एक औ दो एक एक गुरुके हैं यह दो वर्णका मेरु फिरि तीनिके नीचे चार कोष्टक जिनके बाजूके कोठोंमें एक एक औ उपरके एक औ दो जोडीके ३ औ दो एकको जोडीके ३ लिखै इसमें एक तीन गुरु एक तीनों लघुका औ तीन दो लघुके तीन दो गुरुके यह तीन वर्णका मेरु ऐसे ही सत्ताइस पर्यंत करना परंतु इहां यह मेरु आठ वर्ण पर्यंतका लिखा है औ बुद्धिसे समुझना ॥१५॥



॥ ॥ पूंछे कतरमा कतरमा रूपोंमा कतरमा कतरमा गुरुछें तो पताका कीजे ॥ ॥चौपाई॥ ॥ वरननतें येक अधिक कोष्टकरि ॥ यकतें दुगुने प्रथमताहि भरि ॥ आदिअंतके अंक देउतर ॥ पंकति छोडिओर उलटी भर ॥ पूर्णअंकतें पिछिले अंक ॥ घटतबचैं सो भरहु निसंक ॥ लिखिगयो-अंक फेरिमतिलेखहु ॥ ऐसे वरण पताका देखहु ॥ १६॥ ॥

जैसे किसीने पूंछा कि छ वर्णके प्रस्तरमे ६४ भेद हैं उनमें कौन कौनसे भेदमे केतने केतने गुरु हैं तब पताका करे सोजैसे कि जितने वर्णके छंदकी पताका करनी होय उसकी संख्याके कोष्टकोसे एक अधिक कोष्टक करें जैसे छ वरनके प्रस्तारमें सात कोष्टक जैसे इस पताकामें लिखे हैं इसी तरहसे एकसे एक दुगन जैसे एक दो चार आठ इत्यादिक लिखिके फिरि उसके अंक भरना सो पंकति छोडिके उलटा भरना सो पूर्ण अंक ते पिछिले अंकममें घटायके वचैं सो भरना औ अंक लिखेगए होय उनको फिरि न लिखना ऐसे वरन पताका करना ॥ १६॥

ऽऽऽऽऽऽ																				१
ऽऽऽऽऽ															३३	१७	९	५	३	२
ऽऽऽऽ						४९	४१	३७	३५	३४	२५	२१	१९	१८	१३	११	१०	७	६	४
ऽऽऽ	५७	५३	५१	५०	४५	४३	४२	३९	३८	३६	२९	२७	२६	२३	२२	२०	१५	१६	१२	८
ऽऽ						६१	५९	५८	५५	५४	५२	४७	४६	४४	४०	३१	३०	२८	२४	१६
ऽ															६३	६२	६०	५६	४८	३२
																				६४

॥ ॥ पूंछेंअंतरमीमत्ययके भेदमात्रावरणलघुदीर्घकित नेंहैं तव मर्कटीकीजे ॥ ॥चौपाई॥ ॥ वृत्तभेदमात्राअरुवरणा ॥ गुरुलघुऊभाकोठाभरना ॥ फिरप्रस्तारवरणकेमाफक ॥ आडेकोठेकरहुषटहितक ॥ प्रथमहिवृत्तपंक्तिकोभरियें ॥ अेकतेंअंकक्रमहितेधरिये ॥ दूजीपंक्तिभेदसंख्याधरि ॥ दोनूंगुनिचौथीपंगतिभरि ॥ चौथीपंगतिअरधअरधकरि ॥ पंगतिलघुगुरुपंचछठीभरी ॥ चोथीपंचमिअंकमिलावो ॥ तीजीमात्रापंक्तिभरावो ॥१७॥ ॥ इतिवर्णाष्टकसंपूर्णभया॥ ॥ अथछंदजातिभेदलिख्यते ॥ ॥दोहा ॥ ॥ पुरुषत्रियाअरुषंड है तीनजातिकेछंद ॥ वर्ण१ मात्र२ मात्रावरण३ क्रमतेंगिनहुकविंद॥१८॥ ॥प्रथमपुरुषछंदसुचि॥ ॥भगनजगनअरुसगनके आदिमध्यगुरुअंति ॥ यगनरगनपुनितगनकेक्रमतेंलघुहिकहंत ॥१९॥ मगननगनकैतीनहिगुरुलघुकरिजानि ॥ गनतेंसुछिमछंदगति कहतस्वरूपवखान ॥२०॥ गैलल

वृत्त	१	२	३	४	५	६
भेद	२	४	८	१६	३२	६४
मात्रा	३	१२	३६	९६	२४०	५७६
वर्ण	२	८	२४	६४	१६०	३८४
लघु	१	४	१२	३२	८०	१९२
गुरु	१	४	१२	३२	८०	१९२

१ पुरुष स्त्री नपुंसक ये तीन प्रकारके छंद है जैसे कि वर्णछंद पुरुष मात्रा छंद स्त्रीमिश्रित नपुंसक सो क्रमसे कहते है तहां प्रथम पुरुष छंद कहते हैं.

२ गण स्वरूप भ० ऽ।। ज० ।ऽ। स० ।।ऽ य० ।ऽऽ र० ऽ।ऽ त० ऽऽ। म० ऽऽऽ नगन ।।।

गेकूं करत गुरु निज लघु रहत निदान ॥ वरण संजोगी देत है आप ब डाई आन ॥ २१ ॥ सुषमुखोच्चारणार्थं गुरुरेवलघुत्वमाप्नोति ॥ ॥ एक मगनतें नारी छंद ॥ गोपीसं ॥ जेईसं ॥ श्रीसेसं ॥ विस्वेसं ॥ एक नगतें कमल छंद ॥ निरत ॥ करत ॥ सरित ॥ फिरत ॥ एक भगनतें मं दरा छंद ॥ माधव ॥ जादव ॥ मारत ॥ तारत ॥ एक यगनतें ससि छंद ॥ सुघोषं अदोषं ॥ निवासी ॥ विलासी ॥ एक सगनतें रमन छंद ॥ जमुनं गमनं ॥ नच्चवो ॥ रच्चवो ॥ एक तगनतें पंचालिका छंद ॥ राधेस ॥ जोगेस ॥ आराधि ॥ गोसाधि ॥ एक जगनतें गजेंद्र छंद ॥ अरूप ॥ अनूप ॥ अ नाथ ॥ असाय ॥ एक रगनतें भिया छंद ॥ स्यामते ॥ रामते ॥ एक है ॥ नाम है ॥ दोय सगनतें सेखा छंद ॥ राधेजी गावैहै ॥ प्यारेकूं भावेहै ॥ वंसीमें बो लेहै ॥ तान्नूकूं तोलेहै ॥ दोय नगनतें मदनक छंद ॥ मदनबदन ॥ दनुजक दन ॥ रुचिररदन ॥ सुकृतसदन ॥ दोय भगनतें अमंद छंद ॥ श्रीधर पावन ॥ घोषबचावन ॥ कौरवघातन ॥ कंसनिपातन ॥ दोय यगन तें संखनारी छंद ॥ विधाताफनीसं ॥ धरपायसीसं ॥ रचेलोकतीनं ॥ सुगोपी अधीनं ॥ दोय सगनतें तिलका छंद ॥ जननी जमना ॥ अघ कीसमना ॥ हरिप्रीतिप्रदा ॥ सुखरूपसदा ॥ दोय तगनतें मंथाना छं द ॥ एकापतीजोत ॥ वंसीरवंहोत ॥ चालीसचेबाम ॥ सोहै जितेंस्याम ॥ दोय जगनतें मालती छंद ॥ त्रिलोकनरेंद ॥ गुपालगोविंद ॥ निकंदन कंस ॥ विभाकरवंस ॥ दोय रगनतें विजोहा छंद ॥ दासधीदायकं ॥ रा धिकानायकं ॥ गोपगोपालनं ॥ दासभोटालनं ॥ चार मगनतें मोट-

१ संजोगी याने जिसमें दूसरे अक्षरको मिलाप होय सो संयो गी आपके गेलके वरणको दीर्घ करता है परंतु आप लघुही र- हता है.

२ इहांसे आगाडी अबकुछ थोडे छंद स्वरूप देखाते है.

क छंद ॥ गोपालांकी साथे खेल्यो ॥ राधा प्यारो जाकूं गावो भेटो साधो प्यारो थारो ॥ गीताजीमे भाख्यो सोही नीकी तत्वं ॥ भक्तीजो गंग्याना नंदं मुक्ती मत्वं ॥ चार नगनतें रसल नयन छंद ॥ हरि बिन सब अघट रतन ॥ बरतन मिलकर नरतन ॥ भजि तजि भ्रमक्रम सुनि मन ॥ दिलसुध सुखप्रद दिन दिन ॥ चार भगनतें मोदक छंद ॥ केसव जादव माधव श्रीधर ॥ गोकुलमें नच नारचनाकर ॥ जे दुखहा सुखदा अरि घातक ॥ नाम रटें कटि हे सब पातक ॥ चार यगनतें भुजंगी छंद ॥ भजो भक्तिदाता मुकुंद मुरारी ॥ जरासंध कंसादिके नास-कारी ॥ अभैदान दाता नहीं कोय ऐसो ॥ जगन्नाथस्वामी चिदानंद जैसो ॥ चार सगनतें तोटक छंद ॥ जगदीस हरी मन तूं जेजरे ॥ त्रिसना मुखमें बसि ना तजरे ॥ जब दास स्वरूप मिले हरिजी ॥ हम सांच कहो फिर जो मरजी ॥ २२ ॥ चार तगणतें अद्रष्टी छंद ॥ रामा रमानाथ राजा त्रिहूं लोक ॥ संसार-की त्रास हंता जुतं सोक ॥ मायापती मोक्षदाता सदानंद ॥ धाता पिता राम आनंद के कंद ॥ चार जगनतें छंद मोतीदाम ॥ अकाम अबाध्य अनादि अनूप ॥ सर्वे जगव्यापक एकस्वरूप ॥ अभैपददायक देव उदार ॥ विभू अनखंड बिनास विकार ॥ चार रगणतें छंद स्वरगवेणी ॥ देहदं प्राणदं सत्वदं मुक्तिदं ॥ मानदं बोधदं लोकयं मुक्तिदं ॥ सेवकं पोषदा कंद आनंदके ॥ चंद्र राका जथा नंद हे नंदके ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अष्ट मगन अरु नगनतें छंद न पावत रूप ॥ तातें बरनन ना किया समझि लेहु कविभूप ॥ २४ ॥ आठ भगनतें किरीटी छंद ॥-

1 हरीका भजन कर जजका संस्कृत यज होता है.

आज प्रभा नटनागरकी वृषभानसुता टक एकनिहारत ॥ मोरपरवाके चमेचके कीरत कुंडलके दिगनैननटारत ॥ गुंजनकी वह मालगरे पटपीतको ध्याननने कविसारत ॥ चातुरता मति आतुरताजुत वालसंजोगउद्योग विचारत ॥ आठयगणतें माधूर्यछंद ॥ जदूनाथ गोविंद विश्वेस धाता चिदानंदरूपी सदानंदकारी ॥ कस्योनास कंसादिकोवंस हंस विभू श्याम वृंदावनं भूविहारी ॥ तजे कामक्रोधं भजे लाइबोधं हरेतापती नूंकरे आयजेसो ॥ कहे भूपदास कटे कालपास तिहूंलोकवासीनकों पूज्यतेसो ॥ २६॥ ॥ अष्टसगनतें दुर्मिळाछंद ॥ ॥ सवैय्या ॥ ॥ मनकोमिलवोजब हीतें भयो भयोतीक्षकटाक्षनकोघलवो ॥ रूपसागरजानिसनेह कियोनटनागर आगिविनाजलवो ॥ तनकोमिलवो सुरह्यो अतिदूर रह्यो कुलमारगकोचलवो ॥ रह्यो वेननको मिलवो नबनैन बने अबनैननको मिलवो ॥ २७॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ ॥ अंतरंग सखितें कह्यो जाय सुनावो गाय ॥ नीके राग मलारमें मावृटकाल लखाय ॥ २८॥ ॥ या सवैयाकी टीका परलोकसाधनोपदेशक ॥ षट्शास्त्र ॥ सांख्य १ न्याय २ पातांजल ३ वैषेसिक ४ मीमांसा ५ वेदांत ६ इहलोकसाधक ॥ षट् उपशास्त्र ॥ व्याकरन १ कोस २ तर्क ३ साहित्य ४ संगीत ५ नाटक ६ जिनमेंतें साहित्य है या सवैय्या विषे साहित्यके षट् अंग ॥ प्रथम छंद ॥ वृत्तमें मेईसधा ॥ द्वितीय नायकाचतुर्धा ॥ त्रितीय अ

---

१ केश. २ श्यामता. ३ छाईस प्रकारके. ४ चतुर्धा चारि प्रकारके.

लंकार ॥ एकसोआठ[1] धा ॥ चतुर्थरस द्वादशधा[2] ॥ पंचमरी तिचतुर्धा ॥ छठीध्वन्यादि ॥ त्रिधा ॥ एषट्हीअंगआसवैच्याविषैंजाहरकीयाजाइगा ॥ वाणीदोय ॥ देववाणी ॥ संस्कृत ॥ लोकवाणी ॥ भाषासंस्कृतविषैंसातविभक्तिजाहरहोतहै ॥ समासात भीहोय ॥ भाषामेंविभक्तिसमासतैंहोय ॥ संस्कृतविषेएकवचन द्विवचनबहुवचनहैं ॥ छैसो १ छैतें २ छैजे ३ प्रथमा ॥ तिने १ त्याने २ तिन्हूने ३ द्वितीया ॥ तीकर १ त्यांकर २ तिन्हूकर ३ त्रतीया तीकेअर्थ १ त्याकेअर्थ २ तिन्हूकेअर्थ ३ चतुर्थी तिनतें १ त्यांनें २ तिन्हूतें ३ पंचमी तीकूं १ त्याकूं २ तिन्हूंकूं ३ षष्ठी तिनविषैं १ त्याविषैं २ तिन्हूविषे ३ सप्तमी ॥ भाषामें एकवचन बहुवचन हैं ॥ द्विवचननहीं ॥ संस्कृतविषैंस्त्रीलिंग पुल्लिंग नपुंसकलिंगहै ॥ भाषाविषै स्त्रीलिंग पुल्लिंग है नपुंसकलिंग नहीं ॥ भूत भविष्य वर्तमान परोक्ष प्रत्यक्ष संस्कृत भाषा दोनो विषैंहोय संस्कृतविषै ५ अनुप्रासहोय अंत्यानुप्रास होय नहीं ॥ भाषामेंहोयजाकोतुकांत मोहरो भेदिकहतहै ॥ फारसीमें काफिया कहतहै. संस्कृतविषैलघुकोंगुरु तीनठोर होइ संजोगीकी आदिको विसर्गादितुकांतः ॥ भाषामें संजोगादि गुरुहोइ विसर्गतुकारांततैंनहीं. संस्कृतविषै संधीकरतैं विसर्गतैं ह्रस्वतैं अनुस्वारतैं भाषाकीसंधि भावकोभो ॥ जवकोजो ॥ विभवकोविभो ॥ भयकोभै ॥ लयकोलै ॥ विजयकोविजै ॥ ऐसो होयसर्व शब्दकूं सव सर्व सरवभीहोय ॥ ऐसे पार्थको पाथ पारथहोय ॥ संस्कृतविषैक्षकार ॥ एकार ॥ यकारकों भाषामें छकार नकार जकार है ॥ संस्कृत विषे दंती तालवी मूर्भी

१ एकसोआठ प्रकारके. २ बाराह प्रकारके ऐसेही जहां गणतीके अंतमें धा आवे उहां यत नहीं प्रकार समुझना.

सष होय ॥ भाषामें सकार दंती होय यकारकोजकार भी होय॥ सं० लघुदीर्घ पुलत ह्रस्वचारभेद भाषामें लघु दीर्घ होय जामे भाषाको छंद छंद दो प्रकारके मात्रा वर्ण जामें उक्तादि वरण छंदकी छाईस वृत्ति जामे चोवीस वर्णकी संस्कृती वृत्ति - जामें प्रस्तारके प्रमाणतें एकक्रोड सडसटलाख सत्योत्तर हजार होयसें सोला छंद होय तामें इकोतरलाख असीहजार दोयसें छतीसमा स्थानको रूप अष्ट सगणतें दुर्मिला छंद है ॥ कहूं क लघुकीठा हर गुरुहोइ उच्चारमें लघु बोलें तो दोष नही ॥ सुखमुखोच्चार. रस १२ जामें ७ गोन ५ अचल आलंबन विभावविषे रौद्र १ करुणा २ विभत्स ३ वीर ४ हास्य ५ भयानक ६ अद्भुत ७ इन सातनमें अंतर विकारस्थाई संचारी आदिअंग विकार सांतिक अनुभावादिक स्थिरी भूत नाहीं श्रृंगार १ सांति २ वात्सल्य ३ दास्य ४ सख्यत्व ५ इन पांचनमें मनविकार संचारी ३३ स्वनिमित्तेनपरनिमित्तेनाद्विगुणे ६६ प्रकार भये सब्दस्पर्शरूपरस गंधेभ्यः पंचगुनित तीनसे तीस ३३० भये ऐसे ही तिन विकारसांतिक दस धा गुणे किये सतदा भये सांतिक आदि और अनेक भावसो तो स्थिर होतही नाहीं परंतु अंतर विकार स्थाई रीति निर्वेद १ ममत्व २ विनय ३ रहस्य ४ ए स्थाई और बाह्य विकार द्विधाविभाव आलंबन और उदीपन इन पांचहूमें जाहर स्थिरी भूत दरसें है इन पांच मुख्य रसनमें श्रृंगार रस है याद्दुरमिलाविषे रतिस्थाई तो है ई विभाव आलंबन तो नाय

१ रस १२ लिखते हैं औ बहुधा नव हैं तहां कारण है कि इहां वात्सल्य सख्यत्व औदास्य येजादा है और कवियोंने इनको उनन वरससे अंतर्गत माने हैं.

क नायका उदीपन पंचधा शब्द स्पर्श रूप रस गंध जिनमें रू
पतिषें कटाछ स्मरण अंतरंग सखी आदि विवरण सातिक
सोई अनुभव है आगविना जलयो या शब्दतें जान्यों जात है ब
चन भी अनुभव है चिंता देन्यादिक संचारी हैं ही इन पांच भा
वतें रस पुष्ट हैं शृंगार द्विधा संजोग रुचिजोग जामे वियोग २ स
टधा प्रथम प्रवास द्विधा भूत भविष्यता दुजो मन चतुर्धा लघु १
मध्य २ गुरु ३ प्रणय ४ त्रीजो करुणा त्रिधा देहिक देविक भूतक.
चोथे पूर्वानुराग त्रिधा लोक मृजादा वेद मृजादा कुल मृजादा.
पांचमों स्त्रियांजन्य द्विन्द्वा देव मनुष्य छटो प्रयोजन्य इवत्रिधा दे
स १ काल २ वस्तु ३ ऐसे सर्व वियोग ससदस धा भये जिनमे पूर्वानु
रागहे संजोगमें १० होय कोई कवि १ कहत हैं वियोगमें १० दासा
भिलाषा १ चिंता २ गुनकथन ३ स्मरण ४ उद्वेग ५ प्रलय ६ जड
ता ७ उन्माद ८ व्याधि ९ मरण १० जिनमें उद्वेग सुखद वस्तु दुखद
होय ध्वानितें अभिलाषा भी है अंतरंगसखीकूं नायकाने कह्यो म
लारमें गाइके सुनाइयो अलंकार द्वे प्रकारके सामान्य जाके तो अ
नेकधा. भेद विसिष्ट सो एकसो आठ धा वसिष्टके अंगविषें विष
माव्याघात शब्दालंकार विषे षट् अनुप्रास वृत्या १ छेका २ लाटा
३ जमका ४ श्रुति ५ अंत्या ६ जिनमें छेका लाटा अंत्यानुप्रास हैं.
नाइका च्यार प्रकारकी प्रथम अंगभेद चतुर्धा दूजी प्रकृति भेद त्रि
धा तीजी वही क्रम भेद षटधा चोथी कालभेद पंचदस धाजी. प्र०
प्रकृति भेद त्रिधा स्वकिया १ परकीया २ सामान्या ३ जिसमें

१ यह नायका भेद बहुत विस्तृत है सो संस्कृतमें रसमं-
जरी औ भाषामें कविप्रिया रसराज इत्यादिक ग्रंथोमें विस्ता
र हैं.

परकिया छे प्रकारकी १ विदग्धा द्विधा २ लखिता १ प्रकार ३ अनुसमानाचतुर्धा गुप्तात्रिधा ५ मुदिता एक प्रकारकी ६ कुलटा येक जिनमें सुधपरकीया तथा लखिता दरसणचतुर्धा श्रवण १ स्वप्न २ चित्र ३ सारव्यात ४ जिनमें सारव्यात प्रकृति त्रिधा सातकी १ राजसी २ तामसी ३ जि. राजसी पांचहु कोषविषै अभिव्यापकव्है के वचन निकस्यो है १ अन्नमय २ प्राणमय ३ मनोमय ४ विज्ञानमय ५ आनंदमय ६ ध्वनितें काकोक्ति अलंकार काक ध्वनिभी होतहै मेघकी भार्या मल्लाररागनीमें गवे हैं संपूर्ण याकीजात है. अरोही अवरोही विषै से १ रि २ गं ३ म ४ पं ५ धै ६ नी ७ सातही सुर बोलेजाते. ताल जलद ते ताला मल्लार रागनी ते काल ध्वनीतें बरषा रितु जितांई बरषाकी सामग्री सोभी सुखदाई है. परंतु दुखदाई. है के विरह अत्यंत बढावे हैं. मयूर विद्यूत चातकादि इतना प्रसन्चोतर साहित्यके कवित छंद श्लोक दोहा सर्वविषे विचारवो कोइ साहि कुसल होय जाको पूछना कोइ पूछे जाको उतर करना सोई कवी है आगूके कवितनमें ऐसो ही विचार. वोजू एक कणतें सर्व अन्नकी पक्कता जाणिये॥२७॥ आठ तगनतें करेड छंद ॥बाधाहरो नाथ राधापती दासकी स्यामका मारिके इष्ट आधार॥ एकाग्रता मोरतो पावके ध्यानका राखिये देवदेवाधि दातार॥ बोले सवे वेद पावे नहीं भेद तो औरका जीव जाने महाराज॥ गावे काहा पीव पावे कहा तो गती आप कीजो रमाया मिल्यो आज॥२८॥ आठ जगन

१ षर्ज्ज १ रिषभ २ गंधार ३ मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ निषाद ७ ये सात स्वर है.

तैंजीवक छंद ॥ अपार अज्ञान मिल्यौ इह जीव करी सुदया तव पावत पार ॥ अनाथ कुजीव सनाथ करो इल धारन पालन देव उदार ॥ कृपानिधि कानके तुम कारन वेदउधारन पापविदार ॥ सदा करजोर पुकारत श्रीवर बोध मिलेजुत भक्तिविचार ॥ २९ ॥ ॥ आठ रगनतें बोधक छं ॥ ॥ रामराजीव नाभी धर्यो इंड कूष्यंड वैराट सारे ॥ रचे एकदा ब्रह्मकूं दे प्रजाधीस ऐसो पद सेससाई रहे आप न्यारे ॥ सदा अंस कुंडारकें बिम्बको धारिकें दुष्टकूं मारिकें टारि ताप हरी ॥ दासकूं तारिकें कीर्ति विस्तारिकें पारिकीने भ्रतग्राहितें ज्यूं करी २९ मात्रा छंद ३० तीस मात्रा एक दलकी १८ अठरापर विश्राम चौपइया छंद मात्रा २६ छावीस चौदापर विश्राम वेताळ छंद इत्यादिक त्रिया छंद जानीये जामें गुरु लघु वर्णको प्रमाण नाहीं ॥ ॥

॥ अथ नपुंसक छंद ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तेरह ग्यारह मात्र फिर तेरह ग्यारह जोय ॥ सो दोहा विपरीत तें होइ सोरठा सोई ॥ मोहरापर जगणके तगण होय विना मोहरा कौतुकांत नगन रगन सगनतें होय ताते संढ ॥ सोळे मात्रा अंत जगन सोपा धरी सोळे मात्रा अंताक्षर गुरु मनहर छंद जाकूं पिंगळमें कवित्त कहत है पदविषे ३२ बत्तीस अक्षर होई सोळा अरु सोळापर विश्राम होय अंत्यअक्षर लघु होई सो घनाक्षरी रू० छंदयनमें गुरुलघु वर्णको नेम होय अरु नही है जाते नपुंसक कहिये ऐसे हि थोडे कहेवो होत समज लेनो ॥ इतिश्री पांडवयशेंदुचंद्रिकाद्वितीय मयूखः ॥ २ ॥ ॥ अथ अलंकार सूचि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वस्तु अयन विधु सर्व है भेद गिने बहु होय ॥

अतिव्यासीकेदोषतें च्यौंरासी मुरवजोय ॥ १ ॥ जानेजात जुशब्दतें कामपरैबहुठोर ॥ अलंकारमुखिकहतहौ ग्रंथबढै विधश्रौर ॥ २ ॥ अथउपमासुचिनका ॥ धर्मश्रौरउपमेयहै उपमावाचकआन ॥ कोमलहरिपदकंजसे क्रमतें उपमाजानि ॥ ३ ॥ अथलुप्तोपमा ॥ चंद्रवदनसीतलसदा लखहुमीन सेनैन ॥ रांधाजीके पदकमल स्रुछिमहरिकटिएन ॥ ४ ॥ रमासद्रसलावण्यहै पिकसी मीठीबानी ॥ हेहरिदाडिमसे दसन हंसगमनिकरिजानी ॥ ५ ॥ पदआदिकउपमेयहै कंजादिकउपमान ॥ द्विविधधर्मसामान्यअरु कहतविसेषबखान ॥ ६ ॥ सीसेसौंज्यूंलूइवे समतुल्यसद्रससमान ॥ मनौआदिवाचिकजहां श्रौतीउपमाजानि ॥ ७ ॥ भँवर धनुषअरुबाणभ्रुव वर्णाकितगुणमानि ॥ धर्मसुतीनप्रकारये समुझसबेसुजान ॥ ८ ॥ सित १ मेचक २ पीरे ३ हरित ४ धूसर ५ अभ्राकार ६ ॥ लोहित ७ मिश्रित ८ - आदियें धर्मवर्णकरिधार ॥ ९ ॥ लघु १ दीरघ २ सुछिम ३ पुसट ४ वक्र ५ अवक्र ६ परवांन ॥ संपूरन आवर्त ८ पुनि सुव्रत ९ त्रिकोण १० सुजान ॥ १० ॥ गुरु ११ तीक्ष्ण १२ मं

---

१ जिस उपमा अलंकारमे उपमा उपमेय वाचक औ धर्म ये चारो प्रसिद्ध दीखैं उसको पूर्ण उपमा अलंकार कहते हैं जैसे कि कोमल हरिपद कंजसे इहां कोमल धर्म हरिपद उपमेय कंज उपमासे वाचक यह पूरण उपमालंकार है औजहां इनमेसे एकौनदीखै वह लुप्त उपमासो आठ प्रकारका है उसको नीचे खुला लिखते हैं.

२ वाचकलुप्त ३ धर्मलुप्त ४ धर्मऔ वाचकलुप्त ऐसेही औरभी जानना.

डलसहित आकृत धर्मसु आहि ॥ कोइ कोइ गुन आकृत द
हुं अरथनबीचसराहि ॥ ११ ॥ मृदु १ कठोर २ चंचल ३ अच
ल ४ सुखद ५ दुखद ६ गतिमंद ७ ॥ अबल ८ बली ९ सत्य १०
असत्य ११ मति १२ अगति १३ सदागति १४ कंद १५ ॥ हरि
वो १६ भारि १७ क्रूरस्वर १८ सुस्वर १९ मधुर २० दंत २१ रू
प २२ ॥ सीत २३ तपत २४ जुकहत है गुण सधर्मकविभूप १०
॥ उदाहरनइनसबनकौं कीनोकेसवदास ॥ कछुयकमेंहू कर-
तहूं समफु बुद्धिनिवास ॥ ११ ॥ ॥ वर्णधर्मोदाहरण ॥ ॥
दोहो ॥ ॥ श्वेत कृष्ण अरु अरुणजुत पीत हि रंग विचारि ॥
चारहुकौ अब करत हौं उदाहरन उच्चार ॥ १२ ॥ श्वेतोदाहरनं
॥ ॥ घनाक्षरी छंद ॥ ॥ वलबकहीराकुंद पुंडरीककांस
भस्मकांचु अहिखांड हाडकरिकाकपास गनि, चंदनचवरहंस
सत्यजुगदूधसंखउडगनफटिकसीपचूनोससिसेसभानि ॥ गं
गोदकशफ्रकस्कधाशारदासरदसिंधुसतोगुनसंकरस्कदर्शनफ-
टिकमनि ॥ सांतीहास्यउच्चीश्रवानारदअरुपारदतेंउजरेअधि
कमनऐसेहरिदासधनि ॥ कृष्णोदाहरन ॥ कलीकाककों
किलकचकीचकाचककीक्रोधकरीकाली कत्याकोलकज्ज
लकलंकमानि ॥ कृष्णकामकलहकुसंगकालकूटस्कराकु
जसकरवालतमपापपुंजलोंबखानि ॥ बध्याचलतालप्र-

१ केशवदासजीने कविप्रिया और रसिकप्रिया दोनो ग्रंथोंमे इनके उदा
हरन अच्छीतरह किये हैं जिसको विशेष देखना समुझना होय सो उन
ग्रंथोंमें देखना. स्वरूपदासजी कहते हैं कि थोडेसे मैंभी कहताहौं सो बु-
द्धिमानलोग समुझलेना. २ प्रथम कहा कि धर्म तीन प्रकारका है. एक व-
र्ण दूसरा आकृति तीसरा गुणधर्म तीनमे प्रथम वर्णधर्मको देखाते हैं.

छव्यासवनव्यालवोमद्रौपदीजलदजांबूजमनाअनंतवा
नि ॥ मुस्कशृंगाररसनिरयनीलतेलहुतैकारेअधिकहरिवि-
मुखनकेहदैजानि ॥१४॥ ॥रक्तोदाहरन॥ ॥रसनाअ
धरपलकिदुरीपकीद्रगंततक्षकसिंदूरऔरहिंगरुबरवानहे॥दा
डमपलासकासमीरओजस्रूलफूलसाररुकुरकुटकेसीस
अनुमानिहे॥मानकषद्योतइंद्रगोपकुजपावकहेकिसलेमजी
ठरक्तचंदनपिछानहे॥रोद्ररसमहावरगेरूरुधिरसंध्यारजो
गुनीविषयनकोऐसोमनजानिहे॥१५॥ ॥पीतोदाहरन
॥ ॥वैनतेयवानरविधाताऔरवासवजेहरदहरतालरंग
हाटिकसुहायोसो॥चक्रवाकचंपकहेचपलाचमेलीसोनगो-
रोचनगायमूत्रह्मपुरवतायोसो॥पीतरपरागमेरुगंधककमल
कोसकेसरकोरंगसोकवीसुरनगायोसो॥वासुदेवपीतवास
कंसकाजकटिकस्यो इनतेंविसेषसुन्योवीररसछायोसो ॥
॥१६॥ ॥इतिवर्णोदाहरन॥ ॥चौपाई॥ ॥त्रियके
नीदरकोपअहार॥द्रगपुतरीअणुलघुउच्चार॥वामनदंडमे
रूदानामन॥आतमचितद्रष्टीदीरघगगन॥त्रियचीताकेहर
कटिकेस॥सूछिममायाब्रह्मविसेस॥त्रियनितंबकुचकरिकुंभ
स्थल॥पुष्टकीयेवरनतजेकविभल॥१७॥ भ्रूहकटाक्षअल-
कधनुअहिगति॥कोलदातवक्रकुटिलनकीमति॥तोमरबा
णदीपस्थिरनासा॥सरलमतीजेहरिकेदासा॥आननअंबु
जप्रेमप्रकास॥संपूरणआदरसप्रकास॥चकरीचक्रआला
तचक्रगनि॥फिरआवर्तकुलालचक्रभनि॥कुचकिंदुकघी
लादिकइंडा॥सुब्रतऔरकहियेब्रह्मांडा॥ मांहित्रिकोणअ

१ इहांसें आकृति धर्मके रूप देखावते हैं.

रुवज्रसिंधारै ॥ पांचतलज्जागुरुधारे ॥ नैनबाननखतोम
रतीछन ॥ मंडलमुद्रिकाकुंडलकंकन ॥ १८ ॥ ॥ इतिआकृ
तिः ॥ ॥ किसलयकुसमहरिजनकोमन ॥ बालककविबा-
नीमृदुतागनि ॥ उपलअस्तिकूरमकीपीठ ॥ वज्रकठिनपुनि
दुरजनदीठ ॥ मीनमधुपमरकटमनमाया ॥ छलसुपनोजो
बनघनछाया ॥ विद्युतमारुतचलदलकेदल ॥ ध्वजपटतिय
चषआदिकचंचल ॥ अचलमेरुध्रुवसंतनकोचित ॥ सुथल
रूपूतरकतीयसुरवदमत ॥ कुमतकुबामकुबुधिकुस्वामी
॥ तृषाप्रवासादिकदुखगामी ॥ कुलत्रियहासमदहसप्रिय
गत ॥ अबलपंगुअरुगुंगरोगजुत ॥ अंधछुधातुरप्रियअ
रुबालक ॥ बधिरअनाथतिनहिंहरिपालक ॥ बलीभीमहनु
पवनकालजम ॥ सत्यब्रह्मसबजगतझूठभ्रम १ ॥ जीवहिंरव
गिराविधिकीमति ॥ ध्रुवनभयावरसबहिअनगति ॥
जलप्रवाहमनमरुतसदागति ॥ फूलतूलतृनफेरफरेअति
॥ हाटकपारदसीसोपरबत ॥ इनकूंकविभारीकरबरनत
॥ काकउलूककोलमहिषीरवर ॥ शिवाकरभअहिआदि
क्रूरस्वर ॥ कोकिलशिखीवीणसुकसारो ॥ सुस्वरमिष्टउषा
दिकधारो ॥ गोरिगनेसगिरीसगिराको ॥ रविदोऊरामदान
कहिताको ॥ नलदमयंतीसीताराम ॥ रूपअश्विसुतरतिअ
रुकाम ॥ चंदनचंदकपूरसाधुसंग ॥ तुहिनपवनकोहैसीत
लअंग ॥ दिनमणिचित्रभानुपरोग ॥ औरतपतप्रियतम-
कोसोग ॥ १८ ॥ ॥ इतिगुन ॥ ॥ आकृतोदारन ॥

१ इहांसे गुण धर्मके रूप दरसाते हैं.

॥ ॥सवैया॥ ॥लघुक्रोधअणूमनदीरघमेरुहरीकटिकुं भकरीकुचहैतन ॥जुगभ्रूहधनूंस्थिरदीपकनासिकाकंचमुरवी चकरीहरिकोमन ॥कुचकंचनकिंदुकलालस्यंधारेमहागुरु लागहैवाणसेलोयन॥करकंकणमुद्रिकाकुंडलराधेकेमंडलओ पमाआकृतएगनि॥१९॥ ॥गुणोदाहरण॥ ॥पंकेजसेप दहीरकनीरदमीनसेनैनहैसंतनसोचित॥पीवपतिव्रतआधिन व्याधिनहंसगतीअबलानमेंभूषित॥कालरूपेबलब्रह्मसनोव्र तमायाकोफेलविरंचरूपेमति ॥व्यामेविनागतिस्वष्टसदागति फूलतेंफोरीहैभारीगिरीगति॥२०॥काकसोनासुरकोकिल सोस्करदारवसीबानिमहेश्वरसोदत,गौरिसोंरूपहैसीततुही नसोतापदिनेससोराधिकाराजत जाक्रमदोहनबीचहैताक्रम बीचसवैय्यानसोधिमहामति दासस्वरूपविचारकेदेखियोआ कृतओरसुभावकुकीगति॥२१॥उपमेयकूंउपमानहींहोयत हांअनन्वयअलंकार॥ ॥दोहा॥ ॥काउपमादेंआपकूं भोक श्यपसुतभान॥उपमालगेसुआपकी आपसद्रसकोआन॥ ॥२२॥दोषकूंगुनमानलेनोसोअनुज्ञाअलंकार॥एकभावकूं दबावतदूजोभावप्रगटेसोभावसात्यकहियेदोऊकोउदाहरन ॥दोहा॥ ॥मीचदुखदजानोमति महागुरूहैमीच॥अूपदा

---

१ इस सवैयामे आकृति धर्मके उदाहरन हैं जैसे कि राधेका क्रोध अ णूसरीखा लघु है औ मन मेरुसरीखा बडा है इहां अणु औ मेरु ये आ कृत हैं. २ गुणके उदाहरण देखाते हैं तहां पंकजसे पद इस वाक्यमे धर्म लुप्तोपमलंकार सिद्ध होता है इसमे कोमलता धर्म है पंकजसे कोमल पद. ३ जहां उपमेयको उपमेयहीकी उपमा दीजाय उसको अनन्व यअलंकार कहते हैं जैसे आपसे आपही हो.

ससासमरतां नरहरिस्कमरैनीच ॥ २३ ॥ एकठौरएकवस्तु मैंगुनऔगुनमानैसोलेरवअलंकार हरषविषादविरुद्धभाव कीसंधिदोउकौउदाहरन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ छिनछिनउमरघटतलखि भयोहरषअरुसोक ॥ धुनितबकताअवस्थालखि हैबुधजनलोक ॥ २४ ॥ ॥ आकृतवरननजातिअलंकारचेष्टावरननस्वभावोक्तिआदिकोपदआदिअंतकोअंतयथा जोग्यउदाहरन ॥ तैंतथासंख्यअलंकारविषादभावोदयःचारहुकोएकत्रउदाहरन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ क्यूंसिंघारसोंधौंपहरि कियतियरागउच्चार ॥ अंधरोपीसनजुतबाधिर हैपियपरषणहार ॥ २५ ॥ निंद्यामैस्तुतिसोव्याजस्तुति अलंकारचिंताभाव सांति ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हेरिकठोरदासनिकरत निरधनअरुनिहकाम ॥ दासअूपबकसतदुयनि धर्म्मनदुरलभधाम ॥ २६ ॥ ॥ स्तुतिमैंनिंदाहोइसोव्याजनिंदाअलंकार ॥ ॥ गेहपधारीसासकह अहोबहूजीआप ॥ हारदेहरीक्यूंरवरी ऐरीसुकुलअपाप ॥ २७ ॥ याकौंविपरीतलछनाभीकहतहैबहुवाची ॥ अतिस्वारथकारणकेलियेपदफेरफेरग्रहणहोइसोएकावलीअलंकार ॥ पदपदनूतननूतनतरू तरुतरुकोकिलखंड ॥ षंडषंडप्रतिमधुरस्कर स्करस्करमदनप्रचंड ॥ २८ ॥ यामैंपदमुक्तग्रहण मुक्तग्रहणहोइपदफेरफेरग्रहणतोवीपसामैपणहोतहैं कारणमालामैंभीहोय ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

---

१ इहां जो कहा कि हरि अपने भक्तको निर्द्धन औ निहकाम करते हैं और धर्म धाम ये दो पदार्थ नही देते है इसते कठोर हैं इसमें निंदामें स्तुति है अर्थात् सर्व श्रेष्ठ मुक्ति देने है कोमल हैं. २ इस जगह सकल कहनेमें स्तुतिमें निंदा है अर्थात् दुष्कुल.

आदर और विषादमें दैन्यक्रोधविचमानि ॥ एकहिपदकैंभ यबरवत यहैवीपसाजानि ॥ २९ ॥ धन्य धन्यतुम धन्यतुम रघुवर दसरथनंद ॥ तिष्ठतिष्ठनिसचरसमर कहिसबकियेनिकंद ॥ ३० ॥ करतासाधक और भोक्ता सिद्ध और रतेसुसिधअलंकार ॥ रागवागप्रियपटअंतर षट्रसनवरससोय ॥ करतासाधेकष्टकरि भोक्ताऔरहि होइ ॥ ३१ ॥ गुणदोषको करता एक भोक्ता अनेकसो प्रसिद्धा अलंकार ॥ सतहरिचंद राजानके पुरकियस्वर्गप्रयान ॥ तसकरतारावनकरीगयेकुटुंब केप्रान ॥ ३२ ॥ ॥ अर्थापत्तिअलंकार ॥ ॥ बहेजातगज राजजित कितचीटीकूंथाह ॥ दरसैं अघहरगंगजल परसैं अद्भुतराह ॥ ३३ ॥ ॥ मिथ्याधिवसतीअलंकार ॥ ॥ निरजलथलवोए अरक अंबचढेजोहाथ ॥ ज्ञानभक्तिवैरागविन तबहरिमिलेसुथान ॥ ३४ ॥ ॥ जापदार्थकेजतनकूं ढूंढतेसोईपदार्थमिलतीसरो प्रहर्षणालंकार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ढूंढतजाकारनगुरू पायेहरिमहराज ॥ चारपदारथआदिहैं भयेसकलसिधकाज ॥ ३५ ॥ ॥ प्रश्नउत्तर होइते प्रश्नोत्तर अलंकार ॥ ॥ हेगुरुकबपावैसकहरिदासनकूंकलिकाल ॥ भक्तिसदयवैरागमन ज्ञाननिरापरवचाल ॥ ३६ ॥ ॥ विरुद्धकारणतें कारजकी प्रकटता पंचमीविभावनाअलंकार ॥ ॥ नईलगनलखिजोरन्वषगई अंगुष्ठबताय ॥ मुद्राजोनटवेमई भईवयानेभाष ॥ ३७ ॥ ॥ साटेमें थोरोदेके बहुतले सोपरव्रत्तअलंकार ॥ देकटाछहरितनकसीलीनेमनधनप्रान ॥ बुधविचारसकरव

---

१ हे गुरु कब पावै हरि यह प्रश्न भक्ति इत्यादिक पद उत्तर भये यासे प्रश्नोत्तर अलंकार भया.

देखुकी सबकुलमानसयान ॥ ३८ ॥ निजगुनतजिगुनसंगकी गहैस्रुतदगुनजानि ॥ संगतितैंगुननालगे ताहिश्रतद्गुनमानि ॥ ३९ ॥ दुष्टसाधव्हैसाधकी संगतिकरिपलआध ॥ दुष्टसंगकरिसदयदिल होतनसाधअसाध ॥ ४० ॥ ॥ संगततें पूर्वगुन वृद्धिपावे सोअनुगुनाअलंकार ॥ ॥ आगेंहिहनूअगाधबल पायरामसिरदार ॥ छिनमैंकुलनिसचारकोक्यूंनकरेंसंहार ॥ ४१ ॥ उत्प्रेच्छामनुजनुसबद बस्तुहेतुफलहोइ ॥ औरेऔरेसबदजहँ भेदकातिहैसोय ॥ ४२ ॥ हरिपदमानोकंजहेसियमुखहैजनुचंद ॥ कविमुखकीबानीनकूं औरेपटतअनंद ॥ ४३ ॥ यहनहियहसोअपुती दूज्यूरूपकजानि ॥ किधौंशब्दकिंसब्दतहां संसयकहतबखानि ॥ ४४ ॥ बदरानहियेकामके तनेवितानविसाल ॥ बालकिधूंहाटकलता किधूंकेतकीमाल ॥ ४५ ॥ हैउल्लेखसोईएककूं बहुसमझैबहुभाय ॥ त्रियनिकामहरिसंतहित कंसहिकाललखाई ॥ ४६ ॥ ॥ काहुकोगुनदोषकाहुपैपरेसो विधकरणोक्तितामेअंतरभूत प्रथमकोअसंगति कारणकारजकहूदृष्टांततीनूकाएकत्रउदाहरन ॥ ॥दोहा॥ ॥दूतपणोत्थोयनकरे मनपावतहैताव ॥ घोडभईपदउंटके दीजैरवरकैडाव ॥ ४६ ॥ एकक्रियापदकूंतथादेहरीदीपवत पदकूंबहुबेरअर्थकरताग्रहणकरैसो एकानेकोअलंकार ॥ ॥ हरिस्रुदयानहिविसरही अदयात्रीयासदैव ॥ साधुजगतपतिस्यामको जीवकाहीं

१ इहां साधुके संगसे दुष्ट हू साधु होना है इसमे यह आयाकी साधुके गुणग्रहण किया इसत्ते तद्गुन भया औ दुष्टके संगतसे साधुअसाधु न भया यह अतद्गुन भया.

कोजीव ॥ ४७ ॥ ककारतेंनास्ति, ककारनकारतेंआस्ती अर्थी धुनितेंआवेतो काकोक्तिअलंकार ॥ ॥ अग्निकीतृपती काष्ट तें सिंधुकीसरितापाय ॥ कालकीभक्षण भूतकें नरतेंत्रियनअघाय ॥ ४८ ॥ एकभागग्रहेंतेंसेषभागजाएयोंजायसोसेषभागज्ञापकालंकार ॥ एकभावकेग्रहणतें अन्यभावकैत्याग ॥ होय कीग्रहधोत्यागतें एकग्रहेंबहुभाग ॥ ४९ ॥ यापरिषदमें एकहीयहें विदुषकरिजानि ॥ वापरिषदकेंबीचमें मोहिअज्ञतुमानि ॥ ५० ॥ सुरतरुआदिकवनस्पति वागसुनंदनमांहि ॥ बिनय आदिसुभगुणसकल होयअधममेंनाहि ॥ ५१ ॥ एकोन्येकशेषभागज्ञापक येदोनूअलंकारनवीनहें ऐसेहीनवीनभूतभविष्यवर्तमानपरोक्षप्रतक्षउत्तममध्यमकनिष्ठकारणकारजआधारआधेयलोमविलोम भेदतें बोहोल भेदहोतहें बहुनाकिं ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ द्रव्य ९ और गुण २४ कर्महें ५ पुनिसामान्य बिसेस ॥ हेंसमवाय १ अभावलों सप्तपदार्थअसेस ॥ ५ ॥ भू १ आप २ तेज ३ रुवाय ४ मन ५ दिसा ६ काल ७ अकास ८ आत्मादि ९ नवद्रव्यहें गुणकोआश्रयभास ॥ ५२ ॥ कवि० ॥ रूप १ रस २ गंध ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ आदू पृथक ७ संजोग ८ औविभाग ९ गुनगाइये ॥ परत्व १० अपर्त्व ११ बुद्धि १२ सुख १३ दुख १४ इच्छा १५ द्वेष १६ प्रयत्न १७ गुरुत्व १८ औद्रवत्वकरिमानिये ॥ सनेहत्व २० संस्कार २१ धर्म २२ अधर्म २३ श

---

१ इहां यह अर्थ है कि अग्निकी तृप्ति क्या काष्टसे होती है अर्थात् नही होती है सिंधु जो समुद्र सो सरिता याने नदी पायके क्या तृप्त होता है अर्थात् नही इसको काकोक्ति कहते है. २ आपजल. ३ अग्नि. ४ कालसमय.

व्द् २४ चतुर्विंशसंख्यामतन्यायतें वरवानिये पांचकर्म हैं सा
मान्यविशेषअनंतविध चारहैंअभावताहिटीकातैंपिछानिये
॥५४॥ वार्ता उत्क्षेपण अपक्षेपण आकुंचन प्रसारण गमन
एतानि पंचकर्माणि सत्तारूपं परसामान्यंजातिरूपंअपरसा-
मान्यंप्रागभाव प्रध्वंसाभाव अन्योअन्याभाव अत्यंताभाव
सप्तपदार्थनविषे द्रव्य गुणकर्मकेसमवाय एकता भयेजातीभ
यीसामान्यत्वतें नामेंविक्तिभई विसेसत्वजाती गोतजानेनाम
रूपजान्योजाय शृंग पुछ कंबलई हैरूपगायंनाम. विक्तिविसेसज्ञा
न काली पीली धोली खांडी बांडी भीडी इत्यादि सर्व परजातीनाम
रूपलग्योहै. तातेंशब्दप्रति पहचानिये आप्तवाक्यंशब्दं आप्तज्या
थार्थवक्ताको वचनवाक्य पदनको समूह यथागामानयशुक्लादंडे
नेतिशक्तंपदंअस्मात पदादयमर्थो बोधव्यं इतिईश्वरशक्तिः घ
टकहेते घटजान्योजाय पटनहीं जान्योजाय इहै ईश्वरशक्तिः ४९
आकांक्षायोग्यतासंनिधिश्च वाक्यार्थज्ञानहेतुः पदस्य पदांतर
व्यतिरेकप्रयुक्तान्वयाननुभावकत्वमाकांक्षा अर्थाबाधो यो-
ग्यतापदानामविलंबनोच्चरणंसन्निधि आकांक्षादिरहितवा
क्यंनप्रमाणंयथागौरश्वपुरुषोअस्तीतिनप्रमाणंआकांक्षावि
रहात् अग्निनासिंचेदितिन प्रमाणंयोग्यताविरहात् प्रहारे २ स
होच्चारितानिगामानयेत्यादिपदानिन प्रमाणंसान्निध्याभावांत
म्॥५६॥ ॥दोहा॥ निराकांक्षारुअयोग्यता असान्निध्यतात्या-

---

१ ये प्रकरण न्यायशास्त्रका है जहांसे सप्त पदार्थ निर्णय किये हैं उ-
हांहीसें सो प्रथमती इसका इहां बडा प्रयोजन नहीं परंतु ग्रंथकर्ताने
आपकी नैयायकता देखावनेके वास्ते लिखाहै जो व्याख्या करें तो विस्ता
र ग्रंथसे दुना होयगा इसवास्ते नहीं किया.

गि ॥ होवेसबदसमूहते आप्तवाक्यसुनित्यागि ॥ ५७ ॥ अव्या
प्तिअतिव्याप्तिपुनि दोषअसंभवहोय ॥ इनतिनहूंकूंसमझिकर स
ब्दप्रंतिकोजोय ॥ ५८ ॥ गो १ हय २ सींचहुअग्निकरि ३ प्रहरांत
र उच्चार ४ गोकपिलागोस्रृंगते ५ गोइकखुरतेंधारि ॥ ५९ ॥ पद
१ पदांस २ वाक्यार्थ ३ जेरस ४ दूषनविधिपंच ॥ इनकेअंतरभू
तहैं समझहुबहुरूनिरंच ॥ ६० ॥ वार्ता इनदोषनरहित शब्दप्र
तकूं विचार वोसब्दप्रती ३ रूढियोगरूढीयोग्यककढचाप्र
छकोटूंटजाकूंदिष्टकहियेअर्थरहितवाहिटूटेमेंवरतेंसोरू-
ढीपंकजकमलपयादमेघपंकसूंप्रकटहोय ॥ औरहुतेंपंकज
नहिंकहाय जलकेदेनहार औरतेंपयोदनहींकहाय विनामेघ
सोजोगरूढजलज कमलकूंभीकहिये इंदुमुक्तादिककूंभीक
हीये औरनाविषैंहू अर्थवरतेंजातेंयोग्यकमुख्यार्थछोडे तथा
मुख्यार्थलग्योरहै उपरतेंहुआवेसोलछना गंगायांघोष. गं
गाशब्दः अभिधानविसेअर्थछोडतीरकोअर्थग्रहणकरेसो
लछना. तटकेविषेसीतलता पावनताआदिध्वनि अथचतुर्वि
धिरीतिसब्दालंकार ॥ ॥दोहा॥ ॥ ध्वनीआत्माकाव्यकौ क
हत भरत मतग्रंथ ॥ कहतआत्मारीतकौ वामनमतकोपंथ ॥ ६१ ॥
काव्यकोआत्मारसहै इतिसिद्धांत ॥ गोडीकेविचवोजगुन लाटीगु
नपरसाद ॥ वैदर्भीपांचालिविच गुनमाधूर्यसवाद ॥ ६२ ॥ ॥
अथगोडी ॥ ॥ वर्णसंजोगिटवर्गमय रचनाबंधनछंद ॥ अर्थ
जुबहुतसमासतें गोडीकहतकविंद ॥ ६३ ॥ समासलछन ॥
सोते १ नें २ करि ३ औंअरथ ४ तें ५ कौ ६ मे ७ नसमात ॥ वाह

१ जिस छंदमे टवर्ग याने ट ठ ड ढ ण ये वर्ण बहुत संयोगी होय औ अर्थ बहुत समासते होय उसको गोडी कहते हैं.

रिसातविभक्तिको अर्थसमासलिखात ॥ ६४ ॥ भाषामेइकब
हुवचन नहिंद्विवचनकहाई ॥ हैस्त्रिलिंगपुलिंगहै नपुंसकनाहीं
लखाय ॥ ६५ ॥ ॥ गोडीकोउदाहरन ॥ ॥ तेडीऐंठतंभ्रू
हटिग दिल्हीअमेठतदीठ ॥ डबगइ छबिमोइद्रग करतढिठा
ईढीठ ॥ ६६ ॥ ॥ अथवेदर्भी ॥ ॥ बिनसमासकिसमा
सकम सानुस्वारबहुवर्न ॥ नहींटवर्गसंजोगनहि वेदर्भीउ
च्चर्न ॥ ६७ ॥ ॥ उदाहरन ॥ ॥ फंदगयंदनिकंदकर जग
तवंदव्रजचंद ॥ मंदमंदमुसकतमधुर नंदनंदसुखकंद ॥
६८ ॥ गोडीवेदर्भीमिले पांचालीसोजानि ॥ वर्नसजुगअनु
सारजुत सदमतकरनवखान ॥ ६९ ॥ चिंतमिंतअंतरलग्यो
वृंदवृंदव्रजवाल ॥ मंजनअटतन विसरत्त गंजनकंसगुपाल
॥ ७० ॥ ॥ अथलाटि ॥ ॥ जामेकोमलपदभरे लगतस
वादपढंत ॥ लाटीरीतिसुकहतहै विदुषमहागुनवंत ॥ ७१ ॥
॥ उदाहरन ॥ ॥ गिरिगिरितरुतरुसुधरहरि बजतमधुरसुर
वेन ॥ ललतलाललोयनलखत ललचत ललकतनेन ॥ ॥
७२ ॥ ॥ अथवृत्यानुप्रास एकवरणकी किंवा बहुतवरनकीब
हुवेरसमताहोई सोवृत्यानुप्रासः ॥ बहुवरनकीबहुवेरसमता
॥ दोहा ॥ ॥ कंजनमदगंजनकरे अंजनमंजनऐन ॥ खंजन
शिवभंजनरखतम नितहरिरंजननेन ॥ ७३ ॥ ॥ एकवरनकी
बहुवेरसमता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुनगनअरपनकरिदिये तन
मनधनअरुप्रान ॥ जनसुखघनप्रदरामजी सुनिमुनिभयेस
यान ॥ ७४ ॥ अथसहितपदपलटैभावमेंभिन्नहोइसोलाटानु

१ जहां समास न होय अथवा समास थोडे होय औ जहां अनुस्वारयु-
क्त वर्ण बहुत होय औ टवर्ग संयोगाभाव होय उसको वैदर्भी कहते हैं.

प्रास॥ ॥दोहा॥ ॥तीरथव्रतसाधनकहा जोनिसदिनहरिगान ॥तीरथव्रतसाधनकहा बिनानिसदिनहरिगान॥७५॥ ॥अनेकवरनकीएकएकवेरसमताहोयसो छेकानुप्रास॥ ॥रागवागरचनारुचिर पूर्णचंदसुखकंद॥ वामकामप्रदहैंविभो एहमेंचहतअनंद॥७६॥ ॥सबदएकहीवारवारआवे अर्थओरहोयतेजमकानुप्रास॥ ॥सोरठा॥ ॥अच्छरपदविचहोय नहिंताकोअव्ययेतगन॥सव्ययतेहैसोय अच्छरतेंपदभिन्नता॥७७॥पूर्वार्द्ध॥ ॥अव्ययेतें उत्तरार्द्धसव्ययेतेंउदाहरन॥ ॥दोहा॥ ॥समरिसमरिदनुकुलतपन गायगायद्विजपाल॥ ताकेपाइउपाइतजि करतसकअकरतचाल॥७८॥ अत्यानुप्रासतुकांतकुंकहै सबछंदमेंहोतहै श्रुतिअनुप्रास एकवर्गकेवरनछंदचरनमेंवहोतसधेंजाकोसाधारनलछनकुकहतहे॥ ॥दोहा॥ ॥भानुभीम भगवत भवा भारथिपुत्र भवेस॥भगतकालत्रयत्रयभवन बकसहु मंगलवेस॥८०॥ ॥अथरसनकीसुचिनका॥ ॥अथसत्रुमित्रस्थाईस्वामीरंग॥ ॥दोहा॥ ॥सत्रुबिभत्ससंगारको करुणासत्रुविचार॥भयरुसांतिहुसत्रुहै हासिसुमंत्रनिहार॥८१॥ मित्रविभत्ससहासिको भयरससत्रुसमान॥मित्ररौद्रहैकरुणको हासिमहारिपुजानि॥८२॥भयरसहैरिपुरौद्रको वीरमंत्रकरिजानि॥सांतिकरुनरिपुवीरके अदभुतमंत्रवखानि॥८३॥ उदैहोतुनिर्वेदजल दसरसथाईलोन॥ तातेंरिपुसबरसनको सांतमुख्यसवगोन॥

---

१ इहां रसोंकी शत्रु मित्रता जो कहि है इसका प्रियोजन यह है किमिश्रपरे शत्रु रसन आना चाहिये इनके भेद रसतरंगिणीमेंहै जो इहां लिखें तो ग्रंथ बढेगा इसवास्ते नहिं लिखते हैं.

॥ ८४ ॥ एकादसरसदासकीस्थाईबिगरैसोई ॥ भक्तिजुक्तनि वेंदविषें ज्ञाननिर्वेदविषें विनयकुवोंनासहै वेदांतमततें ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ अहंब्रह्मास्मीति ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रतितेंपुष्ट सिंगारहै हांसीहास्यविचार ॥ करुणापुष्टहैसोकतें रौद्रक्रोध तेंधारि ॥ ८६ ॥ वीरपुष्टउच्छाहतें भीतितेंभयजानि ॥ निंद्या सहतविभत्सहै विसमेअद्भुतमान ॥ ८७ ॥ सांतिपुष्टिनिर्वेद-तें दासस्वरूपअनूप ॥ रसनेंस्थाईभावविन भनतसबेकवि भूप ॥ ८८ ॥ दासऔर सख्यत्वहै वात्सल्यरस करजोय ॥ विनपरहास्यममत्वहै स्थाईद्वादसहोई ॥ ८९ ॥ स्यामसिंगार रूकामपति वामनपतिसितहास ॥ करुणाधूसरजमयती रौद्रलालसिवदास ॥ ९० ॥ वीरहेमरंगइंद्रपति भयकालोप-तिकाल ॥ हर्योविभत्समहाकालपति सांतिस्वेतहरिपाल ॥ ९१ ॥ अदभुतपीतरुवीर्यपति नवरसस्वरूप ॥ चारषानिवि चिरूनिलिखे कहेप्रगटकविभूप ॥ ९२ ॥ सबदसपररसरूपर स गंधपंचविषयानि ॥ सांतिकथाईऔररस इनविचप्रग टतआनि ॥ ९३ ॥ हैविभावअनुभावजे सांतिकसंचारीन ॥ स्थाईआदिकसमझियो रसनवीचपरवीन ॥ ९४ ॥ ॥ अथ सात्विका० ॥ अश्रु १ प्रलय २ वैवरनता ३ स्थंभ ४ कंप ५ सुरभंग ६ ॥ स्वेद ७ पुलिक ८ जंभा ९ गिनो १ तंद्रित १० जुत

---

१ अहंब्रह्मास्मि इसवाक्यको अर्थ यहहैकि मैंब्रह्मात्मक हौं अर्थात् ब्रह्म मेरा अंतर्यामि है मैं उसका शरीरभूत हौं जैसे प्रकृति मेरा शरीरहै तैसे मैं ब्रह्मका शरीरहौं शरीरवाची शब्दोंका अंत शरीरीहीमे होताहै जैसे यह मनुष्य प्रथम देव भया था पुण्य क्षीण होनेसें मनुष्य भयातौ देव आत्मासे था कुछ इन्ही शरीरसे तथापरंतु अंगुली इसी शरीरके सामने करी ऐसेही इहांभी जानो.

दसऋंश ॥ ९५ ॥ ॥ अथ संचारि छप्पै ॥ ॥ हैनिर्वेद १ रुग्लान २ संका ३ श्रम ४ चिंता ५ कहिये ॥ मोह ६ विषाद ७ रु दैन्य ८ असूया ९ आलस १० लहिये ॥ मंद ११ सभ्रंती १२ उनमाद १३ हरष १४ श्रम १५ लाज १६ चपल १७ धृति १८ ॥ जडता १९ भय २० आवेस २१ सुप्त २२ निद्रा २३ औत्सुक्य २४ मति २५ ॥ अवहित्था २६ बोध २७ अरुउग्रता २८ व्याधी २९ विषाद ३० वितर्क ३१ मृत्यु ॥ ३२ हैअपस्मार ३३ कूंआदिदे संचारीतेतीसहितु ॥ ९६ ॥ ॥ नवरसानुभाव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मनअरुवदनप्रसन्नता मंदहास्यमधुवैन ॥ ऐश्रृंगार अनुभावहै मोदजुक्तचालिनेन ॥ ९७ ॥ आदिरूपतजिऔरहोय वचनरुअंगविकार ॥ स्वरभंगादिकप्रगटव्है रसहांस्यप्रकार ॥ ९८ ॥ दीर्घनिसासरुरुदनतें मूर्छादैन्यविलाप ॥ करुनाकेअनुभावहै भूमिपतनसंताप ॥ ९९ ॥ करतेपूंचेकोमलन अधरडसनअरुकंप ॥ शस्त्रतोलवीरौद्रतें मुखचरववरनविलूप ॥ १०० ॥ सौर्यधैर्यप्रगलभवचन सात्विकरामांचादि ॥ वरनप्रसनतेंवीरको प्रगटकहतकविआदि ॥ १०१ ॥ कंपचरनकरअंगसिर चषचकितथिरकाय ॥ स्फस्फ अधरकंठतालुभय रसयहजान्योजाय ॥ १०२ ॥ नानाआननसंकुरित चषमुखछादनहोय ॥ बारबारथूकतरहै विभछमगटत्ताजोय ॥ १०३ ॥ वाहवाहहाहातथा गदगदवचनप्रभाव ॥ अहोचरननकोफूलवो अद्भुतरसअनुभाव ॥ १०४ ॥ अधोद्रष्टउनमतवा जगतेंव्रतउदास ॥ निजमुखनिंदाआपकी

---

१ अब इहां नवौरसोंके अनुभाव कहते हैं अनुभावउसको कहतेहैं जिसमें रसका रूप दिखने लगे अर्थात् रूपका अनुभव होने लगे.

हैरससांतप्रकास ॥५॥ शब्दतैंश्रृंगाररस ॥ ॥तौनकान्ह केगानकी परीकानमैंश्राय ॥जबहीतैंवृषभानजा भईचित्र केभाय॥६॥ ॥सपरसतैंश्रृंगाररस॥ ॥दोहा॥ दुलहनिकों पहेरायदी मोहनतोमरमाल॥स्वेदकंपस्थंभनपुलककलख्यो ताहिछिनलाल॥१०७॥ ॥रूपतैंश्रृंगाररस॥ ॥जबदेखिवृ षभानजा हियविचऊठीहूक॥ वंसीश्रोठनपैरही फेरलगीनहिं फरुक॥८॥ ॥रसतैंश्रृंगाररस॥ ॥वाप्यारीकेहोटको पानकीयोर सपीव॥कहैसुनैनहलैंडगे जबकोउरुक्योजीव॥९॥ ॥गंधतैं श्रृंगाररस॥ ॥प्यारीकेश्रंगरागकी गंधलपटभोज्ञान॥ध्या नलगेलोयनटपे कबकेठाकेकान्ह॥११०॥ऐसेहीपंचोदीपन सबर समैंजानिये नवरसएकत्र ॥छप्पै॥ गिरजाश्रंकसिंगार कीर्तिमु खकाजकरुणमय॥विभत्सरुंडकीमाल भूलश्राभरनउरग भय॥श्रसंभावश्रदभूतज्वलनचखपंचसीसजल॥रौद्रदक्ष- क्रतुनास भूततनसांतिरूपभल॥गनवीरभद्रजुतवीरमयहास नगनतनविमलजस॥उरस्वरूपदासधरध्यानश्रवराजत्तशि वतननवहिरस॥१११॥ ॥श्रथश्रंगहीनथाई॥ ॥कबि त॥ ॥भीलनीमेंप्रीतिद्विजकेंदसिंहपें उछाहसोतीमीतगयेपा येविस्मयनमानतू॥ पीकलीकश्रंगनाकेश्रंगपैंगिलाननाहिं सारिहुं जित्तकस्यालक्रोधनावखानतूं॥भिक्षाकाजेंगावतवय रागनिरवेदनाहिकदलीमरोरेगजकरुनानजानतूं॥ याहिविधिस्व रूपदासश्रौररसजितेश्राहिश्रंगहीनगिनलैंस्थाईजोसयान

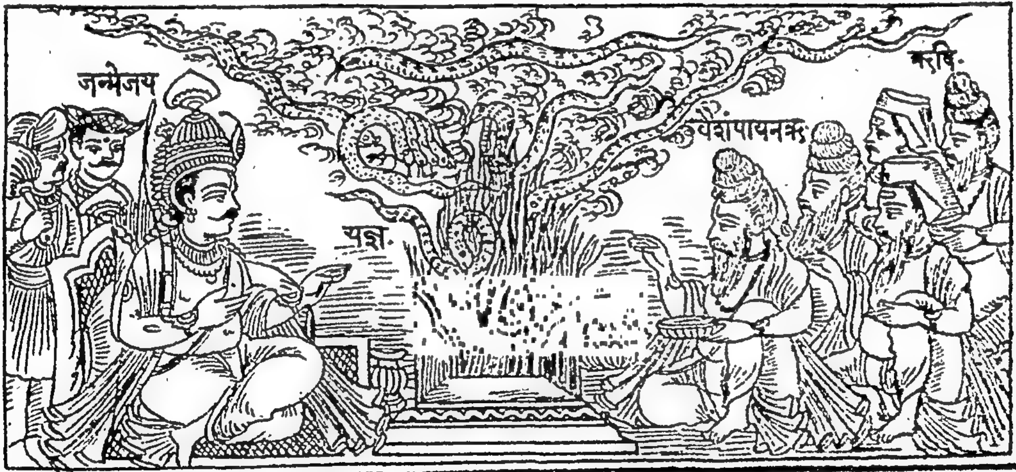
---

१ गानकी तान यही शब्द इसीमें श्रृंगार देखायाहै. २ माला पहिरा ते नें छातीये हाथ लगा जिसते कंपादिकभये यह श्रृंगाररस. ३ इहां श्री- शंकरजीके श्रगमे नवौरस एकठेकाने देखाते है.

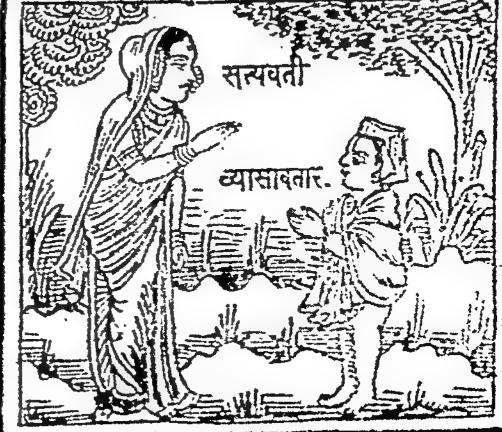
तू ॥१३॥ ॥अथरसाभास॥ ॥दोहा॥ ॥जुद्यपि तातें पूतकौ अनुचितसोरसभास ॥ रमणअगम्यानारितें गुरु जनसेंतीहास ॥११४॥ ॥इतिश्री पांडवयशेंदुचंद्रिकातृतीयमयूखः ॥३॥ ॥ ॥ ॥











श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथवैचित्रवीर्यवंसकारकभारथग्रंथ
कारकर्त्तावेदव्यासोत्पत्तिः॥ ॥छंदपद्धरि॥ ॥ओमद्रकेतगं
धर्वराज॥अद्रिकात्रियसोभासमाज॥तिहिरिषसरापऊषजोनपा
य॥उद्धारश्रूषहिदीनीचलाय॥ कोउमनुजवीर्यभजिपुत्रिहोय
॥ दंपतिनिजगतितुमलहहुदोय॥ वसुनामकवरआरवेटक
ज॥पितुवचनलागिगोजुतसमाज॥तिहवामनामगिरकासुता
हि॥रतवतिपठयेशुककवरपाहि॥ धरिनलकावीरजसुक हिदी
न॥जमुनापरनिकस्योसोप्रवीन॥ सिंचानऊपटमारिसुकला-
हि॥ बहुवीर्यगिस्योरवितनयमांहि॥सोमीनानिगलजातहि
सुभाव॥गर्भस्थितभोताहीप्रभाव॥सोजालपरीकहुंकर्मजोग
॥चिधयाहिआपकोंभोवियोग॥विदारणउदरइकपुत्रिपाय॥सो
करिकीरसेवासुभाय॥पुनभयोअंगयौवनप्रवेस॥विधाविधहि
चढनसोभाविसेस॥मछगंधाइकदिनसरततीर॥एकाकीभइ
अंतरअधीर॥द्विजपरासर्यकहतालकाल॥मोहिपारकरहु
मतिनटहुबाल॥भयजुक्तिनावप्रेरीसुभाम॥कन्यालखिरिष
भोविवसकाम॥रचिजान्चीतापहरिषअधीर॥रसमन्मथछुट्यो
जिहसरीर॥कन्यातबविनतीकरीताहि॥इकदिवसबहुरिकन्य
लखाहि॥ धूम्रतेंकस्योरिरविअंधकार॥पुनिकह्यौमोहिभ
जिसहतप्यार॥जोनटेंआपदेंहुंजरूर॥कन्यानननटिरिखिल
रिचकरूर॥खिणमात्रनावविच्चसंगवाय॥व्रतभंगभयोरिखव
रलजाय॥कहकन्यादूषणलग्योमोहि॥ताकोंभयत्नअबजुक्त
तोहि॥वीर्यतिहउपजिजदवेदव्यास॥अवतारअंससबजगतु
जास॥ ॥दोहा॥ ॥अष्टादसजिनउक्तितें पूरनरचे पुरान॥
एकलक्षभारतकियो वेदहुकियव्याख्यान॥ २॥ ॥
॥कवित्त॥ ॥ ब्रह्म १०००० पद्म ५५००० विष्णु २३०००

शिव २४००० श्रीमत १८००० भविष्योत्तर १४५०० नारद २५००० वाराह २४००० लिंग ११००० ब्रह्मवैवर्त १८००० जानियें ॥ कूरम १७००० मच्छ १४००० वामन १०००० स्कंद ८११०० मार्कंड ९००० कहि गरुड १९००० ब्रह्मांड १२००० अग्नि १५४०० विधसूंपिछानियें ॥ सामवेद २५००० ऋग्वेद २५००० जजुर्वेद २५००० अथर्वणवेद २५००० व्याकरुकेसूत्र वेद अंत कूंवखानियें ॥ भारत निर्माणकीनोसंहिताअनेकछायास्वरूपदासताहिकूंविचारैगतिमानियें ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जन्मेजयनृपकरतहों सरपसत्रातिहिंकाल ॥ वेदव्याससबरिसिखनजुत आयेमुनिवरचाल ॥ ४ ॥ पूछेनृपरिखराजप्रत निजपुरुषनकीबात ॥ कैसेबंधुविरोधभो कैसेजुधभोतात ॥ ५ ॥ वैशंपायनशिष्यकों दीआज्ञारिषिराय ॥ कुरुकुलकी पूरबकथा सबैंकहतसमुझाय ॥ ६ ॥ क॰ ब्रह्म १ अत्री २ चंद ३ बुध ४ और हैपुरूरवा ५ त्यूंआयु ६ पुनिनहुष ७ ययाती ८ पुरू ९ जानियें ॥ रोधाश्व १० रुचेयु ११ अनावृष्टि १२ मतिनार १३ तंसु १४ ईलन १५ दुकंत १६ भर्त १७ अमन्यु १८ वखानियें ॥ भौसुहोत्र १९ हस्ती २० अजमीढ २१ ऋक्ष २२ संबरण २३ कुरु २४ जन्मेजय २५ धृतराष्ट्रगुनगानियें ॥ ताकेभोप्रतीपजाके तीनपुत्रदेवापी १ रु शांतनूं २ त्यूंबाल्हिक ३ ऐचंद्रवंसमानियें ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देवापीतनकुष्टतें वनसेवनतपकीन ॥ कथनापुरदेसांतनुहिबाल्हिकदीन ॥ ८ ॥ देवव्रतसांतनुसुवन गंगातेंरनधीर ॥ विचित्रवीर्यचित्रांगदसु मच्छगंधातेंवीर ॥ ९ ॥ मत्स्योजुधगांधर्वतें चयसअग्रजभ्रात ॥ भोतबवीर्जविचित्रनृप हस्तनापुरविख्या

---

१ जनमेजयकीपरंपरा.

त ॥ १० ॥ कासीराजकीकन्यका भीष्महरनकियेतीन ॥ येक सिखंडीकूंवरभोहैलघुभ्रातहिदीन ॥ ११ ॥ षैंनरोगतैं बंधुसों ईमरयौनभोसंतान ॥ जाचेमातापुत्रमिलि वेदव्यासभगवान ॥ १२ ॥ नष्टतंतुकुरुवंसलखि सुनिनिजजननिपुकार ॥ तीनपुत्रउत्तपतकिये विश्वविख्यातउदार ॥ १३ ॥ पंडुपुत्रअंबालिकाअंबिकासुतधृतराष्ट्र ॥ धर्मअंसदासीतनय विदुरमहामतिशिष्ट ॥ १४ ॥ ज्येष्टभ्रातअंगहीनको नहिभयोछत्रअधिकार ॥ पंडुतप्योसबभूमिपर गुरुजनकोंसिरधार ॥ १५ ॥ सबभूपनपरपंडुकी आज्ञारहीअखंड ॥ तापैंअग्रजअग्रजपैं बाल्हिकभीस्मप्रचंड ॥ १६ ॥ मृगस्वरूपरिखिआपतें पंडुजुक्तवैराग ॥ उभयत्रियाजुतवनवस्यौ रागभोगकियेत्याग ॥ १७ ॥ नारायणवसुदेवयह पंडुगेहनररूप ॥ भूमिभारकेनासहित भयेअवतारअनूप ॥ १८ ॥ सुरअंसनतेंऔरभये जादवपांडवजानि ॥ असुरअंसप्रजगजपुरी[1] प्रकटेसकलप्रधान ॥ १९ ॥ बाल्हिककेसुतसोमदत्त ताकेत्रयसुतजान ॥ भयेज्येष्ठभूरिश्रवा भूरिशलदोइआन ॥ २० ॥ गंधारीकेपुत्रसत सुतादुसीलाएक ॥ सिंधुनृपतजयद्रथहीकूं दीनीसहितविवेक ॥ २१ ॥ वैसीसुतधृतराष्ट्रतें भयोयुयुत्सुफेर ॥ महारथीसुतधर्मतें मिल्योजुद्धकीवेर ॥ २२ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ वसुभीष्मजीवद्रोणकलूतें सुयोधनकोऔरबंधुदैत्यनकेअंसतेंबतायेहैं ॥ धर्मधर्म भीमवात इंद्रनर कर्नरवी अश्विनीकुवारदोऊमाद्रीपुत्रगाएहैं ॥ जातवेदधृष्टद्युम्नसोभद्रेयचंद्रअंस ऐसेंहीअनुक्रमतेंऔरहूजितायेहैं ॥ नीतितेजदेखिदेवअंसनमेंदैत्यअसएक

1 हस्तिनापुरमें.

तारुचैनते विरोधतेअघायेहै ॥२३॥ ॥दोहा॥ ॥कोऊका
रनतेंसखलिसभो भरद्वाजमुनिरेत ॥ धस्योदोनविच पुत्रभो
द्रोननामतिहहेत ॥२४॥ प्रसतनृपतिपांचालको भरद्वाजति
हग्राम ॥ वसतअभयसुतद्रोनजुत सकलगुननकेधाम ॥२५
॥ एकतकनिष्ठनृपप्रसतको जेज्ञसेनगुनआस ॥ सखाचार
करद्रोनतें रहतरिषिनकेपास ॥२६॥ उभयवेदसिष्योकरे उ
भयधनुषआचार ॥ कह्योकरेंद्विजद्रोनतें जज्ञसेनजुतप्यार
॥२७॥ मैंकदाचिन्नृपहोउंतो देहुअर्द्धतुहिराज ॥ गंगातेंदछि
नदिसा मैंउतरादिसभाज ॥२८॥ कालपाइअथजभस्यो मस्यो
प्रसतपिरबाप ॥ जज्ञसेनपांचालको भयोनृपतितआप ॥
२९॥ गोमतसिषकेसुक्रतें कृपरुकृपीइकसाथ ॥ भयेप्रगटबि
चमुंजके सांतनुकीयेसनाथ ॥३०॥ कृपकोंतोकुलगुरुकि
यो कृपीद्रोनकूंदीन ॥ तिनतेंएकतद्रौनीभयो वेदधनुषपरवी
न ॥३१॥ जथाअयोनीमातुपितु तथापुत्रद्युतिराश ॥ दुग्धपि
वतलखिवशिस्कनकुं हठतमातुपितुपास ॥३२॥ द्रव्यहीनद्विज
द्रोनतें जग्नसेनपैजाइ ॥ दुग्धपानहितपुत्रके जाचीएकहि
गाय ॥३३॥ किथोसखामनप्रगटसब सिस्कताकोंविरतंत ॥ चू
भिक्षकमेंछत्रधर कीनोहांसकुमंत ॥३४॥ तांदुलधोयरुस्वेतजल
गुडविचदेहुमिलाइ ॥ एकतपावहुपयसमुऽहे मेंनहींदेऊंगाय ॥
३५॥ सभाबीचअपमानलखि भोद्विजकूंनिर्वेद ॥ कस्योत्याग
जलपानविन ताकोदेससखेद ॥३६॥ आयनागपुरभीष्मतें क
ह्योपूर्वविवहार ॥ सूप्योभीसमद्रोनकूं राजभारकरिप्यार ॥३७॥
सोंपेत्यूंहीद्रोनकूं सबकुरुवंसकुमार ॥ सस्त्रअस्त्रविधिलेनकूं

---

१ हस्तिनापुर.

आदिक्षत्रआचार ॥ ३८ ॥ सैसवतैंसुतपंडुरत विद्याविसनवि
सेस ॥ पंचवधुक्रीडारहित विनयधर्मउपदेस ॥ ३९ ॥ विद्यारं
भकुंकमतिलक अक्षतजुतद्युतिकुंज ॥ अर्जुनगुनअनुरागवि
च सबगुनआश्रितपुंज ॥ ४० ॥ ॥ छप्पे ॥ ॥ कर्नकह्योहिं-
जद्रोनदेकुब्रह्मास्त्रमोहिअब ॥ द्रोनकह्योबिनक्षत्रिविप्रविनु-
मिलेतुमहिकब ॥ कर्नगयोकरिक्रोधजहाँद्विजरामतपतय ॥ क
ह्योविप्रकुनाथदेकुमोहिअस्त्रब्रह्मजय ॥ इकदिवसताहिधरिगो
दसिरजामदग्निसोवतभयेउ ॥ इकदैत्यआपजुतकीटतनकर्न
जंघछेदनगयेउ ॥ ४१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुरुनिद्रागतिजानि
के करननसरक्योरंच ॥ जागिउठेशिष्यप्रतिकह्यो इहधूक
वनप्रपंच ॥ ४२ ॥ करनकह्योयेहरुधिरमम कीटजंघपलमा-
हि ॥ मैंसमझोगुरुजागिये तातेसरक्योनाहि ॥ ४३ ॥ द्विज
कोइहधीरजनहीं तूंकोउक्षत्रीआहि ॥ अस्त्रजुलीनेकरिक
पट सफलगिनकुजिनताहि ॥ ४४ ॥ जज्ञधेनुरिषकीकोउ
सरलगिमरीअज्ञात ॥ दुतीयआपताकोंभयो होहितोहि
अरिघात ॥ ४५ ॥ तेरेरथकेचक्रकों भूमिनिगलिहैजब ॥ क
रतसपरधाजाहितैं सोइअरिमारहितब ॥ ४६ ॥ सबिद्याहैआ
पलैं करनहिंआयेगेह ॥ इत्तनेसबशिष्यद्रोनके पढिगयेनि
रसंदेह ॥ ४७ ॥ सस्त्रअस्त्रजुतासिखनकी दईपररवडकह्यो
स ॥ नरकीविद्यासकजसलखि भयोसुयोधनरोस ॥ ४८ ॥
॥ ॥ कवित ॥ ॥ अग्निअस्त्रहीतेंव्योमबीचकीनीज्वाल
मालमेघअस्त्रहीतेंताइज्वालकूंबुझाइकें ॥ वायुअस्त्रहीतें मे
घगिरिअस्त्रहीतेंवायुवज्रअस्त्रहीतेंगिरिवृंदकूंमिटायकें ॥
कधीभूमिअंतरिक्षअश्वगजपीठकबीकबीस्थूलसूछमअ
दृश्यतादिरवाइकें ॥ धन्यप्रथाकूंषजायोअर्जुनत्रिलोकजेतापां

डुनंदठाठेयूंअनेकसोभापायकें॥ ४९॥ ॥दोहा॥ ॥
कहतकरननरतेंकरूं हुंदयुद्धयहवार॥ सनिउमग्योधृतरा
ष्ट्रसुत लयोहृदयतेंधारि ॥५०॥ नृपसुतनृपसुततेंलरें यह
श्रुतिआगमरीति॥लरेंशूतनरतेंसुरूप कहेंयहेंजुअनीत॥
५१॥कहेंसुयोधनसनकुरूप त्रिधानृपतिताहोत॥निजबलतें
पुनसेन्यतें जन्मनृपनकेगोत॥५२॥ बलतेंकर्नअसाध्यहें अंग
देसअवदेत॥ छत्रचमरयूंकहिदिये कियअभिसेकसहेत॥
॥५३॥देखिसपरधाटुहुनकी भीष्मविसर्जनकीन॥ अस्त्रप
रिक्षाव्हेंचुकी मतिहोंक्रोधअधीन॥५४॥कह्योद्रोनतेंसिख
नमिलि देंआग्यागुरुनाथ॥ कर्योतोरअपमाननृप द्रुपदह
तहिजुतसाथ॥५५॥तथाअस्तुमुनिद्रोनतें कीनोंसेन्यप्रया
न॥कर्योजुद्धनृपद्रुपदकूं पकर्योजुत्तप्रधान॥५६॥सिषन
कह्योतूंछत्रधर यहभिक्षकद्विजद्रोन॥याभिक्षकविनआप
की कहिअवरक्षककोन॥५७॥ ॥दोहा॥ ॥नृपतिसखा
पनतोरमम बन्योंनहींविनुराज॥तबहींअर्धभूलेनकूं कर्योज
तनमेंआज॥५८॥द्रुपद०॥ कुधासखापनराखियो अबहूअ
र्धभूलेहु॥ श्रेष्ठहारिवोंआपतें मोहिछोरतुमदेऊ॥५९॥ द्विज
कोंआधोराज्यदे नृपआयोनिजभोन॥ कोउऐसोममपुत्रव्हें जो
मारेंद्विजद्रोन॥६०॥नासकरेंकुरुवंसको ऐसोकरतविचार॥
कर्योजज्ञमिलिरिषिनतें बांट्योद्रव्यअपार॥६१॥इकइकद्वि
जकोलक्षगो ऐसेंदईअनेक॥होनहारकेजोरतें यहांनदीनीए
क॥६२॥अग्निकुंडतेंप्रगटभो धृष्टद्युम्नअरिकाल॥ वेदीतें
कृष्णाभई सातवर्षकीबाल॥६३॥कहेंव्योमवानीवचन स
तकरिहेंदुजघात॥सुतातोरकुरुवंसको करिहेंभूपनिपात॥
॥६४॥ ॥सवैया॥ ॥संगसिसून केद्रोनीसिसूअनलावतओ

रकेपाछरेचारत ॥ तेमनुहारिकैयाहिकूंदूधदेयौंपितुमाततें रोयपुकारत ॥ मोहिकोगाइमगाइदोयुंसुनि दोनपांचालको जाचवोधारत ॥ दासस्वरूपनत्यौंनृपहासिकैभोयहरितन्नना नतैंभारत ॥ ६५ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ कंबरपदेमैंनृपअर्द्धराज्यदे नकह्योराजपायगायनत्योहासिअतिकीनीहै ॥ याहीकाजको प्योद्रोनसस्त्रअस्त्रविद्यासवैभार्गवतेंलीनीकुरुवंसनकोदीनी है ॥ कौरवद्रुपदहीकोबांधिराजवाढ्योतातेंधृष्टद्युम्नद्रौपदीकी उत्पतनचीनीहै ॥ दोनूंस्वसाभ्राततेंभयोहैपातक्षत्रीनकोऐसेरी तिभारतकीवनकेअधीनीहै ॥ ६६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जमुनाज- लक्रीडतहुते मिलिकुरुवंसकुमार ॥ दीयोसुयोधनभीमकूं मो दककेविचमार ॥ ६७ ॥ बांधिवलिकेतंतुतें डार्यौयमुनानीर ॥ लैगयेअहिपातालमें निरविषकियोसरीर ॥ ६८ ॥ अमृतपान करायके द्विगुनप्रवलकरिताहि ॥ माताढिगदिनअष्टमें पठयोग जपुरचाहि ॥ ६९ ॥ भीमवचनसुनिगुपतही कीनोविदुरप्रबोध ॥ अवनहिसमयविरोधको करोक्रोधकोरोध ॥ ७० ॥ विदुरादिक मनमेंसमरु कोउतैंप्रगटनकीन ॥ यतनैपदनृपपांडुको पिताध र्मकोदीन्ह ॥ ७१ ॥ जर्यौसुयोधनआगिबिन पितुतेंकरतनिरा सा ॥ राजयुधिष्टिरकोंदियो हमकोनरकनिवास ॥ ७२ ॥ याके पितुकीनोप्रथम अबयेकरिहैराज ॥ याकेपुत्ररुपौत्रतैं करिहैराज सुकाज ॥ ७३ ॥ जवहमकोसबजानिहै ग्यातहीनभुवपाल ॥ दुष्ट कर्मतेंजीवका करहिपरहिदुखजाल ॥ ७४ ॥ नीचहीसगपनजी वका उभयराजविनुपाय ॥ लुसपिंडोदकपित्रसब बसहिनर्क मेंजाइ ॥ ७५ ॥ अंगहीनतेंआपनो लह्योननृपअधिकार ॥ मे रेअवयवहीनना क्यूंनदियोभुवभार ॥ ७६ ॥ धृतराष्ट्र ॥ पांडुतासनामेंरह्यो भयोमोहिसुखराज ॥ यूंआज्ञाआधीनहै

पांच पांडु सकल आज ॥ ७७ ॥ तिनकोकैसेंत्यागमें करुनकरोवि रोध ॥ दुहुधाफटहि प्रधानकोउ बढहिपरस्परक्रोध ॥ ७८ ॥ ॥ सुयोधन ॥ ॥ विदुरविनाभीसमअरु द्रोनादिकपरधान ॥ फोउ नफटहितजिमोहिकूं जानहुपेतानिदान ॥ ७९ ॥ वारणाख्यपु रपठहुतुम मातसहितसुत धर्म ॥ मैंयतनइतराजका करहुहाथ सबसर्म ॥ ८० ॥ ॥ धृतराष्ट्र ॥ ॥ रुद्रमहोछावहोतहै वारणाख्यपुर पुत्र ॥ जाहुजुधिष्ठिरबंधुजुत करियोरक्षातत्र ॥ ८१ ॥ विदुर[1]गुप्तउप देसकिया आयलजबनप्रधान ॥ रचाहिपुरोचनलाखगृह मंत्रसु योधनमान ॥ ८२ ॥ पठवहुगुसमजूरतित राखिहैगुप्तसुरंग ॥ अग्निलगोनिसानिकरियो मातभ्रातलैसंग ॥ ८३ ॥ आनदेसछिपि विचरियो पोरखसमयनआज ॥ कालपायफिरकरहिगो बंधुन जुतनृपराज ॥ ८४ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ नीतिधर्मपुत्रकीतैंउग्रध न्वीअर्जुननैंबलीजानिभीमअंधपुत्रअकुलायकै ॥ वारणा- ख्यपुरीलाखयागृहकीनोजारिवेकोजवन पुरोचन प्रधानकूंप- ठायकै ॥ जरीएकभीलनीत्यूंभीलनीकेपांचोंपुत्रबचेएतोविदुर प्रबोधपंथपायकै ॥ दोयकंधदोयगोद एकपीठमातबंधुलैकेभी मचल्योतोहिजबनजरायकै ॥ ८५ ॥ बनमेंहिडंबमारीहिडंबाकूं धारिभीमपुत्रउपजायएकचक्रामेंपधारेहैं ॥ ब्राह्मणकेभेषभि क्षाअन्नतैंजीवकाहोत विप्रनकेसंगदेसद्रुपदसिधारेहैं ॥ गां- धर्वअंगारपर्णजीतिअस्त्रविद्यालीनी भूपपुरीभ्रगुसालाआ सनविचारेहैं ॥ व्यासआस्वासदेकेद्रौपदपैगोनकीनो अर्जु- ननेंभूपनकेमानमलिडारेहैं ॥ ८६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चारदिसा केनृपतसब मिलेद्रुपदपुर आनि ॥ कियोभूपसनमानअति

१ विदुरनें पांडवोंको गुप्त उपदेश किया.

सुतास्वयंवरजानि ॥ ८७ ॥ रंगभूमिदिनसोधसम मंचन बैठे भूप ॥ धृष्टद्युम्नसबतैं कहत भगनीसंगअनूप ॥ ८८ ॥ याधनुतैं यहच क्रऋष करैवेधततकाल ॥ हरैसोइजसनृपनकों ममभगनीव रमाल ॥ ८९ ॥ ॥कबित्त॥ ॥सोडसबरसकी है गतीथके हं सकीसीकटी भूपेसिंहकी है बानी रिखिन्नीनकी ॥ इंदिरासीआ भाजाकी मृदुताई किसलेकीरनीलता भवानीकीसीनेनदुतीमी नकी ॥सुरभीवसंतकीसीजोजनप्रमानचलेविद्यासरस्वतीकी सीआगमअधीनकी ॥ द्रोपदकीकन्याधन्यारंगभूप्रवेसकी- नौऐसीनाहिअन्यावानीभईलाकतीनकी ॥ ९० ॥ ॥राजलो कपरसपरवचन ॥ ॥स्वयंभूकुमारी भ्रातस्वयंभूकूं अग्रकी ये अनन्यस्वरूपलिये रंगभूमेंऊतरी ॥ तेजव्यंबहीतें सबैं भूप चकचौधे भयेचली मानूं मोहनीकूं मोहिबेकीपूतरी ॥ काकेओ भतीजेपितापुत्रमामेभागनेयआपसमैंवकेबानीभईजाततूत री ॥ मेरीकन्यामेरीकन्याभयेनिरलाजबोलेसरस्वतीओरअ र्थकीनोअदभूतरी ॥ ९१ ॥ ॥दोहा॥ ॥ भयेनिरुद्यमसकलनृप धनुषचढावनकाज ॥ कहांवधवो चक्रऊक सोचतद्रुपदसमाज ॥ ९२ ॥ भीमानुजठढोभयो करसमेटिसिरकेस ॥ महादीनद्वि जवृंदमें वाढीप्रभाविसेस ॥ ९३ ॥ ॥कबित्त॥ ॥ धनुषपै गौनमहाचली पांडुनंदनकोंमत्तगजराजपेज्यूंके हरलसतुहै ॥ दीनद्विजभेषअग्निभसमावछन्नशोषदेरव बालवृद्धयुवाब्रा ह्मणहसतुहै ॥ सुयोधनआदिवडेसूरदेसदेसनकेभूपनके तेजराधावेधतेनसतुहै ॥ नानाजेपटाबरकीकमररवुलतजात देरवोएफटांवरकीकंबरकसतुहै ॥ ९४ ॥ ॥दोहा॥ ॥दासि

१ द्रुपदी. २ धृष्टद्युम्न. ३ सरस्वतीनें यह अद्भुत अर्थ कियाकि सबनें अपनी कन्या समझ.

नकेजरबसनज्यौं फटेवसनबरनार ॥ त्यौंअंतर नर नृपनमें विबुधउचरितिहिंवार ॥ १५ ॥ बयतेंकुलतें विभवतें विद्यातेंन हिंहोत ॥ अतिपौरुषअतिबुद्धिबल पूर्वकर्मउद्योत ॥ १६ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ बोलेतपवृद्ध वय वृद्ध विद्यावृद्ध विप्रऐसे जिन कह्योहिजविनमापीरासिहै ॥ फहीतुमविप्रनकीहांसीही करावेगोएक्षत्रीनकीइह्यांकहांनही भईहासीहै ॥ पानकीनौ सिंधुकोअगस्तिगिरिदाविदीनोअर्बुदकोब्रह्मगर्तथाप्योकोन काशीहै ॥ बालहैअवस्था याकी कुशहैशरीरजाकोजानेजोलक्ष वेधयसकोप्रकाशीहै ॥ १७ ॥ कौनसस्त्रअस्त्रकीबरोबरीकरैया यातैपारथकीमैयाएकजायोवीरपाथही ॥ सुयोधनधृष्टकेतुज- रासंधभूरिश्रवाऔरहूषिसानेनैकछुयेधनुहाथही ॥ गुनकोचढा नपंचबानकोसंधानऐंचिछोरिवोरुबेधबोलरव्यौंनहलनाथही ॥ पर्सनधनुकोभूमिदर्सननिसानेकुकोदेवपुष्पवर्षन्नदिखानोए कसाथही ॥ १८ ॥ नमावतधनूसीसन्नमादियेभूपनकेमूर्वीचढी त्यूंचढीतेजीस्वसरीरपै ॥ साधल्हीइषुभयोसगपनसंधानताहि ऐंचतहीऐंच्योकन्याचेतमहावीरपै ॥ छूटेमूठि छूटिवोरसाकोभा रजान्योगयो वारैमणीदेषबंधुअर्जुनकीधीरपै ॥ मछकागीरा नोगजबगिरानोभयेएकठेभुवालकेमनोरथकीभीरपै ॥ १९ ॥ जरैतरैआगतापैतेलकोकटाहभरोतापैरवङ्गपैनीधारपायरी पितरहवो ॥ तालसातऊंचोचक्रभ्रमैतामैमीननैनताकोव्यंबनैल्प वीचअधोद्रष्टचाहिवो ॥ दुसहकोदंडकोचढानपंचबानता॥निर्ध

१ अर्जुनने धनुषके नमावतही सब सजोंके मस्तक नमाइ दिये औ धनुषकी पन चके चढतेही अर्जुनके शरीरमे तेज चढता भया.

प्रहारसुरथ्योगकोसोगहिवो ॥ बोलेलोकविनावीरवासवीके केसोबनेऐसोलक्षवेधकन्याकीरतिकोलहिवो ॥ १००॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मानहुभुवदधिमेखला धरिछलरूपकुमारि ॥ अर्जुनकूंवरकरलयो गरवरमालाडारि ॥ १०१ ॥ द्रुपददुल्हारीक रनतें धारिनरवरमाल ॥ राजश्रियास्कलधर्मकी सबदुष्टनको- काल ॥ १०२ ॥ कहिसहदेवसुजननितें लायेकछुजुतराग ॥ पृथा कह्योतमपंचहु भक्तहुजुक्तविभाग ॥ ३ ॥ कह्योजुधिष्टिरव चनसुनि लायेनृपतिकुमारि ॥ एकत्रियाहमपंचपति इहके सोआचार ॥ ४ ॥ गुरुजनआज्ञाआजलों हमनहींत्यागीमात ॥ पृथाकहैजोभवस्यहै ऐसेहिकेहेतात ॥ १०५ ॥ करीद्रुपद तेंमगटसब भयोनृपतिकोसोच ॥ करैयुधिष्ठिरअनपयूं इह धूकेसोपोच ॥ ६ ॥ कह्योदिखायौव्यासनें पूरबआपस्वरूप ॥ द्रुपदसीषसुनिव्यासकी कीनोव्याहअनूप ॥ ७ ॥ स्नुनतसुयो धनआदिनृप पांडवजीवतमान ॥ दुरजनविषसजनअमृत पानकरलगयेथान ॥ ८ ॥ कृष्णाद्रुपददोनोदये गजहयरथअ रुदास ॥ कछुदिनपांडवद्रुपदपुर हरिजुतकियोनिवास ॥ ॥१०९॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहस्नुनिबातधृतराष्टआप ॥ पांडुसतजीवतबढतोप्रताप ॥ करिहर्षघोषदुंदुभिदिवाय ॥ इहस्नुनतस्रुयोधननिकटआय ॥ करिहरषकियोबन्धूसोक- थान ॥ ममसत्रुबढतस्नुनिअप्रमान ॥ नृपकह्योविदुरकीसं कहकाज ॥ सोकाहिछिपायकियहरषआज ॥ किथमंत्रकर नसकुनीबुलाय ॥ अवकरोसत्रुनासकउपाय ॥ कोइपठवे

१ विदुर ऐसो न जानें कि पांडवनको औ इनको वैर है यातें नौबत बजवाई.

द्विजअपनेअधीन ॥ दैविषहिमारडारैंअरीन ॥ अथवानृप
द्रोपदकूंफटाय ॥ फिरमारिगेरिहुंविनुसहाय ॥ अथवाकछु
छलव्हैंभीमनास ॥ भीमबिनसुलभसबजुक्तत्रास ॥ यूंकहैंस्र
योधनमत्तअनेक ॥ इतसुनतनमानीकरनएक ॥ एकियेजत
नतुमनृपतिआदि ॥ विनुसिद्धभयेतेसकलबादि ॥ दअाज्ञा
माकहिसैन्यकोस ॥ विनुसेनकोसअरिहैंनिरोस ॥ जोप्रबलहो
हितेहतहिमोहि ॥ मेंप्रबलविनाअरिकरिहुतोहि ॥ १० ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ निकटविनापरखवालवय मिटेनस्रगमउपाइ ॥ दूर
सपक्षकिसोरतन यूंकससकहिमिटाई ॥ ११ ॥ कह्योभीष्मअ
रुद्रोणक्रप नृपजीयक्रुजियनीक ॥ तुछबुधिनकेकहनतें न
हिंविरोधयहठीक ॥ १२ ॥ इनकेअनुमततेंविदुर ज्येष्ठबंधुसम
झाय ॥ कह्योंअरधभूदीजिये सबदूषनमिटिजाय ॥ १३ ॥ ॥
छंदपधरी ॥ ॥ धृतराष्ट्रभूपगुरुवचनधारी ॥ सोइनीति-
जानकुलवृद्धसारी ॥ विदुरकूंपठयतिनलैनकाज ॥ दीयअर्ध
भूमिसबराजसाज ॥ दियइंद्रप्रस्थबैठकविसाल ॥ कियराज
युधिष्ठिरकछुककाल ॥ इकदिवसआयनारदरिषीस ॥ इन
पूजाकियउन दियअसीस ॥ सुंदोपसुंदआख्यानसुद्ध ॥ समझा
यकह्योबंधवविरुद्ध ॥ सोभ्रातृतिलोत्तमत्रियाव्याज ॥ कटपरे
सुरनकोभयोकाज ॥ तुमहूंजुतप्रीतिनियमलीन ॥ इकत्रिया-
पंचरहियोअधीन ॥ तथास्तुकह्योमिलपंचभ्रात ॥ तुमकह्योनि
यमहमकरहिंतात ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ द्रुपदस्रुताढिगयेक
पति हुयतहांदुतियनजाय ॥ जाइतुद्वादसवर्षबन जुतब्रह्मच

१ बालकथेऔ पासमेथेऔ कोईपक्षवालोभी नथा जबतौ मारिही न
सकेऔ अबतौ वे किसोरहैं तापरभी राजा द्रुपद पक्षपरहै.

र्पविहाय ॥ १५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कोउदिवसगयेइकवि
प्रनाथ ॥ परिपंथिलेगयेप्रबलसाथ ॥ अर्जुनसमीपकिय द्विज
पुकार ॥ तुममहाछत्रिहमनिराधार ॥ ममवित्तछुडावहु अथा
नंद ॥ करियेसबद्दुष्टनकोनिकंद ॥ ॥ अर्जुन ॥ ॥ अंतहपु
रमेरेसस्त्रआहि ॥ तहांभूपअयनजुतसमयनाहिं ॥ कछुजेज
फरकुठावहुंछुडाय ॥ भयोविप्रसुनतव्याकुलतभाय ॥ अर्जु
नद्विजआतुरलखियअभीति ॥ लेसस्त्रसमरकरिसत्रुजीति ॥
द्विजकूंवितदेनिजग्रहपठाय ॥ वियअरजयुधिष्ठिरनिकट-
आय ॥ कीजियेहुकमवनवासकाज ॥ वहकियोनियमरूधक
रहुआज ॥ १ ॥ ॥ जुधिष्ठिर ॥ ॥ मैंकरतहुतोनितनियमता
न ॥ कछुदोषनहींतुमअनुजभ्रात ॥ तेरोविजोगमुहिअसहमान
॥ अबहिंकछुकरियेपुन्यदान ॥ नरकरीअरजआधीनहोय ॥
छलधर्मनसाधैमहतलोय ॥ आचरनबडनकोलखिविरुद्ध ॥ चहु
वरनहोइविपरीतबुद्ध ॥ यहिकहिरुविजयवनगमनकीन ॥ कोटे
कस्वर्णरिषिसंगलीन ॥ जमुनातटसंध्याकरतवेर ॥ उलूपीनाग
कन्यासुहेर ॥ रतिकाजनरहिज्याच्योसुनारि ॥ ब्रह्मचर्यकह्यो
अरजुनविचार ॥ उलूपीकह्योऐसोनकार ॥ करिहोतभ्रूणह-
त्याउदार ॥ इकनिसारह्योनरअहमीकेत ॥ भोइरावानसुततास
हेत ॥ कोउकालप्राचीदिसगमनकीन ॥ तीर्थाटनदक्षणपंथलीन
॥ विकटपथजानिनरजुतआनंद ॥ विसरजनकियेसबविप्रवृंद ॥
मणिपूरनयरकीनोप्रवेश ॥ नरलखीतहांपुत्रीनरेस ॥ जाचीनृपपै
नृपसुताजाय ॥ नृपकहतनरहिकारनसुनाय ॥ ११६ ॥ ॥

---

१ इहां परम उत्तम यह धर्म देखाया है कि जहां स्त्री पुरुष दोनों होय तहां जाना अति पाप है.

दोहा॥ ॥शिववरतैंममवंसमहि एकहिसंततहोइ॥मेरेइहपुत्रीभई तुमहिससरपौंसोइ॥११७॥याकेजोकोउपुत्रव्है देहुराजममकाज॥तथाअस्तुअर्जुनकह्यौ कियोव्याहजुतसाज॥११८॥बभ्रुवाहतोकभयो तीनवर्षगयेबीति॥तजिसुतजुतचित्रांगदा अर्जुनचल्योंनचीत॥११९॥अच्छरपंचइंद्रलोककी रिखीआपकोपाय॥पंचतीर्थीभईग्राहनी नरविचरततहांआय॥१२०॥करिउनकोउद्धारपुनि कियेआनर्तप्रवेस॥रेवतगिरिउच्छावतहां मिलजदुवंसअसेस॥१२१॥ ॥छंदपधरी॥ ॥कृष्णादिमिलेअतिहेतकीन॥नितहोततहांउछवनवीन॥यकदिवसगिरिहिपरिक्रमतिआय॥लखिनरहिसुभद्राअतिलुभाई॥परसपरदेखिनरभगिनिप्रीत॥मुसक्यायकह्यौहरिजगतमीत॥यूंकहांलखतनरभियांआर॥चितकह्योनरजुममलियोचोरि॥श्रीकृष्णकह्योममभगिनिसोय॥हरणकरिजाहुजोप्रीतिहोय॥बलभद्रसहोदरजुतविधान॥दुरयोधनकोकियचहतदान॥अपनोरथदारुकजुतउदार॥दियकृष्णकियोनरहरननारि॥सुनिकोपेजदुकुलसकलशूर॥ननकसेंकवचरनबजेतूर॥इहसुनतबोलिहलधरअहेत॥करिहौंनरकौरवभूनिकेत॥१२२॥ ॥श्रीकृष्णवा०॥ ॥दोहा॥ ॥छत्रिनकीकन्याअयन लईहरनकरलाल॥अर्जुनलेगयोआपनी यामेंकहाविचार॥२३॥बिगरजुद्धजदुवंसके हरनभयोजसरीत॥जुधतेंलेजेहैंअजसहे अरजुनजगजीति॥१२४॥ ॥छंदपधरी॥ ॥अवतोदत्तकारनदासिदास॥हयगजरथलेचलियेहुलास॥बलिभद्रकह्योतुमचहतसोय॥करियेविचारयूंविलमहोय॥सबचलेसाजचतुरंगसेन॥दायजोसुभद्राकाजदेन॥आभरणवसनहयगजअनेक॥कुरुजदुनपरसप

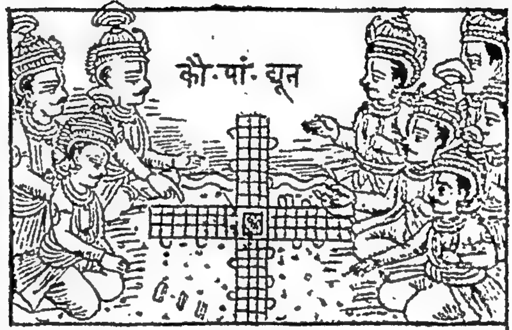
रदियेकेकु ॥ प्रतिरहेकेउकदिनइंद्रप्रस्थ ॥ सीरवलेचलेजदु-
वंसस्वस्थ ॥ श्रीकृष्णरहेअर्जुनहिसंग ॥ इकदिवसग्रीष्मरितु
धरिउमंग ॥ खांडवढिगजमुनाजलविहार ॥ तिनकाजभयेन
रहरितयार ॥ लैसीँषयुधिष्ठिरउभयवीर ॥ तरुनीनजुत्तरवि
सुतातीर ॥ जुतखानपाननाटकविधान ॥ कोउकालरहेक्री
डासमान ॥ बिठुबैठेपुनिएकांतवीर ॥ समयतिहअग्निधरिद्वि
जसरीर ॥ कहिवचनपांडुवनदगधकाज ॥ ममभयोअजीरण
मिटहिआज ॥ कहिअर्जुनहरिजुतप्रणतकीन ॥ यहवनसुरेंद्रर
क्षाअधीन ॥ ऐसेहुयहवाहनअस्वमीत ॥ तवतसकैसुरअसु
रजीत ॥ लैदयोब्रह्मरथअग्निपात ॥ गांडीवधनुषदेअक्षयभा
थ ॥ कृष्णकोसुदर्शनदयोतत्र ॥ जारवेखांडवनलग्योजत्र ॥ सु
निइंद्रखांडुरक्षकपुकार ॥ त्रिभुवनाधीसकियजुधतियार ॥
इकओरइंद्रअहिदनुअपार ॥ इकओरपृथानंदनउदार ॥ कछु
कालभयोसंग्रामक्रुद्ध ॥ बढिपढ्योपितापुत्रहुविरुध ॥ दियें-
आज्ञाउनकूदेवदेय ॥ यतरच्योसरापंजरअजेव ॥ द्वादसघन
अहुटेहीनदर्प ॥ मयदैत्यवच्योपुनिएकसर्प ॥ च्याररवगरिखि
पुत्रनविहीन ॥ वनभोदैतनजुतभस्मलीन ॥ नहिंभयोमेघदुत
वनबचाव ॥ गोइंद्रस्वर्गसातिकसुभाव ॥ मयकूंचक्रमारतथेसुरा
र ॥ सरनागतअर्जुनलियेउबार ॥ तिनदईसभाविपरीततत्र ॥ ज
लथलहिभ्रांतअधऊर्ध्वजत्र ॥ इकगदाभीमकारनअनूप ॥ सं
पदेवदत्तसुंदरसुरूप ॥ इतनेपदार्थलैयेहआय ॥ सवकहेजु-
धिष्ठिरतेंसुनाय ॥ कोउदिवसरहेहरिनृपतभौन ॥ कीयस्राग
सीखनिजपुरीगौन ॥ पांचहुपतिनसैंपांचपूत ॥ द्रौपदीप्रगट
कीनेअभूत ॥ प्रतिविंधजुधिष्ठिरसोप्रधान ॥ श्रुतिसोमभीमसेन
हिसमान ॥ श्रुतिकीर्तिदुतयअर्जुनस्वरूप ॥ नाकुलीसतानीक

स्कअनूप ॥ श्रुतिकीर्तिसहदेवहिसमान ॥ अनुक्रमहिभयेबलप्र
मान ॥ सुभद्रानंदअभिमन्यसूर ॥ कुरुवंशबीजविधिअंसक्रूर
॥१२५॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकाआदिपर्वणिचतुर्थो
मयूखः ॥४॥ ॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥

अथाग्रेसभापर्वप्रारंभः

नारदोपदेश. जरासंधप्रति युद्धजाचन. श्रीकृष्णअर्जुन. भीमसेन द्विजरूप.













श्रीगणेशायनमः॥　॥दोहा॥　॥अथदानवनृपधर्मकों
नीकेआयसपाय॥सभाचतुरदसमासमें रचिकैंदईबताय
॥१॥नारकसकअंतरिक्षचर राकसअष्टहजार॥दसहजारकर
मध्यतें चारोतरफअचार॥२॥　॥छंदपधरी॥　॥नानात्वज
लशायविटपतत्र॥चहुरवानजीवसाक्षातचित्र॥अनेकरत्न
दीरघनिचास॥आभासुमेधचुंबतअकास॥रत्नकेकंजअनेक
रंग॥एकतैंएकध्वजद्रुमउतंग॥जलहोयतहांथलसोजनात॥
द्वारकिठौरभीतिहिदिखात॥जबनिकागोखआदिकबितान॥
अज्ञातपरतविपरीतजान॥इकदिवसआइनारदअचिंत॥अ
वलोकिसभाहितजुतअनंत॥तितकह्योपंडुसंदेहताहि॥
उतइंद्रसभाबिचसुखितआहि॥राजसूकरनतुहिकह्योपुत्र
॥तिहसभाविजोगनहोइतत्र॥तथास्तुकह्योनृपधरमताहि॥
चहुदिसाविजयचित हृदयचाहि॥चहुभ्रातपायआयसुनरेस
॥दिसजीतनचारनृपदेसदेस॥प्राचीसुभीमअरजुनउदीची॥प्र
तीचीनकुलसहदेवईच॥करद्रव्यनृपनतेंग्रहनकीन॥सबइं
द्रप्रस्थपठवायदीन॥जिनदयोदंडनाहिकियेजुद्ध॥सोपायप
राजयभयेरुद्ध॥यूंकीयेविजयचहुभ्रातआय॥लीनेसुयुधि
ष्ठिरउरलगाय॥कृष्णकूंनिमंत्रणतिहीकाल॥कीनोरुआयकु
लजुतकृपाल॥३॥　॥दोहा॥　॥कह्योजुधिष्ठिरकृष्णतें
सबनृपजीतेसूर॥जरासंधगिरिव्रजपती रह्योअजयवहकू
र॥४॥दोयअयुतअरुआठसत नृपतितेकाराग्रेह॥भोग
ततेछुटेविगर मरवनसिद्धममयेह॥५॥　॥छंदपधरी॥　॥
कृष्णनरभीमजुतगमनकीन॥लेविप्ररूपजुधजाचलीन॥जु
ध्यौनृपभीमतेंद्वंद्वयुद्ध॥क्रीडादिनअष्टावीसक्रूध॥बीतेसु
मगधपतिमरयौवीर॥तहांलगेनृपतिदुखसिंधुतीर॥सहदे

वमगधसकतराजपाय ॥ श्रीकृष्णभगतअपनेसकभाय ॥
देनृपनसीरवअपअापभोन ॥ इंद्रप्रस्थकियोकृष्णादिगोन ॥
सबभईक्रतुसंभारसिद्ध ॥ सबदेसपतीआयेसनद्ध ॥ सुयोध
नआदिकुरुवंससूर ॥ कोउऔरहुसिसपालादिक्रूर ॥ ६ ॥ ॥
छप्पै ॥ ॥ भीमअन्नअधिकारसुहृदसेवानरधरिय ॥ दुरजो
धनहिभंडारदानअधिकारकरनदिय ॥ नकुलसोजसहदेव
अखिलभूपत्तनआराधनकृष्णचरणद्विजशौचलियोअ
धिकारमहतगतिनृपस्त्रियासुश्रूषाद्रुपदजा ॥ फरतजग्य
विचअनुक्रमहि ॥ जुजुधानआदिभूरिश्रवाजथाजोग्यअ
धिकारलहि ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भयोसंपूरनजज्ञतब
अवभृतकियोसनान ॥ जथाजोग्यसबनृपतिपुनि परषदबै
ठेआनि ॥ ८ ॥ प्रथमहिपूजाकौनकी कीजेकरतविचार ॥ पु
जहुमिलिसहदेवकहि यहश्रीकृष्णउदार ॥ ९ ॥ करतहिपूजा
कृष्णकी कोप्योनृपसिसुपाल ॥ सबनृपपरिखदकोछांडिके पूज
तप्रथमगुवाल ॥ १० ॥ कहेएकसतकटुवचन प्रेर्योचक्रमुरा
री ॥ छेद्योसिरताढुष्टको जयजयसुरनउचारि ॥ ११ ॥ ॥ छं
दपधरी ॥ ॥ करिपूजासबकोबिदाकीन ॥ उतरहेजित्तेस
नमंधअधीन ॥ मयसभादुलियदिनभूपआय ॥ रहिभ्रातन
जुतपरिखदरचाय ॥ वहसमयसुयोधनसभाथान ॥ आयो
सभ्रातमदअप्रमान ॥ जलजानिवसनसंकुरतकीन ॥ थलजा
नअभयछटकायदीन ॥ जलभीजभयोलज्जितअपार ॥ ह
सिपरीसभापुनिसकलनार ॥ निजवसनयुधिष्ठिरताहिकाज
॥ पठयेसुदेखिकोप्योअकाज ॥ पुनिद्वारजानिप्रविसितनची
त ॥ भालतेंभईभटभेंरभीत ॥ १२ ॥ ॥ नकुल० ॥ ॥ दोहा ॥
॥ जहांवज्रमणिहंसहै नीलमनिनकोमोर ॥ गरुत्तमानमणि

मयलता इहप्रवेसकीठोर ॥ १३ ॥ इहस्फानिपुनिकाध्यौअधिक लखिदरपनविनघ्रान ॥ द्रुपदसुताकोहासिसुनि गयोनागपुर थान ॥ १४ ॥ पितारुमातुलकरनतैं कहीमरमकीबात ॥ देखि जुधिष्ठिरकोविभव अतहिंचितअकुलात ॥ १५ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ क्रव्यादा १ पारदा २ सिवा ३ कास्मीरा ४ बाल्हिका ५ शका ६ अंबष्ठ ७ कोकरा ८ पांड्या ९ ताम्रलिप्ता १० अंगा ११ जे ॥ सागरा १२ द्रावडा १३ मद्रा १४ कैकया १५ त्रिगर्ता १६ मत्स्या १७ मागधा १८ मालवा १९ क्षुद्रा २० ओडकल्पा २१ वंगा २२ जे ॥ स्यंघला २३ केरला २४ खसा २५ शेशबा २६ हंसका २७ गोपा २८ वस्त्रया २९ पल्हवा ३० ताक्षी ३१ दरदा ३२ कलिंगा ३३ जे ॥ वसांतये ३४ पौंड्रका ३५ सुमेरढिगवासी आदिरोकेद्वारधर्मके निहार चलिसंगजे ॥ १६ ॥ सर्वअंग रोमाजे ॥ अरोमातीननेत्रानरश्रृंगवान एकपाद्युवानकेते आयेते ॥ भक्ष १ वस्त्र २ सस्त्र ३ वाद्य ४ अलंकार ५ अंगराग ६ यान ७ त्रिया ८ भोगअष्टांगभेदलायेते ॥ मित्राईतें याद वसंबंधतैंद्रुपदराजन्योतद्रव्यलाऐकर दातानांकहायेते ॥ औरसवैनानारत्नकरलै निजरकरिअर्जुनकीआज्ञातेंप्रवेसनेकपायेते ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नरआज्ञायूंनृपन परि मैंदेखीमहिपाल ॥ सुरभीआदरसिरजथा पुष्पसंकट कमाल ॥ १८ ॥ सेरोक्षैयहविभवसब ऐसोकरहुउपाय ॥ जो करिहोमतिविदुरकी तोमारिहूंविषखाइ ॥ १९ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ लोकविषेकीर्त्तिपरलोकविषे धर्मपूंजदेहविषे-तेजयहविषैद्रव्यछीजैना ॥ चारकूवचायझद्री भोजनकाज पूपनकसोड़ पांचोंभ्रातसधैतातेंद्वेषकीजैना ॥ तैरहीविभो अनंतऔरकोधरैंक्यूंचिंतपिताकहैपूतसेतीऐसेकोपती

जैना ॥ कीजेना कुटुंबद्रोह पीजैना हलाहल कूंलीजेना अ-
तोल भार मोकों दुरव दीजेना ॥ २० ॥ द्वारजान करन प्रवेस मो
रो फूट्यो सीस हसैं नर नारी तास मैं ते पछिताऊं मैं ॥ भीजी गये
वस्त्र मेरे जुधिष्ठिर ने भेजे और ऐसे दुरव पेट बीच कवलो पचाउ
मैं ॥ माद्री पुत्र दोनों रत्ना चित्र के दिखावे द्वार इलेक्के प्रवेस क
रों क्यूंन अकुलावूं में ॥ कैसे धीर लावूं केतो पाउ मन वांछित
कूंनातो जरिजाऊं विष खाऊं मरिजावूं मैं ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ ॥ कहि सकुनी अब का करै मरैं ज्येष्ठ मम पूत ॥ पांडुन
की सब राज श्री हरि लै कर चि द्यूत ॥ २२ ॥ वचनन रवंड हि आ
प को धर्मपुत्र जुत भ्रात ॥ इत बुलाइ चोपड रमहु इहै स्कनाव
हु वात ॥ २३ ॥ विदुर कहै धृतराष्ट्र तें वसनास के वीज ॥ बोव
त नृप पछितायहै कहत उठाये धीज ॥ २४ ॥ ॥ छंद पध
री ॥ ॥ विदुर को वचन स्रुत वचन त्रास ॥ लोप्यो सु भूप
आगम चिनास ॥ जुधिष्ठिर निमंत्रण पठयद्त ॥ इत रच्यो-
द्यूत मंदिर अभूत ॥ २५ ॥ जुधिष्ठिर धर्म रक्षक अभंग ॥ गुर
जन अदेस क्यूं करै भंग ॥ द्रुपदा जुत आयो नागथान ॥ मिल
कस्यो कपट तें इन हि मान ॥ दिन दुतीय द्यूत क्रीडा हि काज
॥ धृतराष्ट्र कह्यो राजाधिराज ॥ युधिष्ठिर इतें उत सुबल पुत्र ॥
मिलकर कुहरि अरु जीति थित्र ॥ माया जुत सकुनी कपटकार ॥
सब राज अंग जीते संभारी ॥ सहदेव नकुल नर भीम सूर ॥ करि
अनुक्रम हास्यो कर्म क्रूर ॥ फिर रस्यो भूप आपो लगाय ॥ स
कुनी सु बहुरि जीत्यो सभाय ॥ कहि सकुनी धकत वर हीनारी
॥ सो उरलगाइ नृप गयो हारि ॥ दारि अंशु विदुर गये निकरि द्वार ॥ स
ब कहत जुधिष्ठिर कों धिकार ॥ किंकरन स्रुयोधन हुकम कीन
॥ इत ल्याहु द्रुपदजा करि आधीन ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

द्रुपदसुता दिगजायतब कहिप्रतीपजुतहासी ॥ हास्यौ तुहि पतिचलिसभा होहुसुयोधनदासी ॥ २६ ॥ ॥ द्रौपदी ॥ ॥ यहप्राकृतनररनाकरै सोहिहास्यौनृपआज ॥ औरराजसब साजपर परीकहागजगाज ॥ २७ ॥ ॥ प्रतीप ॥ ॥ राज हारिचहुबंधुपुनि आपोहारिभूआल ॥ तुहिहास्यौबतकाक रत सीघ्रसभाउठिचाल ॥ २८ ॥ ॥ द्रौपदी ॥ ॥ सभा सदनतैंपूंछितूं मेरोन्यायअनूप ॥ प्रथममोहिहास्यौकिउन आपौहास्यौभूप ॥ २९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कहसबप्रतीप द्रुपदाकहाव ॥ भयोसुनतसुयोधनकुपितभाव ॥ अनुजकौं दईआज्ञाअधीर ॥ तूल्याहुनीचयहडरतवीर ॥ दुसासनकहि चलिसीघ्रदासी ॥ पूंछहुसंदेहानिजपतिनपासि ॥ द्रौपदी ॥ इकवस्त्ररजस्वलामलिनआज ॥ मोहिसभाप्रवेशनकवनका ज ॥ दुष्टसुनिकेसपरहाथडारि ॥ गईभाजिगंधारीसरननारि ॥ लैचल्यौग्रौरतपकरिबाहि ॥ गंधारिकह्योसोऊसुन्योनाहि ॥ गजतेज्यूंकदलीविकलअंग ॥ उतसभावीचल्यायोउमंग ॥ द्रौ पदीप्रसंगपूंछोसुदीन ॥ नाहिकरैउतरसबभीतलीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहिविकरनधृतराष्ट्रसुत कोउतोबोलहुन्याव ॥ नहिबोलततोमैकहत जैसीमोहिलखाइ ॥ ३० ॥ नृपकेहारे अनुजसब आयन्याययहरीत ॥ द्रुपदाहारीएकतैं जाइसुपर मअनीत ॥ ३१ ॥ फिरनृपहास्योआपकूं पीछैद्रुपदकुमारी ॥ किलहैपतिसामर्थ्यता देखहुनेकविचार ॥ ३२ ॥ कोपजुसुति हांकरनकहि करतलरकईबात ॥ तोबिनएतेवृद्धसब बोलत कोउनलखात ॥ ३३ ॥ सुधरीअग्रजकीसबैं तूअवदेतबिगा- रि ॥ पर्वसहास्योधर्मसुत तामइद्रुपदकुमारि ॥ ३४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ बताईसुयोधनजघवाम ॥ इतबैठद्रुपदजा

सहितकाम ॥ द्रौपदीकह्योयहजंघवीच ॥ बैठिहैभीमकीगदा
नीच ॥ अतिकहतकटुववकरनओर ॥ पतिकरहुनहारैतुहिब
होर ॥ कियेसैनवसननृपहरनकाज ॥ सबबंधुपंचताजेदियेसाज
॥ सिरजघावेष्टनविनासूर ॥ तजिचर्मओटव्हैहैरहेदूर ॥ द्रौपदी
चीरऐंच्योसदुष्ट ॥ करिथक्योदुसासनअधिककष्ट ॥ लैसकेदुपद
जाकौनलाज ॥ बैठेहारितिहांतनिबनिबजाज ॥ ३५ ॥ ॥ कबित्त
॥ ॥ गजहोपुरुषप्रहलादहूपुरुषहतोजहां भयेआतुरसोकहा
नीकहातहे ॥ याहीकीसुबेरदुर्योधनदुसासनकूंखंडखंडकिये
होनेऐसीरिसआतहै ॥ पांचादिक्पालजैसेभरतानिबलभयेस्व
रूपदासजाकेह्वोजोविनापक्षपातहे ॥ द्रौपदीकीआपतेंपुकार-
क्यूंनलगीनाथसाधिओयेमेरोतोकरेजोफट्योजातहे ॥ ३६ ॥
उरहीमैंबैठेइसउतरउचारकीनाएसीहीवासमैंबीचमोकोरिस
आइहे ॥ सबहीरसांकोभारदूरकरतव्यहतोतातेंछिमायाचक
कीपुरीलैपचाइहै ॥ द्रौपदीकेकोपहीकीदारुमईआगिताकोच
तुर्दशासंमतकीदाटदैदबाईहै ॥ ताहीछिनमारतोतोचंडालचा
करीहीकोवाहीबीचसेतीकेतीक्षोइनीक्षपाईहे ॥ ३७ ॥ खुलेकेस
रजस्वलासभावीचदुसासनलायोसोपुकाररहीसारेसभाचारी
को ॥ आदिमोकोंहार्योकिधोंआदिआपोहार्योंनृपकर्नेबि-
गारीबातविकरनसुधारीकों ॥ भीमकहेऐंच्योचीरतेईभुजऐचे
जेहेंदिखावैहैजंघासोंदेखेहुतोरडारीको ॥ द्रौपददुलारीखुली
लटेंकरिदहूसारीएकनृपनारीनाअनेकनृपनारीको ॥ ३८ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ गंधारीसुतसुबनबिचजोएकहुबचिजाय ॥ मोर
गदातैमोहितो होहिनरकगतिन्याय ॥ ३९ ॥ सुनीप्रतिज्ञाभीम
की कुरुकुलव्याकुलरूप ॥ गांधारीवहसमयलखी समुझाव
तपतिभूप ॥ ४० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मातसुयोधनकीभरताकूं

द्रौपदीकष्टलख्योसमुझावै ॥ क्यूंघरजायेलराइकै छोकरपा
पिणचोथेमेपड्तिपावै ॥ कौतिकहारि व्है तीजेती हातज्यूं हाय-
क्यूंजीवंतलोकहसावै ॥ याजगवातनीसाचकरीतुमगेहजरे
निजमंगलगावै ॥ ४१ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ गंधारीकहैरीतभ
रतारक्यूंनसोचैमनसुयोधनकरी भीमसेनस्यंधरूपहैं ॥ म
रेहुतेंस्यंहकोस्वभाववेरभावनाहींजातय विख्यातवातउप-
माअनूपहैं ॥ मृत्युगजमांसकीबयारतैंव्हैबायवृद्धी मृत्युसिं
हतेलतेंतावायकोविलूपहै ॥ भूपनकोभूपहैतूंव्हेहैदीनहूंते
दीनपूतकोनिवारेनाहिपस्योमोहकूपहै ॥ ४२ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ ॥ कहिधृतराष्ट्रस्वद्रुपदजा तुममम प्राणसमान ॥ पुत्रव
धुनमेंश्रेष्टहै लेमोपेवरदान ॥ ४३ ॥ ॥ द्रौप० ॥ ॥ मे
रेपांचोपतिनजुत दासभावछुटिजाई ॥ मेरेपतिरथशस्त्रजुत
ममयहदेहुपठाई ॥ बहुरिलेहुवरएकवर लाइकतूंनलरगई
॥ कह्योद्रुपदजाएकवर मेरेसतवरपाय ॥ ४४ ॥ छत्रीएकहैवे
श्यकूं विप्रनकाजअनेक ॥ लेनेदेनेवरससकर तातेलेहूएक
॥ ४५ ॥ तथाऽस्तुकहिकियेविदा भूपपांचहुभ्रात ॥ कही
दुसासनसकुनिदोउ स्वनिसुयोधनबात ॥ ४६ ॥ कारेआहि
पितुतेकही पूंछिचापदियेछोरि ॥ भीमार्जुनदोऊभ्रातमम
वंसकिरस्चहिबहोरी ॥ ४७ ॥ पिताकहीअबकाकरो स्वतक
हियेकउपाय ॥ कोलस्वद्वादसवर्षकरि यकफिरख्यालखिव
लाइ ॥ ४८ ॥ जोहारैसाइराजतजि द्वादशाब्दवनजाई ॥ गु
प्तरहैइकबरषपुनि कोउतेकदालखाई ॥ ४९ ॥ पुनिभुगते
द्वादसवर्ष वनोवासदुखयुक्त ॥ भूपबुलायोधर्मस्वत स्वमी
पुत्रकीउक्ति ॥ ५० ॥ धर्मराजफिरिधर्मजुत उत्तरादियोनजाय
॥ चोहौरिपिताआदेसतें खेल्योराजलगाय ॥ ५१ ॥ जीत्यो

सकुनीकपटजुत कियोधर्मबनंगोन ॥ पंचभ्रातजुतद्रोपदी रहीमातगुरभोन ॥५२॥ पांडुपुत्रबनकोगये कछुदीनबीते आय ॥ विदुरप्रबोधतभ्राततिय विधिविधिविपतबढाय ॥ ॥५३॥ भावीलखिसुनियेप्रथा व्रथासोकत्रबमात ॥ करहि राजसबभूमिको तबसुतसत्रुअजात ॥५४॥ ॥कुंतीक० ॥ ॥कबित्त॥ ॥स्तुतिबंदीजनकीर्तेगानगाइकनकेतेजाग तसोजिन्हेंशिवाजंबुकजगायहैं ॥ मिष १ कडु २ तिक्त ३ लौन ४ रवाटे ५ ओकषाई ६ लारवूंजीमते ७ जिमाइकाचेपाकेफलरवा इहैं ॥ पहरतजिन्हकेंदासनानापटांबरजेकाबांबरचर्माबरअंग लपटाइहैं ॥ क्षुधावानबालसहदेवकूरववाइहैं किनिंद्रासमेंसे ऊकूबिछाईकोसुबाइहैं ॥ ५५॥ जिकुंकेमुरवारबिंदछत्रछाहर हतेसोभ्रातपअपारहीतेंकुमलानेंहोयहैं ॥ पांचपांचरवंडके अवासहिंगलाडूबीचसोवततेतेकंकरनबीचकेंसेसोयहैं ॥कुं तीकहेंधन्यपांडुमाद्रीपरलोकवासी मोहिदुरवभोगनीकूंविप दावियोगहैं ॥ ताहीमेंवडोहैसोचमेरेजोलडेतोबालसहदेव क्षुधासमेंकाकोमुरवजोडहैं ॥ ५६॥ ॥दोहा॥ ॥कैसेंस हहैवनविपति द्रुपदसुतासुकुमार ॥ समदुरवजानतमोरम न किनटिककरौपुकार ॥५७॥ ॥इतिपांडवयशेंदुचं- द्रिकासभापर्वणिपंचममयूरवःसमाप्तः ॥५॥ ॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु.


द्रौ·
युधिष्टिर·
सूर्यपात्र·
दान


श्रीकृष्ण·
राजश्नल प्र·


अर्जुनतप
अश्वशास्त्र


अर्जुन
स्वर्गगमन


यक्षप्रश्न
चार भ्रात


पांडव·
द्रौपदी
ह·
जयद्र·

श्रीगणेशायनमः ॥जनमेजय॥ दोहा॥ कैसेवनकोंगमनकिये
धर्मराजजुतभ्रात॥ कैसेनिकरेविपतादिन गुपतरहेकसतात
॥१॥ ॥वैसंपायनः॥ ॥पद्धरि॥ ॥कुरुराजाविपनदि
सगमनकीन ॥उठचलैगेलपुरजनअधीन॥सबकोंकरिपरमज
समाधान॥ बोहोरायादियेकहिविविधवानी॥ रिछुरहगलछाडे
असंग॥नृपभयोसचिंतादुखीतअंग॥क्यूंवनेंसबनकूंभरनकाज
॥रहिबोवनधनबिनभ्रष्टराज॥ परोहितधौम्यादियसूर्यमंत्र॥त्र
य दिवसभूपसाध्यौस्कतंत्र॥उरस्थलमानबिचनीरआप॥इकपा
यरह्योठायोअपाप॥ दियेदिनमणिस्थालीअक्षयदेव॥सबहिन
कीयातैबनहिसेव॥२॥ ॥दोहा॥ ॥जौलौंद्रुपदकुमारिनहि
भोजनकरैसुभाय॥तौलौंइकयहपात्रतें लारवनदेहुजमाई॥३
॥अरवेपात्रवरदानलै चल्यौंहैतवनभूप॥ दिनदिननूतनहोतहै
वासविहारअनूप॥४॥ विनुअनुचरअनुचरसद्रस चहुधातरु
हरिधाम॥साषाश्रितरवगरावमिस पटतनृपतउतराम॥५॥
छंदपधरी॥ ॥नृपाश्रमारिषनकेरहतवृन्द॥ अतिहोतकथाग
इकअनंद॥ चहुभ्रातसुविचरतदिसाचर ॥द्विजषोषकाजअ
रवेटकार॥लरिवदुष्टजंतुकोंदंडदेत॥ भक्षिजोगिमारिरथडारि
लेत॥कियेभीमकेउकराकसबीनास॥स्नूरहतविपनवासीउदा
स॥पचिआसिषतंडुलअरवेपात्र॥रिरिचपतिजिमायपंचालि
रात्र॥पुनिकरिआपभोजनसुप्रीत॥रहिविपनकछुकदिनयहैरी
त॥सुनिकुरुघूतक्रीडासुभाय॥ वहंविपनबीचश्रीकृष्णआय
॥विश्वासदेरूविपताबढाय॥पुनिचलेधर्मआदेसपाय॥दुर
वासाप्रेरयौआपदेन॥ लरिवसमयसुयोधनधर्मलेन॥अठ्यासी
सहस्त्ररिषिजुक्तआई॥ भोजनविनजास्यौदैसभाई॥द्रौप
दीकीयेभोजनसुदेस॥वहपात्रधस्यौसाहित्यअसेस॥कि

यो समरन द्रौपदी कृष्णाकेर ॥ हरि आये संकट समय हेरि ॥ इ
कसाकपत्र तिहपात्रलीन ॥ करिभक्ष कृष्ण उडकार कीन ॥ तिहु
लोक अस भये समये ताहि ॥ चकि रहे परसपर विप्र चाहि ॥ ६ ॥
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नकुल बुलावकु विप्र सब कहि हरि भोजन
काज ॥ नटे विप्र आसीस दे प्रकट कियो सब व्याज ॥ ७ ॥ धर
मपुत्र तेरो धरम सदा अखंड स्वरूप ॥ खंडन किये चाहत जु
खल ताको घटिहै भूप ॥ ८ ॥ कहि रिषि पीछो गमन किय हरि भ
ये अंतर्धान ॥ रह्यो भूप निज रिषिन जुत सुख मय बंधु समान
॥ ९ ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ षट्वर्ष भये यूं वन वितीत ॥ विजय
तैं युधिष्ठिर कहि स्रुप्रीत ॥ करकु तप पुत्र अब अस्त्र काज ॥ बि
न युद्ध दुष्ट नहि देहि राज ॥ कहि तथा अस्तु नर गमन कीन ॥ इ
कपाइ वर्ष रहित पअधीन ॥ इंद्रादि देव वर दैन आइ ॥ सब तैं जु
अस्त्र लीने स्रुभाइ ॥ इंद्रादि अस्त्र दे गये थान ॥ नर रह्यो गंध
मादन सज्ञान ॥ इक दिवस रुद्र धरि सबर रूप ॥ त्रिय वृंद जुक्त
आये अनूप ॥ शिव कियो एक घाइल वराह ॥ चलायो बाण नर
निकट चाहि ॥ तिह कपट भिल्लु बरज्यो स्रुतंत्र ॥ इहि प्रथम यास
समक्रोड अत्र ॥ कह्यो नाहं गन्यो नर सहित क्रूध ॥ बटि परयो प
रसपर जुध विरूध ॥ स्वय भये उभये अक्षय निषंग ॥ असि धारि
चल्यो सिव पै उमंग ॥ तिल तलं हि छेदि हर खडग ताहि ॥ चक रह्यो कि
रीटी वदन चाहि ॥ जुर परयो भुजन तैं द्वंद्व जुद्ध ॥ कछु च्यंप्यो हर उर
धर अकुद्ध ॥ मूर्छित सु गिरयो तब भूमि माहि ॥ नर कर्यो सु उद्यम
फुर्यो नाहि ॥ चित भयो गई मूर्छा सचेत ॥ हर मूरति रेत मय क-
रि सहेत ॥ चढावै पुष्प नर तोरि तोरि ॥ वह भिल्लु सीस दरसे बहो
रि ॥ पहिचानि रुद्र तब परयो पाय ॥ लीनो कपर्दि निहि उरलगा
य ॥ पाशुपति अस्त्र दीनो सप्रीत ॥ भये अक्षय तून पुनि सत्रु

जीत ॥ पठवायइंद्र नरलेनकाज ॥ मातुलीजुक्तरथहरितबाज ॥
परिक्रमनजुक्तकरिरथप्रवेस ॥ सुरलोकजाइ भेटयौसुरेस ॥
अर्धासनलेबैठयौसुइंद्र ॥ मनविसमयभोलोमससमुनींद्र ॥ ॥
॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ नरदेहजानिनरभ्रमहुनाहि ॥ ममअंस
विष्णुअवतारमाहि ॥ मृतलोकधर्मसुतयेमहंत ॥ विजय-
केकुसलकहियोवृत्तंत ॥ बंधुनजुतचिंतातुरविसेस ॥ अर्जुन
वियोगव्हैहैअदेस ॥ कहिइंद्रइतोरिरवविदाकीन ॥ उतरह्यो
किरीटीपितुअधीन ॥ निजमुरवस्करेसचित्रकेतुनाम ॥ गंधर्व
हिप्रेस्योसुगुनग्राम ॥ अर्जुनहिसिरवावहुजुतअनंद ॥ विधिगा
ननृत्यजुनवाद्यवृंद ॥ कहितथास्तुरहिविजयपास ॥ हितबढयो
सरवापनजुहुलास ॥ सीरवतजुनअस्त्रविद्यासंगीन ॥ प्रतिदि
वसबढतसुतपिताप्रीत ॥ इकदिवसदईअज्ञासुरेस ॥ विच
सिंधुवसतसुररिपुविसेस ॥ विधिवरतेंसुरतेंअजितआहि ॥
तूमनुजरूपकरिनासताहि ॥ मातुलीजुतव्हैसमरथारूढ ॥ नि
रसनुकरहुसुरलोकगूढ ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लैआज्ञासु
रराजकी चल्यौविजयसुरनाय ॥ कवचनिबातरुकालरवंज
इकदिनदीयेमिटाय ॥ ११ ॥ कियेनिष्कंटकअमरपुर करतहि
रनपुरनास ॥ नरभुजपूजेइंद्रप्रिय पुरत्रिहुसुजसप्रकास
॥ १२ ॥ रतनजडितनिजसीसको दियोकिरीटसुरेस ॥ नामकि
रीटीताहितें भयोविरव्यातविसेस ॥ १३ ॥ नरहिअस्त्रवरदा
नजब देनगयोसुरभूप ॥ गंधमादनसुररमनको नाटिकभ
योअनूप ॥ १४ ॥ देरवीथीजबइंद्रनेंअर्जुनकीउतमेरव ॥ द्रष्टि
उरबसीरूपमें जानीप्रीतिविसेष ॥ १५ ॥ कियअाज्ञाचित्रके-
तुकू अर्जुनकेप्रियकाज ॥ अतिसृंगारजुतउरबसी वापेपठ
वहुआज ॥ १६ ॥ कह्योइंद्रतैसेहिकियो सबउरबसीसृं

गार ॥ चलीदेखमाहितभई नरकहासुरपुरनारि ॥ १७ ॥ सुनताहिआगमउरबसी नरसनमुखनियराय ॥ कह्योहुकम-कीजेंकछु ममकुंताधिकमाय ॥ १८ ॥ ॥ उरबसी० ॥ ॥ देख्योतूंमेरीतरफ लोभदृष्टगिरप्रष्ट ॥ इंद्रप्रेरीआइइहां देवभावकरनिष्ट ॥ १९ ॥ नरकोंहमसेवेकहा दिव्यरूपसुरदेह ॥ किहीकारनमाताकही नटेलोआपहीलह ॥ २० ॥ ॥ अर्जुनउ० ॥ रहीपुरूरवाग्रेहतू कियोप्रगटममवंस ॥ फिरपारेचारियाइंद्रकी करतसुमेंतिहिअंस ॥ २१ ॥ तातेमेंतुहिलखतहो औरभावनहिकोय ॥ इतनेहपेंआपदे सिरधरिलेहूंसोय ॥ २२ ॥ ॥ उरबसीवाक्य ॥ ॥ तेजस्वीकोदोषकछुलगतनसुरपुरबीच ॥ मानभंगकीनोजुतुम होहुनपुंसकनीच ॥ २३ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ पठाईसुरेंद्रउरबसीकोनरेंद्रपासकीनोसत्कारदीनोज्वाबबडीरीतसों ॥ इंद्रचितातेंमेंयावसकीकरैयामेरेंकूंतातेंअधिकबातेंदोनोंकीप्रतीतसो ॥ जाकेकाजभूपतिपुरूरवाभयोनिलाजवस्त्रत्याजकोनज्ञानदोख्योगेलप्रीतसों ॥ ताहितेहस्योनमनअर्जुनकस्योनसंगब्रततेनटस्योनत्यूटस्योनआपभीतसों ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चित्रकेतुकहेइंद्रतें निसबीतीज्योंबात ॥ उरलगायनरकोंकह्यो भलीभईयहबात ॥ २५ ॥ वर्षएकजोंलोगुपत भोगहुआपस-धीर ॥ तबदुरावयहस्वांगविन वनतोमुसकलवीर ॥ २६ ॥ अग्निधोत्रभूखनवसन दियेकुटुंबकेकाज ॥ पहुंचायोरथजुक्तनर जहांधर्मकुरुराज ॥ २७ ॥ पांचदिवसनरसुरनकेरह्योंइंद्रआधीन ॥ पांचवरषजोलोधरम सबतीर्थाटनकीन ॥ २८ ॥ देखिअनुजअस्त्रनजुकत बहुहरख्याकुरुवीर ॥ भूपकिरीटीतेंकह्यो अस्त्रदिखावहुधीर ॥ २९ ॥ अस्त्रयादकीने

विजय होनलगेउतपात ॥ धराधूजिउलकापरत नभसुनपान दिखात ॥३०॥ नभवानीभईसुरनकी इहमतकरहुउपाव ॥ वनिहैं जुधतबदेखहे तूंसवअस्त्रप्रभाव ॥३१॥ कोऊदिनवीतेकुबुधिकारि नृपतसुयोधननीच ॥ मंत्रकियोन्वहुदुष्टमिल चलोविपनकेबीच ॥३२॥ कारिमिसजात्राघोसको लेपितुतेंआदेस ॥ चल्योत्रियनजुतकुटिलमति सेन्यालीयविसेस ॥३३॥ पांचभ्रातकूंमारिकें करेंनिकंटकराज ॥ नातोदेखिदिखाइहैं इहकपटमनसाज ॥३४॥ प्रेर्योइंद्रसिषाइके चित्रकेतगंधर्व ॥ करहुक्षेमसुतधर्मके हरहुसुयोधनगर्भ ॥३५॥ ॥कबित्त॥ ॥ घोषजात्राव्याजतेंचंडालचोकरीकोंदलआयोहै युधिष्ठिरकूविभवदिखावेको ॥ दावलगोपांचोंमारिनिस्कंटकराजकरें नातोचलोजरेंपरलोनसोंलगावेको ॥ इंद्रकोपठायोचित्रकेतूतातेंभइभेटकर्नजैसेसूरमतोकीनोभागजावेको ॥ भुजापिटिबांधिदैसुयोधनकोलेकेंचल्योभ्राताजानिकिरीटीकोइंद्रतेंमिलावेको ॥३६॥ ॥ ॥दोहा॥ ॥भगेदूतकुरुसैन्यके कहीजुधिष्ठिरपास ॥ बांधिलियोत्रियजुतसुरन सुतधृतराष्ट्रनिरास ॥३७॥ ॥कबित्त॥ ॥युधिष्ठिरकहेंचारोभ्रातननतें दोरोवेगसुयोधनवंध्योदेखिदेवत्रियहसेंहींगी ॥ चित्रकेतूछोरेंताहिविधितेंछुरायलावो तुह्मेदेखिदेवनकीवाहनीत्रसेहेगी ॥ त्यूंहीकह्योद्रौपदीदुरानीओजिठानीकाजजन्हतेंछुरायलायेकुंताहुलसेहेगी ॥ औगुनपेंगुनकूंसुयोधनमानेंतोहुसुकरपांडुनंदनकीकीर्तिनानसेहैगी ॥३८॥ ॥दोहा॥ ॥तथाजुधिष्ठिरकीछिमा तथाविनोलाखत ॥ ताकूंसबदुखदेतहै सोसबकूंसुखदेत ॥३९॥ ॥भीम० ॥ ॥कबित्त॥ ॥चहेंभुजबंधमणीजटितअमोलजहांतहाँ रसरीकेबंधदेखेंहोरनहारको ॥ चढनसुगंधतेलतहालपटानी

भूरिराजकौंअधारदेरवौभयोनिराधारको ॥ कहैभीमसहैक्यूं
स्रयोधनअसहदुःरवगहैकैसेकंजफूलभूधरकेभारको ॥ दुह
ट्गांधर्वताकेमहानीतवानराजाकीनोवासिऐसीजोग्यनाहींक
रतारकों॥४०॥ ॥दोहा॥ ॥बंछछोरिछुटकायदिय आयो
करनसमीप ॥कर्नकहैगांधर्वतें जीत्योप्रबलमहीप॥४१॥ ॥
स्रयोधन०॥ ॥जोमोमेंबीतीविपत तुमनहिजानतनात॥
औरकहैत्योप्राणल्यूं जाणतसनयहबात॥४२॥जिनकूंदेरिव
दिरवाइवे आयोविपनविहार॥तिनहिछुरायोजीवदे क्यूंस-
हिउपगार॥४३॥दुसासनकूंराज्यदे गजपुरकरहुनिवास
॥तजिहौंप्रानयूंकहिलियो अनसनव्रतसन्यास॥४४॥दैतन
मेल्यौकर्नबिच नरकासुरकोजोर॥ह्वैपरीतसमुझइतिन प्रेर्योग
जपुरओर॥४५॥भीमादिकचहुंभ्रातनैं जीतिदिसाजुचार
॥कर्नअकेलैजीतिसोइ कियोजग्यप्रस्तार॥४६॥काचिचि
त्रसुतअंधके सुभहोयकरनसहांइ॥फटतअन्यपयलूनतें
अर्कफटतरहिजाई॥४७॥पठयेदूतजुनृपनपें करतस्रयो
धनजग्य॥आवहुछत्रीविप्रसब कहाअग्यकहातग्य॥
४८॥पठयदुसासनभीमतें दूसकहैसमझाइ॥जग्यकरतकु
रुराजजित तुमकोपठयबुलाइ॥४९॥ ॥भीम०॥ ॥
कुंडहोइकुरुरवेतजब व्हैहैपश्रुतवभ्रात॥सरवाव्हैहैममगदा
तवआवैंगेतात॥५०॥कियोस्रयोधनजग्यवहु दियेविविध
विधदान॥नीतिजुधिष्ठिरतेंअधिक द्वादसाब्दभइजानि॥५१
॥वडेलोकधर्मज्ञतें विरुधभयेसवरीति॥होनजुधिष्ठिरतेंअ
धिक धरीस्रयोधननीत॥५२॥ ॥छंदपधरी॥ ॥
गयेबंधुपंचकहुंविपनवीच॥नृपसिंधुआयतिहसमयनीच॥
द्रौपदीहरनकीनोजुदुष्ट॥पांचहुवीरसुनिलगेप्रष्ट॥नरहतअ

स्वरथदूरजात॥ भजिचलौपयादोविमदगात॥लिंयपकरिभी
मदियप्रश्नबंध॥मास्योनदुसीलाकेसमंध॥करिअर्धमुंडनछुट
काइदीन॥ इरहेतभयोतपउग्रलीन॥ भवकह्योमागवरदान
भूप॥जयद्रथजुकह्तकारनअनूप॥५३॥ ॥दोहा॥ ॥
पांचहिपांडवएकमें जीतूंयहवरदेहु॥ ॥शिव०॥ ॥अर्जुन
देवनतेंअजयजारिजीतिजसलेहु॥५४॥अर्जुनविनइकदिवस
तूं जीतहिगोचहुभ्रात॥तथाअस्तुकहिग्रहगयो करिऐसोउ-
त्पात॥५५॥ ॥छंदपधरी॥ ॥एकदिवसजुधिष्ठिरबनवि
हार॥कोईकरीविप्रआतुरपुकार॥मृगअरनीहरनजुकस्योंसो
हि॥ताकोंफिरल्यावनजुस्ततोइ॥गइअटकिपूजावतश्रृंगबीच
॥निजभ्रातसहितमृगहतहुनीच॥पंचहुबंधुकीनोप्रयान॥
मृगषोजनपायोश्रमतमान॥भयेअतिअषातुरपंचभ्रात॥
जलकाजभयेयकएकजात॥पीछेनफिरेनृपगयोआप॥चहुं
मृतदेखिउपजोसंताप॥यकलख्योंजक्षठाढोअनूप॥तिनकह्यो
पानजलनकरिभूप॥ममप्रसनउत्तरबिनकरिहिपान॥सुनिकें है
चहुंबंधुनसमान॥नृपकह्योंकरहुकछुप्रश्नआप॥प्रतिउत्तरकरि
हुंगुरुप्रताप॥ ॥दोहा॥ ॥जक्ष०॥ ॥कोनमोदजुतजग
तमें कोआचर्जलखाइ॥कोनपंथवार्तासुका कहिपुनिबंधुजि
वाय॥५६॥ ॥युधिष्ठिर॥ ॥पंचमदिनअथवाछटेसा
कपचतनिजग्रेह॥विनप्रवासविकरजजग मोदजुक्तनरदेह
॥५७॥दिनदिनप्रानीमात्रजे जमकेआलयजात॥थिरता
चाहतपाछले फिरकाअचरजतात॥५८॥वेदत्रिधाशटधा
स्मृती मुनिमतभयेअनेक॥धर्मतत्वअतिगुप्तहै पथसतपुरुष
विवेक॥५९॥मोहकटाहरुअग्निरवि निसदिनइंधनजानि॥का-
लपचावतभूतसब येहवार्तामानि॥६०॥ ॥छंदपधरी॥

तेदयेउतरसबजुक्तनात ॥ तूंकहेइकसोइजियेभ्रात ॥ युधिष्ठि
रकह्योनकुलहिजिवाय ॥ ज्योंमाद्रिवंसनहिनिष्टजाय ॥ कहिज
क्षभीमअर्जुनविसारी ॥ नकुलकुजिवावतकुमतिधारी ॥ जिन
कोप्रभावतिहपुरप्रसिद्ध ॥ जुरिकरिहिपराजयसत्रुजुध ॥ इनदो
उनविवेकोजाचिएक ॥ करिहेजुराजहतिसत्रुकेक ॥ ६१ ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ पृथाबंसमेहूप्रकट चहियेमाद्रीवंस ॥ धर्मविरोध
कवातकूं कहतनमहतप्रसंग ॥ ६२ ॥ जक्षकह्योमेतवपिता
धर्मराजमोहिजानि ॥ होयहिरनअरनीहरी पररवकाजतीहिमा
नि ॥ ६३ ॥ पुन्नलेहुवरदानअब तूंअतिधर्मसधीर ॥ अरनीलेच
हुभ्रातजुत गमनकरहुबरबीर ॥ ६४ ॥ दीजेपितुवरदानमोहि ॥
कठिनबरषयहआहि ॥ प्रगटनव्हेभियबंधुजुत तथाअस्तुक
हिताहि ॥ ६५ ॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकावनपर्वणी
षष्ठममयूखः ॥ ६ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥

॥ अथविराटपर्वप्रारंभः ॥

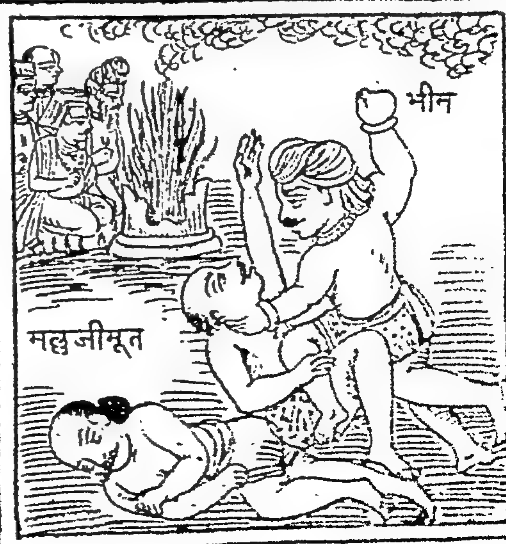



वि॰रा॰
चौपट
पासाकाष्ठ
कंक॰भ
द्रौपदीरुधिर
झेले


उत्तरास्व
यंवर
अभि


भीमसेनः
कीचकबांधवमार.


कीचकबांधव
द्रौ॰
कीचक


भीम
मल्लजीमूत

॥अथविराटइंद्रसेनकृपापात्रतें॥ ॥युधिष्ठिर०॥ ॥दोहा॥
जितपूछेंतितकहहूतुम गयेथेविपनविहार॥ पांचहुद्रुपदकुमारि
तुज बहुरनपाईसार॥१॥ ॥छंदपधरी॥ ॥करविदाइंद्रसे
नादिसाथ॥चहुभ्रातद्रौपदीजुत्तपाथ॥धौम्यकोंसोंपिनिजअ
ग्निहोत्र॥गमनकियेभूपछिपवायगोत्र॥मच्छदेशआइवैराटती
र॥द्रुपदाहिनिभावतचलेवीर॥बिच्छसमीसबनकेसस्त्रबांधि॥मृ
तदेहजुत्तधरिरज्जुसांधि॥भीमबनीसूदभटकंकभूप॥आपतेवि
जयब्रहन्नटास्वरूप॥साल्होत्रिनकुलसहदेवगोप॥सैरंध्रीद्रौपदीर
हितकोप॥अनुक्रमहिकियोनृपपेंप्रवेस॥विनआदरजुतराखेवि
सेस॥सोंपीअर्जुनकोनृत्यसाल॥बहुदासिनजुतनिजसुताबाल॥
उत्तराहिसिखावतनितसंगीत॥वादित्रगानजुतनाट्यरीत॥कछु
दिवसगयेएकविप्रगेह॥उपवीतमहोत्सवभोअछेह॥तहंपाठ्य
कारमल्लादिकेक॥आतिदेसनतेंआयेअनेक॥सबजीतेयकजी-
मूतमल्ल॥यतभीमजुर्‌यो तिनतेंअचल्ल॥सोइभीमपटकिमार्‌यो
सक्रुद्ध॥जगकूंभोविस्मयदेखिजुद्ध॥२॥ ॥दोहा॥ ॥साल
भद्रनृपमच्छको कीचकमुख्यप्रधान॥सैरंध्रीकोरूपलखि भो
कामांधअयान॥रतिजाचीकेउचारतिहि कह्योद्रौपदीताहि
॥मैगरीबविपदासहित करत्तदुष्टताकाहि॥४॥फिरिमेरेभ
रतारहैं पांचप्रबलगंधर्व॥गुप्तरहेतेजानिहैं हतहिवंस
तवसर्व॥५॥ ॥कीचक०॥ ॥दसहज्जारगजबलसहित
तेकहाकरिहैंमोर॥पूर्वत्रियामेरीसकल करिहोंदासीतोर
॥६॥कियोअनादरद्रौपदी गयोसुदेष्णागेह॥भगिनीप्रतअ
तिनीचमति कारनप्रगट्योयेह॥७॥कोईकारनसैरंध्रिकुं पठ
यहुमेरेपास॥याकेबिनप्रापतभये॥ममतनव्हैहैनास॥८॥
कहसुदेष्णाभ्राततें करहुगोठतुमप्रात॥मदिराळेवेमेलिहूं से

रंध्रीकोतात ॥ ९ ॥ तथास्तुकहिगीठकी कियोशीघ्रसामा
न ॥ प्रातभयेसैरंध्रिप्रत राज्ञीकहतबखान ॥ १० ॥ ममहितम
दिरालेनकूं जाहूप्रातममगेह ॥ ॥ द्रौपदीवाक्य ॥ ॥ बहु
दासीपठवहुअवर मोहिउपजतसंदेह ॥ ११ ॥ तोरभ्रातअति
दुष्टमति करहिमोरअपमान ॥ करतसमधिकुलकोकदन य
हधोकवनसयान ॥ १२ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ नाहिंकरहि
तोरअपमानभ्रात ॥ मैपठईयहकारनविख्यात ॥ द्रौपदीच
लीलेस्करापात्र ॥ करिअर्जसुर्जतैंध्यानमात्र ॥ विभाकरदीयो
राकसपठाय ॥ रह्योगुप्तद्रौपदीहितसहाय ॥ कीचकपैंजार्ची
स्कराजाय ॥ यहकह्योदेखियइबीचआय ॥ तबकाजरतनवि
धविधतयार ॥ मोहिदासजानिकरिअंगिकार ॥ धरिसुरापात्र
फिरिचलीवाम ॥ कुटिलभोगेलचितविकलकाम ॥ वस्त्रकोहा
थडास्योउचार ॥ सोफट्योगिर्योभजिचलीनार ॥ भटकंककजुक्त
जहांमच्छभूप ॥ कारिंरहेअक्षअक्षक्रीडाअनूप ॥ तिनलखत-
लातकोकरिप्रहार ॥ चाल्योफिरघरकूंदुराचार ॥ भीमकूलख्योप्र
लयाग्निरूप ॥ अग्रजअंगुष्टचाप्योअनूप ॥ अबरहीमासइकअ
वधिओर ॥ थिररहहुपराक्रमनहिंनठोर ॥ नृपमच्छतेद्रुपदाक
हतनेष्ट ॥ तबराजबीचतियराजश्रेष्ठ ॥ बिपतादिनजितबतनिरप
राध ॥ तुहिंलखतलातमारीअसाध ॥ ममरक्षकपांचाहिपतीमू
ढ ॥ गंधर्वरहेक्यूंहोईगूढ ॥ भटकंककह्योकरअक्षडारि ॥
त्रियकरतहैंअंतहपुरपुकारि ॥ रक्षकनकहतदुरवादन्याय ॥
करिहैतवरक्षासमयपाय ॥ विनखानपानसोइदिनविहाय ॥ पु
निऊठिअर्धनिसबरवतपाय ॥ रसोईयानचलिढरतनैन ॥ दुखक
रनप्रगटढिगभीमसेन ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बीचमहाचि
सनीदविन भीमसेनजुतक्रोध ॥ मनहुगुफालयसिंहकूं सिं

हनकरतप्रबोध ॥१४॥ ॥छंदपधरी॥ ॥कहेंभीमअर्ध निसकवनकाज॥आईतूंनिंद्रासमयआज॥कहिश्रियाजुधि ष्ठिरपतियपाय॥क्यूंरुभहोइनिरसोचकाय॥सबराजतज्यों तिहकुमतिचाल॥मदमस्तकरीज्यूंफूलमाल॥१५॥ ॥क वित्त॥ ॥सहस्त्रअठ्यासीस्वर्णपात्रमेंजिमावतसोयुधिष्ठिर - औरकेअधीनअन्नपावेंहे॥अर्जुनत्रिलोककोजीतेयाबेरवबनि ताकेनाटिकसदनबीचबनितानचावेंहे॥राजातूंबकासूरहिडं बकोकरेयावधपाचिकविराटकोव्हेरसोईपचावेंहे॥माद्रीकेसु जसकारदोनूंहीस्वरूपमणिएकअश्वबीचएकगोधनमेंधावेंहे ॥१६॥जाकेसीसरसोवतहोइंद्रकोकिरीटतापेगुहीवेंनीजारही पचाऊंदुरवकोनसो॥गांजीवकीमुरवीतेंअंकितजेपूंचेभयेचूरि नतेंढकितकूंभातेभानुभोनसो॥जुधरंगभूमिबीचदेतहोअरीन शिक्षानृत्यरंगभूमिमेसिरवावेदासीजोनसो॥आसमुद्रपृथ्वीस कीपाटरानीदासीहूंमेतापेंदुषकीचककोदांधेपरलोनसो॥१७॥ कवचकीठाहरपेंकेचुकीकसीहेंदेखितलआनटाहरपेंचूरिनकेवृंद हें॥कृपाकोपपुंजकेनिवासदोऊनेननमेंकजराभरानोऐसोमहासो फफंदहें॥सिरआनतहांसीसफूलदोनूंहाथनतेंगांजीवकीघोषना मृदंगनकेछंदहें॥कोनदेसकोनकालकोनदुरवकापेकहुंकेसेनि द्रालगेमोकूंकोनसोअनंदहें॥१८॥ऐसीराजराणीमेरीचाहती कृपाकीदीठताकीकृपादीठकाजसादीव्हेरह्योकरों॥चंदनघ सितफालेफूटकेकठोरकरभयेऐसेदेखिदुरवमनमेंदह्योकरों॥ एतेहीपेंकीचकलग्योहेंमेरीगेलताकीलातकोप्रहारसभादेरव तसह्योकरों॥रोयलपटायगरेद्रोपदीपुकारकरेकष्टभीमके ष्याधिनाकोनेपंकह्योकरों॥१९॥ ॥दोहा॥ ॥निजप दद्रोपदीअंजकमलि निजअंशुनकूंरोकि॥श्रियाहिवृकोदरला

यउर करतनियमजितसोक ॥२०॥ ॥सवैय्या॥ ॥मेरोतो
कोपसमुद्रअसाध्यअगस्तयुधिष्ठिरकोपमेपीगयो ॥ वाडवको
पमेंभ्रातकीनेमसरस्वतीकुंडलतातेंदबिगयो ॥ दाहविराटमें
कोपमेंकोलगुपालतेज्वालकौंपुंजपचीगयो ॥ काहितेंभ्रातलौं-
जीहैंसबांधवजाहितेंआजिलोंकीचकजीगयो ॥२१॥ ॥दोहा॥
॥ ॥कहहुभ्रातवादुष्टसूं करिनृतसालसंकेत ॥ मैंबैठहुंताभव
नमें प्रथमहिमारनहेत ॥२२॥ कह्योभीमत्यूंहीकह्यौ भ्रातद्रौ
पदीताही ॥ निसएहूंनृतग्रहगुपत देखतर्थीतवचाहि ॥२३॥
सुनिहुलस्योनृपमच्छुकी कीचकदुष्टप्रधान ॥ नवनवपटभूखन
धरत दिनभोबरखसमान ॥ २४ ॥ सैरंध्रीकेलोभानस नृत
ग्रहगयोसहेट ॥ पूरबकर्मप्रभावतें भईभीमतेंभेट ॥२५॥ ॥
॥सवैय्या॥ ॥भूखनअंबरतेंभयोभूषित सांतिकीवेरज्यूंदी
पककीदूति ॥ चाहतहानिजअंगनतेंजुआलिंगनतेंवपुभारिदि
येभ्रति ॥ आजलौंथंबनबीचअधोमुखभीमकीभेटतेंऐसीब
नीरति ॥ बीरकीबामकूंदुष्टकटाछतेंदेखियोदेखकेकीचककी
गति ॥ ॥दोहा॥ ॥भीमउठाइपछारिभुव कियोगांठभचकाय
॥ कीचककेलागाकठिन भूषनदूषनभाय ॥२६॥ इंद्रदसानन
बालिग्रह भयोकछूनहिक्षेम ॥ सद्यफल्योकीचकसदन पर
दाराकोप्रेम ॥ २७ ॥ ॥छंदपधरी॥ ॥भयोभ्रातएकस
तपांचओरकीचककेबंधवअतिकठोर ॥ मृतभ्रातदेखिद्रौ
पदकुमार ॥ लइपकरिजरावहिंभ्रातलार ॥ द्रौपदाकरीकरुन
पुकार ॥ सुनिभीमरसोईकेअगार ॥ आकारढहावतचल्योधी
र ॥ विनुपंथगुप्तकाजकेवीर ॥ सबकीचककोकरिकुलसंहार
॥ द्रुपदाछुडायआयोउदार ॥ इहवातनजानिपुरुषआर ॥ गंधर्व
हिजोनप्रबलघोर ॥ द्रौपदीकहूंजोपरेदीठ ॥ प्रगटदेखहेजेपुरुषपी

ठ॥ ॥दोहा॥ ॥प्रेरिसुयोधनदूतकेउ प्रगटकर्नसुतधर्म॥
दसदिसतेंपीछेफिरे कहूनपायोमर्म॥२८॥सभाबीचभयेएकठे
सुनिदूतनकेबैन॥गंगासुतकहिसबनतें तर्कबांधियहसेन॥
॥२९॥ ॥छप्पै॥ ॥जहांयुधिष्ठिरहोइतहांदुर्भिक्षनपावै॥
जहांयुधिष्ठिरहोइसप्तईतीनलखावै॥जहांयुधिष्ठिरहोईवर
नन्हुपरमधरमपर॥जहांयुधिष्ठिरहोयसुतरुरवटरितुफूल-
फर॥जितहोययुधिष्ठिरनृपततितनजग्यमहोत्सवहोत॥नितक-
हिभीष्मलछवरततसकलमछदेसवैराटिजित॥३०॥ ॥दोहा॥
दससहसगजबलप्रबल कीचकमच्छप्रधान॥मल्लजीमूतादिक
हतक भीमविनाकोआन॥३१॥ ॥कर्न०॥ ॥देससुसर्माको
लियो कीचकछीनत्रिवगर्त॥चलहुकरेसोग्रहणतित सजहुसे-
न्यअवर्त॥३२॥अर्जुनसुनिगोग्रहनकूं पोरखकरहिप्रकास॥
मानिसुयोधनकर्नमत चालियोसहितउलास॥३३॥ ॥छंदपध
री॥ ॥सप्तमीप्रथमसेन्यक्रूर॥सुसर्माकियेगोग्रहणसूर॥सु
निकूकच्यौवैराटभूप॥जुधिष्ठिरभ्रातत्रयजुतअनूप॥भोउ
भयसैन्यसंग्रामघोर॥जीत्योजुसुसरमाप्रबलजोर॥मच्छकोप
करिचल्योमूढ॥भीमतेजुधिष्ठिरकह्योगूढ॥निकारीविपतिजाके
निवास॥ताकूंछुडाहुकरिसत्रुनास॥जोभई प्रथमनृपमच्छरीत॥
जूंकरीभीमजामातुरीती॥सिरकाटनलागोभीमसेन॥निवार्यौ
जुधिष्ठरसदयनेन॥लखिजीवदानकोसुजसलेहु॥दासोस्मिक
हतछुटकायदेहु॥चितकुरुकुलकोजामातुचाहि॥तजिजियकिय
मुंडनअर्धताहि॥करिविजयकियोउतहिमुकाम॥अतिदईमच्छ
भीमहिइनाम॥अष्टमीसुयोधनभूपआय॥पुनिकीयेउतरगोग्र
हणपाय॥पुरवीचकरीग्वालनपुकार॥कहुवचनकहेउत्तरकुमार॥
मोकूंकाअर्जुनगिन्योंगूर॥सुयाधनहरेघनरथारूढ॥काकहूसा

रथीमोरनाहिं ॥ मरिगयोप्रथमसोइजुमाहिं ॥ यहबचनद्रोपदीसु
निअकाज ॥ कुंवरतेकह्योबृहनटाकाज ॥ यहहोयसारथीतोरआ
ज ॥ निरकुरुकहाजीतहिंदेवराज ॥ यउसारथिजुतअर्जुनउदार
॥ इंद्रादिसमरजीतेअपार ॥ ३४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुंवरकहे
सुनबृहन्नटा तूंरथहांकहिमोहिं ॥ एंहूंसत्रुनजीतअब देहुंबहु
धनतोहिं ॥ ३५ ॥ रथारूढव्हैकेकटे कवचकसेदोऊवीर ॥ संभी
जायभाथाअषय धनुगांडीवलियधीर ॥ ३६ ॥ लखिआवतसा
मीपरथ कहतपरस्परत्याहिं ॥ आजसुयोधनसेन्यपे एकरथी-
कोआहिं ॥ ३७ ॥ ॥सुयो०॥ ॥कालित्तुसमांधनहस्यो अप
नहस्योधनआज ॥ भयसंजुतमछभूपने कन्यादइनृपकाज ॥
॥ ३८ ॥ ॥ द्रोन० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ मामातेरोकहेकन्या
भेजीहेविराटभेटताविवाहहूकेगारीगीतजेसुनोहीगे ॥ रोवेंअ-
स्वध्वजागिरेसरूजेरविसलपरेबोयेबीजताकेफलमिलकेलुनोहीं
गे ॥ रियानाकिरीटीव्हैहेधूजतनिहारोधराकपिकीगरजसुनेंसिरकूं
धुनोहीगे ॥ मानलनबातचारुदिसाउतपातहोतजातवेदगांजिवते
गातकुंभुनोहीगे ॥ ३९ ॥ कहेद्रोनआवताहिंदेखकेअकेलोरथऊ-
र्ध्वध्वजदंडताकोतेजअद्भुतहे ॥ चिक्करतवाहनचलाकीजुतचूर
भईचारूभटचारुसुतअपनेकुसूतहे ॥ धूकलहेधरनीओरधूंध
रोदिखावतनभहोतअनमित्तधीरत्यागेरिनधूतहे ॥ गांजीवसरास
नधस्योहेसत्रुनासनकोत्रासनतनकपाकसासनकोपूतहे ॥ ४० ॥
॥ कर्न० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ काउतपातबतावतहे हमएकहुवात
नजीवपैंआनंत ॥ द्रोनतेंकर्नकहे करकोपज्यूंबीदकोजीमतवीरच
खानत ॥ एककहाकपिकेतअनेकपितामहसेनकूं कानपिछानत ॥
जोहमतेंदुरजोधनतेंनहिंषोडसभागपराक्रमजान्नत ॥ ४१ ॥ का-
कुसमांडकोबालकहे फलतर्जनीदेखतहीगिरिजेहें ॥ ज्यूंजुजुवा

कुदिखायडरावतबालकूंचूंकहासेंनत्रसेहैं ॥ नामसुनाइकेंपा
रथकोतुमदेतहोक्लीबताकोउनपैहैं ॥ द्रोनवाएककिरीटीकेगोन
तेंकोनजोपीटबतायपलैहैं ॥ ४२ ॥ द्रोनकोपुत्रकहेस्कनसूतंकोप
वतगालवजाएवडाई ॥ एकगाजीवतइंद्रकोरुद्रकोतोसिलियेज
वकरतिगाई ॥ कालखंजादिकवर्मनिबातरुगंधर्वजापेअजैतुम
पाई ॥ द्रौपदीप्रापतदेखिहैआपनेंएकलेकोनविजेउपजाई ॥ ४३
॥ यहुतेंक्षत्रियसूरसबैद्विजवाक्यतेसूरसदेवलखावत ॥ भीम
महाबलतैंधनुतेंकपिकेतकीशूरतादेवकुगावत ॥ हैछलसूरयहै
सकुनीरुसुयोधनकूंहठसूरबतावत ॥ नीततेसूरयुधिष्ठिरहेतु
मकर्नमनोरथशूरकहावत ॥ ४४ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ उत्तरगोग्र-
हणपुकारसुनिग्वालनतेंउतरकवरबोल्योकोपबेसुमारमें ॥ मेहूं-
काकिरीटीराजखोसिकेनिकारदीनोसारथीजोहोयतोदिखाऊंगो
प्रहारमे ॥ देखिव्योमचुंबितध्वजाहूकुरुवंसनकीखेदकंपत्रंशुते
भयेहैताहीवारमें ॥ सबकोंदिखानोतहांपदजोनिपूंसककोस्वांगमा
त्रअर्जुनमेंलछतेकुमारमें ॥ ४५ ॥ देखिचमूभाग्योबालपकस्यो
विलोमदोरिकह्योराजपुत्रमेरोप्रानउडिजावेगो ॥ जानदेहुतोकूंर
थवाजकरीद्रव्यदेहुंजुद्धतोंकरेगोमेरोजीवअकुलावेगो ॥ पार्थक-
ह्योअर्जुनहुंगायेरहिभाजेमातिअद्भुतबनेगोजुद्धसीघ्रविजेपावेगो
॥ अर्जुनहोआपतोसुनावोदसनामअर्थयथायोगसुनतेविस्वास
हद्यआवेगो ॥ ४६ ॥ सत्रुजीनवेतेंविजेशक्रकृत्यअर्जुनमेंइंद्रियो
कीदताकेंकिरीटीकहायोहूं ॥ फालगुनउत्तराअरुपुरुवाकेमध्य
जन्मकृष्णपंडुरूपाजिष्णुवासकोजायोहूं ॥ जुद्धमेंगिलानका
मकरुनाबिभत्सुताते स्वेतअस्वहीनेस्वेतबाहपदपायोहूं ॥ स
व्यसाचिवामपानिहैसहायतातेंजानिधनंजयरसाकोद्रव्यस-
चंजीतिलायोहूं ॥ ४७ ॥ ॥ उत्तर० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अर्जु

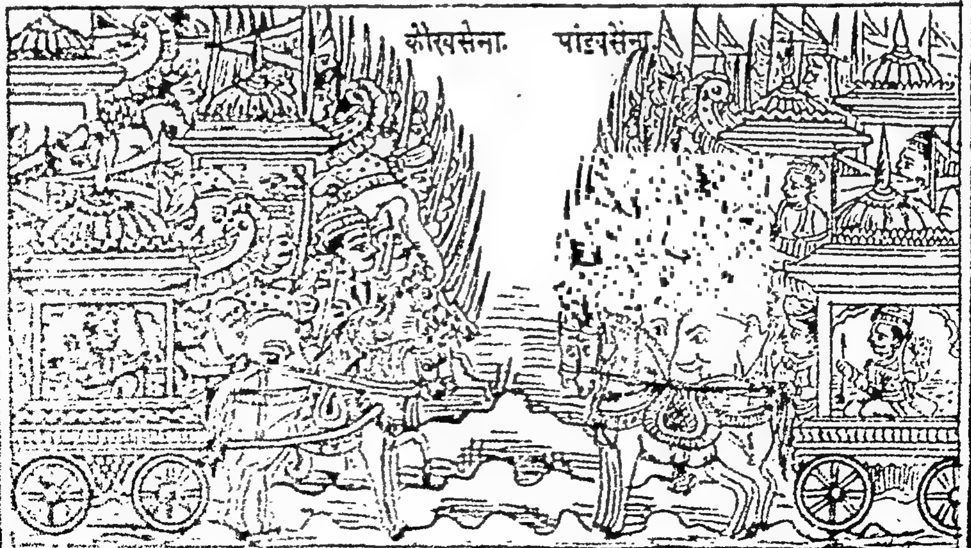
नह्रोतोभ्रातचहु कितहैद्रुपदकुमार॥ ॥अर्जुन॥ ॥भूप
जुधिष्टिरकंकभट बल्लवभीमविचारि॥४८॥ ग्रंथिकारयह
विदनकुल तंत्रिपालसहदेव॥हैसैरंध्रीद्रौपदी तजिविषादल
हिभेव॥४९॥ होहुकवरममसारथी जुधसमयकोलेरवि॥जा
निअतिरथीब्रहनटा वीरनाट्यअबदेखि॥५०॥जानिवाद्यतल
आनमम पनचकरहिंपुनिगान॥नृत्यकरहिममउभयकर लेहि
रीऊरिपुप्रान॥५१॥ ॥छंदपधरी॥ ॥करीसमीपरिक्र
मयहृणकीन॥तेहूधनुसबानकरउभयलीन॥गोध्वजासींघ
ळछनविलाय॥भोचितितवानरविकटभाय॥गंधर्वअस्त्रवि
द्याप्रभाव॥स्वेतास्वभयोरथमनस्वभाव॥करिकोपधनुषटंका
रकीन॥भोशब्दभूमिआकाशलीन॥बहुरिदियदेवदत्तहिब
जाय॥कियेहाकध्वजाकपिमहाकाय॥त्यूंघडधडाटरथने
मिघोर॥चकिरहेसत्रुनहिंसुनतओर॥यहरूपसैन्यपरिक्रमा
दीन॥कहिसब्दभीषमप्रतिनयमकीन॥५२॥ ॥दोहा॥ ॥
क्षत्रधर्मप्रतिकूल तुमसानुकूलमैंतात॥मैंछुडातेगोग्रहन तुम
अकरसतैंनलजात॥५३॥ तातैंक्हैंहैं विजयमम व्है हे अजयतु
मार॥मैंअर्जुनमुखकाकहूं सकुनहिंकहतपुकार॥५४॥ ॥
छंदपधरी॥ ॥कहियतोजुधप्रारंभकीन॥मिलिअमरव्योमदे
खतअधीन॥गांजीवबानधनअभ्रछाय॥पवनजनबीचनहिग
वनपाय॥इतिप्रथमभूपरितुतपअभीत॥पुनिकर्नअनुजसंग्रा
मजीत॥द्रोनीकोकाट्योध्वजादंड॥पुनिधनुषकवचकियखंड
खंड॥गुरुपुत्रजानिनहिंकरीघात॥करनहिंभगायद्वैवेरतात॥
भीसमकेभालधिचमारिबान॥मूर्छितकरीदीनोअसहमान॥त्रि
हुलोकविजेतातरुनअंग॥गांडीवधनुषअक्षयनिषंग॥अर्जु
नसोईरोक्योरिनअजेय॥द्रोनकेकरतवषानदेव॥सोइद्रो

नकृपाचारयसधीर ॥ दोऊजीतिछुडाईगायवीर ॥ दुरजोधन कोएकबानमारि ॥ दियेछत्ररुउष्णिषभूमिडारि ॥ कृपद्रोनकर्न अरुभीष्मवान ॥ पार्थकैलगेकेंउभेदित्रान ॥ इकचल्यौपार्थकोभोहुन्मस्त्र ॥ सबगिरेवीरगिरपरेसस्त्र ॥ भीस्मकी ध्वजाचित्तरुधिर अंक ॥ नरआयहाथलेषेनिसंक ॥ लेजातसबनकी छीनलाज ॥ करितजेजियतमृतदयाकाज ॥ पुरपठयदूतगउवनछुडाय ॥ सबकवरविजयकहियोसुनाय ॥ नृपकुंनिजपुरतिकुदिव सआय ॥ सुनिपुत्रविजयन्वासररचाय ॥ कंकभटताहि प्रतिषेध कीन ॥ नलभयोदुखितयहविसनलीन ॥ कुरुभूपजुधिष्ठिरद्यूत काज ॥ कितगयोनजानैभ्रष्टराज ॥ मंगलकेसमयनरमहुआप ॥ गर्विष्टभूपदहुजयप्रताप ॥ नहिगन्यो वचनरवेल्यौनिसंक ॥ क्रीडतहिकह्यौभटसुनहुकंक ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहेविराटभटकंकतें अहोउतरसमराथ ॥ जीत्योदेवनतेंअजय कुरुवंसनकोसाथ ॥ ५७ ॥ कंककहेनृपवृहनटा जाकेसारथीसोय ॥ सोजीतेसुरराजको तोउकाअचरजहोय ॥ ५८ ॥ सुनतस्तुतीममपुत्रकी रोधतहेहठठानि ॥ करतस्तुतीवासंडकी रेद्विजतूंअज्ञान ॥ ५९ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ भीस्मद्रोनकर्नद्रौनीकुरुगजदसासनजिनको बिसेसतेजदेवनतेंमान्यो है ॥ उनहीकेप्रतापहातपांडवबिलायगये इंद्रादिकआसनतें जनमबरवान्योहै ॥ तेउजीतिएकरथी गायजेछुरायलायोउतरकोपौरसमैआजिदिनजान्योहै ॥ धन्यमाता पितादेसबंसजो सपुत्रऐसोबालवयहूमैंअदभूतजसआन्योहै ॥ ६० ॥ ॥ कंकउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाकेऐसेसारथी सोक्यूंबालकमित्र ॥ तीनलोककूंजीतिलै तोपुनिकहाविचित्र ॥ ६१ ॥ सुनतरीसकरीसीसपैं पासाकयामहार ॥ चलिजुधिष्ठिर-

भालतें सीघ्ररुधिरकीधार ॥ ६२ ॥ स्वर्णपात्रमेंद्रौपदी ऐलि
लियोरतसोई ॥ मतिभीमार्जुनदेखिले निजतेंबचेनकोई ॥
॥ ६३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ नृपकन्यासैन्यवेस्यापठाय ॥ -
लायेसुउतरकुंवरहिबधाय ॥ कहिप्रथमहिनरतिहिकवरकाज
॥ पांडवनप्रगटमतकरहुआज ॥ प्रतिहारकह्योआवतकुमा
र ॥ भटकंकगुप्तबरज्योंसभारि ॥ ६४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रा
जकुंवरकुंआनदे ब्रहन्नटहिमतिआनि ॥ लखैरुधिरममभाल-
कौ करैंसबनकीहानि ॥ ६५ ॥ मिल्योआयपितुतेंकवर लख्यो
जुधिष्ठिरभाल ॥ कह्योमच्छतेंकिनकर्‌यो ऐसोकरमचंडाल ॥
॥ ६६ ॥ ॥ मच्छ० ॥ ॥ करतप्रसंसातोरसुत षंढप्रसंसतमू
ढ ॥ तातेंअक्षप्रहारमें कियोसीघ्रहठरूढ ॥ ६७ ॥ ॥ उतर०
॥ ॥ द्विजपेघातअनर्थयह क्षमाकरावहुयाहि ॥ देवदूतजी
त्योक्षमर प्रातदिखोहूंताहि ॥ ६८ ॥ प्रातसभाकीनीकवर पां
डवभूषितआय ॥ श्रेष्ठासनपेंधर्मसुत प्रथमहिबैठ्योजाय ॥
॥ ६९ ॥ देखिदूरतेंमच्छनृप कह्योकंकभटमूढ ॥ मुहलाग्योतातेंभ
यो ममआसनआरूढ ॥ ७० ॥ ॥ अर्जुन ॥ ॥ पाकेंअनु
चरहैसदा इंद्रासनअनुरूप ॥ तेरोतुच्छासनकहा येहैयुधि-
ष्ठिरभूप ॥ ७१ ॥ कहीसकलउतरकवर निजपितुतेंसमझाय ॥
गुप्तरहेजबतेकथा जुधपरिजंतजिताय ॥ ७२ ॥ ॥ मच्छ० ॥
॥ ॥ मोरसुताअतिगुननजुत करैग्रहनसुतइंद्र ॥ तबउरनहो
हूंकछुक तुमतेंधर्मनरेंद्र ॥ ७३ ॥ ॥ अर्जुन० ॥ ॥ मेरेतोवह
पुत्रिसम गुरुकरिजानतमोहि ॥ कलंकरहेमिश्रितकहे जोऐसी
गतहोहि ॥ ७४ ॥ कह्योजुधिष्ठिरविजयकों पुत्रसुभद्रानंद ॥ अ
भिमनकूंदीजेसुता करहुबाहसुखकंद ॥ ७५ ॥ तथाअस्तुक
ढिन्सूतवें दूतनदियेपठाय ॥ संबंधिदोऊनृपनके मिलेकृष्ण

त्यूंआय ॥ ७६॥ भयोज्याहआनंदतें कीयेकरिरथवाज ॥ पठये
सुयोधनदूतयत कियेप्रगटतिहकाज ॥ ७७ ॥ ॥जुधिष्ठिर०
॥ ॥गयेंसमदिसआधिकदिन आधिकमाससतेंआज ॥ त्यूंही
भीसमद्रोनकहि नामानीकुरुराज ॥ ७८ ॥ ॥इतिश्रीपांडव
यशेंदुचंद्रिका विराटपर्वणिसप्तममयूखः ॥ ७ ॥ ॥ ६९ ॥





श्रीगणेशायनमः॥ ॥छंदपधरी॥ ॥वैराटसुताउत्तराविवाह॥अभिमनकियकरग्रहजुतउत्साह॥मातविचसभासबनृपपधारि॥वसुदेवतनयकोसुनिविचारि॥शिष्टासनबैठेनृपसधीर॥वैराटद्रुपदवपुत्रदुवीर॥तिनअग्रजुधिष्ठिरवासुदेव॥भीमादिकतिनकेअग्रभेव॥श्रीकृष्णकहतभूपनसुनाय॥लघुअद्भुसुनहुसबचितलगाय॥संपूर्णनीतविद्यासुजाण॥सबकहहुमैंत्र बुधिबलसमान॥कीनोदुरयोधननृपअकाज॥रचिकपटद्यूतहरिलयोराज॥नृपधर्मधर्मपथसावधान॥पनकियोजथाकीनोप्रमान॥त्रयोदसवर्षवनगुप्तवास॥तिनमेंसहिलीनीविविधत्रास॥अबचहतनृपतअपनोविभाग॥तथापथधर्मविनभयेत्याग॥सगपनअपनेइतउनसमान॥दोउओरकुसलचाहतनिदान॥यहसुनितबोलिसेसावतार॥सतकारिअनुजवचबहुप्रकार॥पठवहुदूतकुलबुधिपुनीत॥राजाअचवसुप्रतिविनयरीत॥सबकहेबातविनतीसुनाय॥सुयोधनआदिसबकोसुहाय॥युधिष्ठिरद्यूतविचप्रथमहाय॥सहिलयोआजलौंकष्टसोय॥अबपिता-आयवहपुत्रआहि॥ताकोंविभागदीजेसुताहि॥नाहिंदोषआपकूंहैनृपाल॥चलभयोयुधिष्ठिरद्यूतचाल॥यूंजोरबतायेविनअराध॥अन्यथासुयोधनहैअसाध्य॥यहसुनतबचनयुयुधानआप॥परजल्योहुतासनहृतप्रताप॥बलिभद्रसुनहुममसत्यबात॥तुमकहेबचननिंदतनतात॥वचनएवलीजस्कननवीर॥उनकूंमैंनिंदतहुअधीर॥यकबृछसारवताकीअनेक॥यकवाऊस्कमनफलजुत्तएक॥वासियेकउदरयेकसूरवीर॥यकमहाकुमतिकातरअधीर॥ऐसोनयुधिष्ठिरबीचआहि॥ततमनअपलछनकहेताहि॥अपलछनसुयोधनकेअपार॥बैठेस्कआपतिनकूंबिसारि॥यनकोजोदूषनकहतआप॥पापिष्टसरयाताकोप्र

ताप ॥ नमावत धर्मकोकोननीत ॥ पगपरहिसुयोधनसहित
प्रीत ॥ नहिंनमैंदुष्टमदअंधनीच ॥ तोबसावहुसीध्रजमलोक
बीच ॥ धनंजयसात्तिकीधनुषधारि ॥ महिकरैंनिकंटकदुष्टमा-
रि ॥ तिहूलोकजीतिबोसुलभतात ॥ बपुरोदुरयोधनकितिकबा
त ॥ परिहैकियुधिष्ठिरनृपतिपाय ॥ कैभक्षाहैगृधश्रृगालकाय
॥ यहसुनतबोलिन्नृपद्रुपदयेह ॥ सात्तकीकहहुतुमनिःसंदेह ॥ न
मनताकियेमदअंधनीच ॥ अलगेनहिअधिकनिजसेन्यबीच ॥
जडकाष्टतयेविननमतनाहिं ॥ महासारदंडपरूबृंदमाहि ॥ करि
बोतथापिसामादिकाज ॥ रहेप्रष्णजथाविधधर्मराज ॥ निज
वंसपुरोहितकूंबुलाय ॥ सबकहीरीलताकूंसुनाय ॥ जगचतुर
रवानिचतुरासिलक्ष ॥ तिनमेंबरजंगमहेप्रतक्ष ॥ बुधिजीविति
नहिमेंअतिविसेष ॥ नरदेहरतिनहिमेंअधिकदेरिव ॥ तिनमेंहि
जजन्महैश्रेष्ठतात ॥ वेदाध्ययनीतिनसेंविरव्यात ॥ तिनमेंबरक
हियतकरमकार ॥ तिनमेंअद्वैतवादीविचार ॥ तिनसेंअध्ययनी-
आपतात ॥ वेताकुरुपांडवकेरिबात ॥ विद्यातपकुलबयचतुरव्र
द्ध ॥ सबनातिनिपुणअरुमंत्रसिद्ध ॥ पधारहुशीघ्रकुरुब्रद्धपा-
स ॥ सुनावहुमिष्टअरुकटुकभास ॥ जदुवंसवृद्धतुमकूंनदो
ष ॥ फिरदूतजानिकरिहेनरोष ॥ पुनिभीष्मदोनविदुरहिप्रधा
न ॥ मिलकरहिआसकेवचनमान ॥ दुसासनसकुनीकर्नदुष्ट ॥
सुनिवचनअनादरकरहिसुष्ट ॥ इतनेंहमपठवहिदूतओर ॥ नि
मंत्रणकाजनृपठोरठोर ॥ सुयोधनकरहिफूटसंधान ॥ जुध
साजकरहिहमसमयजानि ॥ करताजुधसेन्यासानकूल ॥ महा
कोपसत्यसाहित्यमूल ॥ तीनहुवातजाकैतयार ॥ महिराजकर
हिसोइसत्रुमार ॥ श्रीकृष्णकहैतुमगुरुसमान ॥ आज्ञावहिह
मसमसिष्यआन ॥ करहोविचारजोइआपकाज ॥ सबकरहि

मानहमजुतसमाज ॥ हमहूंअबद्वारापुरीजात ॥ पुरोहितनागपुरकोप्रभात ॥ मानैनसुयोधनसंधिमूढ ॥ हमकूंबुलाइपठवहुअगूढ ॥ कहिकृष्णद्वारिकागमनकीन ॥ द्रुपदकूंनिमंत्रणभारदीन ॥ पुरोहितकियोगजपुरप्रवेस ॥ सतकारकियोबुधिचरवविसेस ॥ वैचित्रवीर्यपरिषदवनाय ॥ विप्रकौलीयोसादरबुलाय ॥ यतकुसलपूंछिउतकीसुनाय ॥ पूसकुलबयसममानपाय ॥ कहनपुनिबचनआरंभकीन ॥ द्रुपदादिनृपनसंदेसदीन ॥ भीमकोदियोतुमबिषअभीत ॥ लाखयहरच्योअतिसयअनीत ॥ रचिकपटद्यूततुमहस्योराज ॥ लीनीत्रयकीबिवसभालाज ॥ अपराधसबनिकोटकनएहु ॥ दुहुलोकसधैअधराजदेहु ॥ इतपरलोभवसिनटहुआप ॥ पुनिलखिहोगांजीवकोप्रताप ॥ ऐसादेवनरहैअनेक ॥ अर्जुनतेंजीतेंसमरएक ॥ अर्जुनरुभीमतेंजुरयोआन ॥ कोऊबच्योसुन्योअबलोनकान ॥ जिनसुनतकरनकहिवचनजोर ॥ वनद्वादशअब्दनिवसबहोर ॥ परिहदुरयोधननृपनपाय ॥ लेहैंसुतिन्हैछातियनलगाय ॥ कियप्रगटत्रयोदशवर्षमांहि ॥ न्यायविनयामयकमिलैनाहि ॥ बोलतभीसार्जुनभयवताहि ॥ ऐसेनफूंकतेंगिरउडाय ॥ गांगेयकहतप्रज्ञागंभीर ॥ विसरेबहुदिनकीबातवीर ॥ द्रौपदीस्वयंवरघोषजात ॥ तुमकरोयादमतिकरोतात ॥ माजनोंरवोयबांधवमराय ॥ जुतसैन्यविजयतेंअजयपाय ॥ वैराटअबहिबीतीविसारि ॥ महिपनाचिंचबोलतगालमारि ॥ ऐसेकोसिखावतसुनिअसाध ॥ विहुलोककरतनबपुत्रबाध ॥ करैजोइपुत्रतूंगिनतकाज ॥ रहिहैंधृतराष्ट्रनवंसराज ॥ पितामहवचनकूंकरिप्रमान ॥ नृपहटकिकरननिजमुखनिदान ॥ १ ॥ ॥ सुयोधनः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

तुमबहुस्यौजीहोबोहोत द्रोणादिकगांगेय ॥ भूमिनदेहोंपैंडभर ठाढेंकरनअजेय ॥ २ ॥ ॥ भीष्मः ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥

मेरोतोहैंवांछितसोचीथोपनकुरुक्षेत्रसस्वतीर्थमृत्युगुनीकीर-तिकूंगुनिहे ॥ तेरेलोभमोहमानमत्सरकपटाईताकेबीजबहेफलनीकीविधिलुनिहै ॥ यादकरिमेरेद्रोनविदुरादिकहूकेबोलगांजीवकोतेजदेखिपीछेंसीसधुनीहै ॥ मेरेबेननीतकेनिचासनाहिस्फनिहैंतोकरनादिकवीरकोविनासवेगिस्कनिहै ॥ ३ ॥ ॥ कर्न० ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जोलौंसेनापतिरहे यहेभीष्मदुरबाद ॥ तोलौंसस्त्रनकरयहु कर्नजुक्तअल्हाद ॥ ४ ॥ जादिनगंगासुतमरहि टरहिपरस्परबाद ॥ तादिनपांडुनमारिनृप हरिहूंतीरविरवाद ॥ ५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पुरोहितबिदाकीनोसप्रीत ॥ राजनतेंजाविधबनतरीत ॥ तुमपीछेंइपठवहुसीघ्रतात ॥ विधिसुनिहैंसंजयकहहिवात ॥ उपप्लव्यआय नृपकेअगार ॥ सबकहेपुरोहितसमाचार ॥ गयोअर्जुननूतनवासुदेव ॥ उतदुरयोधनआयीअजेव ॥ पुरिबिचाकियोदोउसंगप्रवेस ॥ कुरुराज्यउतेंइतगुडाकेस ॥ पोढततहांरुकमणिकांतपाय ॥ वहसमयवीरदोउनिकटआय ॥ यकऊर्ध्वबैठयकअधोभाग ॥ अभिमानीयकयकसहितराग ॥ वंदीजनबोलेविमलबानि ॥ गायकमिलिभैरवकियोगान ॥ वहसमयजागश्रीकृष्णआप ॥ मिसभयोप्रथमपारथमिलाप ॥ सुयोधनकहतहमप्रथमआय ॥ निमंत्रणकाजक्वैजैसहाय ॥ संबंधसरवाधनहैसमान ॥ दोउतरफआपजानतनिदान ॥ ६ ॥ ॥ श्रीकृष्ण० ॥ ॥ इकलेहुमोहिविनुसस्त्रएक ॥ यकलेहुशस्त्रजुतबलअनेक ॥ लियेरथ-सुयोधनप्रीतलाय ॥ सस्त्रविन कृष्णअर्जुनसहाय ॥ ससमिलिअक्षोहिनिइतसुभाय ॥ एकादशगजपुरमिलिआय ॥ संजयनृपभेज्योसावधान ॥ जुधिष्ठिरकीयोहितपूज्यजान ॥ करिकुशलप्रश्ननृपकीसुनाय ॥ पुनिकहनलगेसतकारपाय ॥ आप

कुयुद्धकरवोनआज॥भिक्षान्नश्रेष्ठनहिश्रेष्ठराज॥गुरुजनको
कुलकोकरिसँघार॥तुमसेनहिंवांछितराजभार॥सबगुरुजन
करिवोचहतसंधि॥माननतनसुयोधननृपमदंध॥यहसुनतकृष्ण
करिकोपआप॥पुनिकहतदूतसोजुतप्रताप॥नहिंदेतग्रामयक
सहितनीत॥फिरभीष्मगावतकोनरीत॥कहिनितमंगावतथि
नहिभीष॥सुयोधनदुष्टकोक्यूंनसीष॥देतहोभयेअसमर्थदी
न॥नहिकारायहबिचकरतलीन॥दिनपांचसाततितरह्योदूत॥
सबकहिसंदेसकियविदास्तूत॥६॥ ॥दोहा॥ ॥उतविराटसों
आयके संजयपरमसयान॥मतिअचक्षुनृपतेंमिल्यो लियआ
यसप्रतिथान॥७॥श्रमजुतपथरथरवेदतें अबमैंनिजग्रहजात
॥पांडुनकेसंदेससब कहहुंसभाविचप्रात॥८॥धिकनृपतेरीबु
धिकूं त्यागेबिनअपराध॥पांडुपुत्रनिजपुत्रको गिनतअसाध-
हिसाध॥९॥गोसंजयस्वस्थाननिशि नृपबुलायलघुभ्रात॥
कह्योसुनावहुनीतकूं निद्रालगतनतात॥१०॥दैंअबलंबनमोहि
कूं गोसंजयनिजगेह॥कहिहैसंदेसोकहा उपजतभयसंदेह॥
॥११॥ विदुर॥ परत्रियरतपरद्रव्यहर तिनाहिप्रजागरहोय
॥आपअबलरिपुप्रबलतें करैबैरपुनिसोय॥१२॥इतेकहा
चितदोषतें बंधनहोमहाराज॥निद्रालागतनआपको इहै
कौनगतिआज॥१३॥इकतेंदोयबिचारकरि जीतिचारतें
तीन॥पांचरोकिषटजानिकरि साततजेसुरवलीन॥१४॥
॥ ॥कबित्त॥ ॥एकबुधिव्रतहितेंकारजअकारजकों
नीकेकैविचारसत्रुमित्रउदासीनकों॥कोप्याशामलीभ्यांदाम-
भीतेभेदहीनदंडचारतेंयारीतजीतेपूर्वकहेतीनकों॥पापइं
द्रीवेगरोकिसंधिविग्रहादिषटजानससविष्णतजेऔरसंगहीं
नकों॥दूत१ सुरा२ मृगया३ त्री४ तंद्रा ५ छल६ क्रूरताई

७ दोनूलोकत्रष्टजानिसातकेअधीनकों ॥१५॥ ॥दोहा ॥ ॥जादिनविद्याधर्मको यसलोकाभनहोइ ॥विदुरकहैंधृतराष्ट्रतें व्यंथकालहैसोय ॥१६॥उत्पातविद्यान्यायधन करकुअमरतनमान॥षरचहुआतुरहोंथमनु कालयहैकचआनि ॥१७॥मनसावाचाकर्मना राजनीतिकिरीति ॥विदुरकहैधृतराष्ट्रतें सुनहुलायपरतीत ॥१८॥ ॥मनसोदाहरन ॥ ॥ ॥कवित्त ॥ ॥केतिकउपत्त मेरेरवरच कितोकआहिलेतो पुन्यदानकेतोकीरत्नकोदानहै ॥केतीचढीप्यादीसेनकेतेसत्रुकेते मित्रकेसेंदेसकेसोकालवेभवविधानहै ॥कोनस्थामरवोरकोहरामरवोरमेरेपासकौनकृपापात्रकौनसाधोरनस्यानहै ॥जहांतहांजबेतबेंनृपतिविचारयाकरें विदुरबखानेराजनीतिकोविधानहै ॥१९॥ ॥दोहा॥ ॥ तीनकुरापेद्रष्टमें तीननदिगरन्देत ॥तीनपिछानेविमलमति सबकोवसकरिलेत ॥२०॥ ॥वाचाउदाहरन॥ ॥सत्यऔरउपगारमय मिष्टवचनअविरुद्ध ॥भूपदासहरिभक्तिजुत सोइवाणीहैसद्ध ॥२१॥ ॥करमना०॥ ॥सत्यसोचसमदमदया विद्यासकुलतादान ॥जगवल्लभतासूरता पाचतदसपुन्यवान ॥२२॥ छिमामानुषीविपतिमें देवापदिसंतोष॥ औगुनतिनमेंएकनृप गिनतअसत्तकसदोष ॥२३॥ ध्रुनितेंयुधिष्ठिरमें दोनूदृष्टांत घटावेहै सर्वचर्मआछन्नभुव जाकेपदपदत्रान ॥आतपत्रजिहिंसीसपर नभआछिन्नवितान॥ ॥कवित्त॥ ॥पुत्रत्रियाकाजधनरक्षानीकेंकीजतुहै पुत्रत्रियारक्षासोहिआत्माकेकाजहै ॥पुत्रत्रियानासतहीआपकोंबचायलीजेपुत्रादिककेरहेनअगकोडलाजहै ॥द्रव्यजातांरारवेकुलकुलजातांरारवेजीवजीवजातांरारिवलेजेजाकोनामलाजहै

॥ लाजगयेगईकीर्ति२गयेगयोमानमानगयेजीवतहीमृत्युकोसमाजहै॥२३॥सोनसभाजामेंकोऊब्रधकोप्रवेसनाहिसोनब्रधहोयसमेंपायनीतिबोलेना॥सोननीतजामेंकुललोकबेदकीनरीतसोनरीतजामेंसाचऊटनीकेंतोलेना॥सोनतोलिवोहेजामेंपक्षपातबोलेंछलस्वारथविचारजेसीहोइतेसीखोलेना॥सोईभूमिपालएतेदोषबिनबानीसुनिताकोंअंगीकारकरेइतेउतेडोलेना॥२४॥ ॥दोहा॥ ॥कारागृहदेपुत्रकोधर्मपुत्रकोराज॥टरेंअजागरआपको कुलकोव्हेंनअकाज॥ ॥२५॥त्यागएकहितग्रामके ग्रामत्यागहितदेस॥देसत्यागीहितप्रानके बानीविदुषबिसेस॥२६॥बिदुरकहततूसत्यअब समुदरीनसमझाय॥जथाभविष्यव्हेहेतथा पुत्रनत्यागयोजाय॥२७॥भीष्मद्रोणकर्नादिसब सतपुत्रनजुतभूप॥मिलेसभाबिचप्रातभये बाल्हिकआदिअनूप॥२८॥बोलपठायोदूतसोई संजयतिनढिगआई॥भीमकिरीटीकेवचन सबकूंकहतसुनाय॥२९॥ ॥कवित्त॥ ॥भीमसेनकह्योसूतकहियोसुयोधनतेंजेतेशत्रुतोसेतेलेकेतेमारिडारेहैं॥द्रौपदीकेकुससभावनकेविराटहूकेकेसेसहेजातधर्मराजकाजधारेहें॥युधिष्ठिरसामकूतेंमांगेंबिनाजुद्धकियेदेन्यकानपंचग्रामहमनाविचारेहें॥मानलेनवारेनाहिंआनलेनवारेहमदानलेनवारेनहिंप्रानलेनवारेहें॥३०॥ ॥दोहा॥ ॥हिडंबजदासुरबकअसुर जरासंधपुनिजान॥कीचकादिबलकुबुधितें सबभयेतोरसमान॥३१॥ ॥कबित्त॥ ॥द्यूतक्रीडाहीमेंकालक्रीडासीदिखायदेतोअग्रजकोधर्मराषवेकानाहिमारेहें॥लाखाग्रहबनकेविराटद्रौपदीकेकुसऐसेदुखभीमनिसद्योसनाविसारेहें॥करियेविलोमबासतिहारोजुधिष्ठि

रकोप्रानररचेन्चहेतोनिदानतोकोप्यारेहे ॥ कुंबिलेनवारेहेसदै वदानभिक्षाहमसीवलेनवारेनाहींजीवलेनवारेहे ॥ ३२ ॥ कुटु मत्रियाकीलीनीलाजओरराजसाजपाजीहेस्वभावताकेएही घाततताजीहे ॥ हमतोचंडालतोकोंकेदतेंछुरायलीनोअग्रजकी आज्ञाक्षत्रधर्महितेंराजीहे ॥ तोकूंतोंभयोत्रिदोषराजसेन्यवेभ वकोऐसोरोगकाटिवकूंकिरीटीइलाजीहें ॥ स्थाननछुडावेसबका ननपठावेनाहिंवाननकेपासेअबप्राननकीबाजीहें ॥ ३३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ देटंकारगांजीवकूं कहेवचनफिरपाथ ॥ इंद्रअंसनि रखेदसकु भोपूरितइकसात ॥ ३४ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ तेरोबंधु दुहितेरोमातुलत्योसूतपुत्रचंडालचोकरीज्यूंहीओरमिलेसारेहें ॥ धर्मराजलोकबीचधर्मराजयादकीनेधर्मराजकोपभरेलोचनउ- घारेहें ॥ ब्रह्मह्कुकेरुद्रहूकेसरनबचोगेनाहिगांजिवकुंधारिकेकि- रीटीयूंबकारेहें ॥ ढालकर्नवारेहमरब्यालकर्नवारे नाहिंसालक र्नवारेहमकालकर्नवारेहें ॥ ३५ ॥ ॥ छप्पे ॥ ॥ जबहिभीम रनजुरहिप्राननिहबंधुनहरता ॥ जबहिभीमरनजुरहिकरीसेना क्षयकरता ॥ जबहिभीमरनजुरहित्रसहिबलभजहिजितहितित ॥ जबहिभीमरनजुरहिकहहिसबसरनलहहिकित ॥ रनजुरहि भीमदुरजयदुसहसमऊकष्टपरिहेसबहि ॥ मदभ्रष्टदुष्टधृतरा ष्ट्रसुततपिहेदुरयोधनतबहि ॥ ३६ ॥ जबहिसातकीजुरहिकठिन गतसत्रुनिकंदन ॥ जबहिअभिमनजुरहि पांडसुभद्राकुलनंदन ॥ जबहिसिखंडीजुरहि भीष्मकेमर्म विदारहि ॥ धृष्टद्युम्नरिनजुर हिप्रबलभटद्रोनप्रहारहि ॥ सुसर्मासकुनीकेप्रानहरजुरहिमाद्री कसुतजबहि ॥ मतिभ्रष्टदुष्टधृतराष्ट्रसुततपिहेदुरजोधनतब हि ॥ ३७ ॥ स्वेतअस्वरथजुरहिध्वजावातात्मजगर्जहिदेवदत्तगंभ जीवघोसगनसत्रुनतरजहि ॥ वातवेगविहिरथहिकृष्णसंगरविन

प्रेरहि ॥ कहांजाइ काकरहिसूरमिलिइतउतहेरहि ॥ गनबानछुट
हिगांजीवतेंजीवस्रमितहारिहैंजबहि ॥ मतिभ्रष्टदुष्टधृतराष्ट्रसुत
तपिहैदुरजोधनतबहि ॥ ३८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहतसुयोधन
मोरतें देवहुसमरथनाहि ॥ जुरनजुध्यविचनरनतें कहुंडरउ
पजेकांहि ॥ ३९ ॥ जोलौंसिरधरपैरहे तोलौंमिलेनक्ष्यार ॥ जब
हीशिरधरथेरहे तबसबलैहिसभार ॥ ४० ॥ ॥ धृतराष्ट्र ॥
॥ भौगांधारीतोरसुत करतभरतकुलनास ॥ गुरुजनकीसी
खनागिनत हैनितकुमतिहुलास ॥ ४१ ॥ गांडिवजुतप्रतिकूल
ह्वे खांडवदियोजराय ॥ सानुकूलपांडवसकल सुरस्रारिदि
येमिटाय ॥ ४२ ॥ सहस्रार्जुनपांचसत छोरतइकछुनवान
॥ सोइहै भुजतेंपांडुसुत कोतिहपुरुषसमान ॥ ४३ ॥ ॥
गांधारी ॥ ॥ प्रत्यक्षअंधमातापिता भोसुतहमकुंदेख ॥ पु
त्रसोककोदुसहदुख जीवमात्रविचलेख ॥ ४४ ॥ ॥ सुयोधन
॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ अहोमहाकष्टधृतराष्ट्रहूंकहतऐसेव्हैहै
वंसनष्टयासमर्थताकाभ्रष्टहै ॥ प्रष्टहैसदेवराधापुत्रतेंग
रिष्टहूमैजातेकोऊसूरवीरज्येष्टनाकनिष्टहै ॥ कर्नमामादुः
सासनइष्टहैहमारेतेऊसत्रुनकोंमारिकेअभीतभयेतिष्टहै ॥
औरनकीवानीकदुनेकनसुहानिमोहिवानीतीनहुकीतीनकाल
हीमेंमिष्टहै ॥ ४५ ॥ ॥ नैकहूंमानीनाहिनृप संजयजुतयसी
ख ॥ भावीनासकुलनृपनकी परीसबनकूंदीख ॥ ४६ ॥ ॥
इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकाउद्योगपर्वणीअष्टममयूखः ॥ ८ ॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु.

श्रीरस्तु

अथ उद्योगपर्वणि

उत्तरार्ध नवममयूखप्रारंभः


विराटरूप.
तप लोक
मह लोक
इंद्रादिदेव कोस्थान
आकाश
स्वर्ग
भूलोक
अर्जुन
तलातल
महातल
रसातल

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सतगयेबहुदिनभये पीछेनाहिंसंदेस ॥ तृतियवसीठीकृष्णातुम गजपुरकरहुप्रवेस ॥ १ ॥ मातपिताअधअंधमम सोइमोहिसोकअसाध्य ॥ तीजेउमानेनाहितो कामेरोअपराध ॥ २ ॥ कहेयुधिष्ठरकृष्णातें करियोसामउपाय ॥ कुलविनासकोदासकें अंकलगैंनहिंआय ॥ ३ ॥ त्यूंहिवृकोदरनेंकह्यो यूंमृदुबोलहुआय ॥ संधिकरैमदअंधनृप लगैंनकुलबधपाप ॥ ४ ॥ असेइअर्जुननकुल-केवचनसुनेयदुवीर ॥ कहिसहदेवरुसातकी जुध्धथपहुरनधीर ॥ ५ ॥ हरतजुगलपद्मासतें जुगलकुचनपरनीर ॥ कहतद्रोपदीकृष्णातें धिकूपांडुनकीधीर ॥ ६ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सेचकमृदुललंबेवारकौंसुगंधसीच्योंवासपानलेकैंजुराकृष्णाकोबतायोहै ॥ याकूंजिनहाथनतेंऐच्योतेछिदेनजोलौंतोलोंद्रोपदीकोकोपनेकनसिरायोहे ॥ पुत्रवधूभीषमअचक्षकीकहाउनाहींजिनकेसमीपसभावीचदुखपायोहे ॥ गांजीवकेगदाकेधरैयाकूंधिकारजोपें एतेहीपैसंधिकोउपायमनभायोहे ॥ ७ ॥ बंधुधृष्टद्युम्नपिताद्रोपदस्वयंभुवीमेंरवसुराभोपांडुपांडुपुत्रभरताहे ॥ ताकोभयोहालसभावीचजूकंगालकोह्लेतापें भीमसेनहुकेसंधिकोविचारहे ॥ रह्योपांचांगंगापुत्रद्रोनहूकेकाल-रूपऔरकुरुवंसिनकेकरतासंधारहे ॥ मेरोपितामेरोबंधुमेरेपुत्रमहावीरसकभद्राकोनंदएतेजुध्धकूतयारहे ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अतिसीतलतनइंदुकी होतग्रहनबहुवेर ॥ उग्रतेजरविकोउसमय होतनतदपिअंधेर ॥ ९ ॥ निजपीतांबरपोंछिकरि अंसुद्रोपदीकेर ॥ कहतकृष्णातिहवेरपुनि अंसुजुक्तमुरघहेरि ॥ १० ॥ ज्यूंतवसोकनमिटतहे स्त्रनिनृपद्रुपदकुमारि ॥ त्यूंनिमग्नमणंतिलो व्हेहेंकेऊनृपनारि ॥ ११ ॥ योकहिकीनोग-

मनपुनि कृष्णनागपुरओर ॥ मग्भ भयोधृतराष्ट्रसुनि विदुरहि-
कह्तवह्होर ॥ १२ ॥ करिहोंआतिथिकृष्णको विदुरसकनहुममबा
त ॥ विनाप्रसवसलदासिका करीअष्टरथसात ॥ १३ ॥ देहूंअष्ट
दससहस उत्तमआजिनदुसाल ॥ चीनदेसकेऊएपिट हैसहस्र
तिहकाल ॥ १४ ॥ दुःसासनकेमहलजे षटरितुसुखदस्वरूप ॥ त
हंडेरापुनिअवरहू देहूंरतनअनूप ॥ १५ ॥ अष्टगुनोसबसाथकों
खानपानसुखदेन ॥ विनदुरयोधनजायहै सनमुखतिनकोलेन
॥ १६ ॥ ॥ विदुर० ॥ ॥ आपबुद्धिवयवृद्धहे करतलरकई
बात ॥ अर्जुनप्यारोप्रानतें तजेकृष्णक्योंतात ॥ १७ ॥ सर्वराजके
लोभतें होयनतेरेकृष्ण ॥ अर्धराज्यदियेधर्मकों क्षत्रिहरिकु-
लप्रश्न ॥ १८ ॥ पापधुवावेअर्धविन विनजलकुंभनआन ॥ ग्रह
नकरेंसतकारनहि कृष्णअभक्षसमान ॥ १९ ॥ विदुरकह्योंत्यूं-
हीकृष्ण पूजाग्रहणनकीन ॥ रातविदुरहुकैरहे तोकेइभोजनली
न ॥ २० ॥ विदुरकहेचाहियेनइत तबआगमव्रजराज ॥ दुष्टसुयो
धननादरत करतसुकाजअकाज ॥ २१ ॥ अपनोकहेसुतुमकही
जथाविदुरथीमंत ॥ इनतेंमोकूंनेकभय समझुअतिमतिसंत ॥ २२
॥ प्रातसभाविचनृपतसब आयेपुनिऋषिराय ॥ त्यूंआगमभो
कृष्णकूं सबतेंआदरपाय ॥ २३ ॥ कृष्णकहेधृतराष्ट्रसुनि नक
रिभूपकुलनष्ट ॥ दुष्टमतिसोइहोतहे गिनेदिननमेंभ्रष्ट ॥ २४
॥ देखियेयुधिष्ठिरकीछमा तबसुकृतकोअपराध ॥ विगरिसुधरेंध
र्मकौ अबकुराजदेआध ॥ २५ ॥ ॥ सुयोधन ॥ ॥ विद्याध
नकुलविभवकौ दानसूरताजोर ॥ मेरेसोउनकेकहां छमतत
नहिदुखघोर ॥ २६ ॥ ॥ कृष्ण० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ वंस
तेंनाहिंमहाननतानाहेनमहानतालाखनग्रंथपढेते ॥ उमरतेंनम
हाननताहेनमहानताकोटिकद्रव्यबढेते ॥ दानतेंनाहिमहानता

हैन महानतासूरताजुत्थचढेते ॥ जोमगधर्मधनंजयकोसुम हानताताभगबीचकढेते ॥२७॥ ॥कबित्त॥ ॥सुयोध नकहेपिताश्रौरहूसभासदकूंबातैयोगुवालकीभुवालकेसेमानो हो ॥ एहोस्यामद्रोणादिकसबहिंश्रमाएश्राय इनकेभरोंसेक- हाएकुचित्तआनोहो ॥स्वीअग्रदबेंजेतीभूमिकोनदेनकहेक नोदिकवारकुकोमतनापिछानीहो ॥गोरसकीजानोकृष्णतोके सेंबसीठीकरोगोरसकीजानोहोकेगोरसकीजानोहो ॥२८॥ कृ ष्णकहेसुयोधनमानतनमेरीतातेंभईपरतीतभीमवांछितको पावेगो ॥अजसनिहारोत्यूंहीसुजसयुधिष्ठिरकोरहिहेअखंडखं डपेडमेकहावेगो ॥आयरंगभूमेमोकूंनाहिंदिषायएसोजाकि ओटजायनिजप्रानतूंबचावेगो ॥जावेगोसमूलवर्गभीमकीगदा तेंधुनिविजेधारिमारिबिजेचिनयबजावेगो ॥२९॥ ॥दोहा ॥ ॥अहोसुयोधनअहरनिस सेवतहठहिसदीव॥तजिरनकूंजे हैंतथा जेहेभूमिरुजीव॥३०॥ ॥कबित्त॥ ॥जादोनको मानमारिकिरीटीसुभद्रालेगोतुमनेनिहारयोतेंसेंमेतोनानि होरिहों ॥ वैरबांधिकरेंप्रीतराजनातकीनरीतसत्रुसैन्यनाव सिंधुआहवमेंवोरिहों ॥ मेरीयागदातेंजमराजलोकवृद्धिपेहे भीमादिकसूरनकेकंधनकोंतोरिहों ॥ छोरिहोंनटेकएककाहि येअनेकमेरोनामरनछोरनाहिंकेसेरनछोरिहों ॥३१॥ ॥ कृष्ण०॥ ॥आनथानहाटककोकोमलस्वभावसदाअग्नि नीरफेटतहाकठिनमहानहे ॥ आनधातुआनथानकठिनम हानहेपेनीरसोरयंत्रतहांसबहीकीहानीहे ॥ सात्त्ववान्धर्म आनपांडुपुत्रकोमलहेयुद्धकेप्रयान इंद्ररुद्रकेप्रमानहे ॥ आनधातुकेसमानजानितेरेबंधुत्यूंहीमानआनव्हेहेमानि विनानदानहें॥ ३२॥ कहेकुरुवीरप्रष्णीवीरतेंकहोहोतुम

देवअंसपंडुनतेंजीतिवेकोलागना ॥ धर्मराजवायुइंद्रअ-
श्विनीकुमार पांचुहोतअवतारततोहोतोराजत्यागना ॥ व्हेहे
होनहाररराजकरिहे भरतवसीजीवकोरुजीवकाकोमेरेअनु
रागना ॥ नरकेसंघारव्हेहे नरकेजुरेतेतोह्व घरकेबिभागव्हेहे
घरकेबिभागना ॥ ३३ ॥ जीवजीवकातेंमानप्यारोमोकूं वासु
देवजेतेदेहधारीतेतेकालकौआहारहें ॥ भीष्मकरनद्रोनीद्रो
नमद्रपतिदूसासनसबैसत्रुसैन्यकोसंघारकरतारहें ॥ हारिहै
तोआपतेंनव्हेहेउपहास मेरोयाहीतेंनओरकछुचितकोबि-
चारहे ॥ योतोहैजस्योंआहारलोकपरलोकहीकेगदाकेप्रहार
हीतेसुखकेविहारहे ॥ ३४ ॥ ॥ धृतरा० ॥ ॥ भीमभीम
वातइंधनंजयसोगांजीवअषयतोनइंधनकोटारहे ॥ कर्नादि
कजरिहेउरवरिहेदुसासनादियुधिष्ठिर छमासीलमईदाबि
मारिहे ॥ जलहेनकुलसहदेवव्योममंडलहेनावपंथकोनतोकु
पारिजोउतारिहे ॥ पांचमहातत्वजेसे पांचोभ्राततेज पुंजछे
देवासुदेवमेरोमूलछेदिडारिहे ॥ ३५ ॥ फेरिजदुराजकुरुराज
समझावेकाजकहतसमाजबीचहितकीसुवानीहे ॥ मेरेक
हिवेकोसुनिलीजेनीकेश्रोत्रदेकेपंडुनकोदेवोभागनीत-
कीनिसानीहे ॥ नातोसबछिनहूकेछत्रिनकोंव्हेहेनासहोन
हारहोनीसोतोजाहरहीजानीहे ॥ एकघरहानीदूजीधनहुकी
हानिजानिमहाप्रानहानिएकहानिकीनहानिहे ॥ ३६ ॥ सभा
सदभीष्मसेंद्रोनकृपाचार्यजसेंभूपधृतराष्ट्रजसेंविदुरनिहा
रिये ॥ पांतीदांरसीतलसुभावहेयुधिष्ठिरसोंपांचग्रामभांगे
संतोषकोविचारिये ॥ मोसोहेवसीठीसमझायवेकूंकृष्णक
हेचाहतहूंजेसेतेसेभूसंधारटारिये ॥ एतेहिपेमेरोकह्योवायु
केवधूरेपेह्योव्हेहेभावीचह्योताहिकेसेकेनिवारिये ॥ ३७ ॥

॥ ॥दोहा॥ ॥कैदकर्‍योचहैंकृष्णकों धर्‍यौचंडाल
नघाट॥डर्‍योंसुयोधनदेखिहरि धर्‍यौरूपवैराट॥३८॥
कह्योंसुयोधनकृष्णकों गन्योनआगममर्न॥कृष्णचलेन्नृप
सीखले गोपह्नचावनकर्न॥३९॥ ॥कृष्ण०॥ ॥तूंक्षेत्रज
गुरुपाडुसुत होकुद्विरदपुरनाथ॥परैजुधिष्ठिरतोरपग तज
हुसुयोधनसाथ॥४०॥ ॥कर्नब०॥ ॥कहोआपजैसेहि
करों निरलोभीसुतधर्म॥तजूंसुयोधनरनसमय कहाबनें
एहकर्म॥४१॥ खुल्योंमिल्योंक्षत्रीनको दुर्लभस्वर्गकोंद्वार
॥फिरंहारसधिकपाटदे मतरोकहुयहवार॥४२॥ काहिइ
तनीपीछोफिर्‍यो करतसदननितनेम॥प्रथाआयताहीसम
य दियेअसीसजुतक्षेम॥४३॥कुंताजाच्योंकर्नकों तूंमम
पुत्रप्रधान॥पांचअनुजजुतकरहुसुत राजनागपुरथान॥४३
॥मातकरनइकछत्रविन कियोंआजलौंराज॥कियेजज्ञदा
नादिपुनि व्याहमहोछवराज॥४५॥नृपतसुयोधनप्रीततें
ताहितजोंक्यूंआज॥मातागांधारीपिता धृतराष्ट्रमहाराज
॥४६॥ तजैंसुयोधनकूनतो पांचपुत्रदेमोहि॥नैनतूंतबबसि
परे तिनहितजाचततोहि॥४७॥ हतूंविजयकूंवसिपरें तबसु
तवनहौबहोर॥हतौंकिरीटीकरनकूं तोउरहेपांचहुओर॥४८
॥हतनापुरतेंआयके कृष्णकहतजुतरोस॥तीनवसीठीकैचु
की अबतुमकोनहिदोष॥४९॥अंधपुत्रमतिअंधनृप दैन
हि पैंडप्रमान॥जुरहिभीमअर्जुनजबहि देहिभूमिअरुमान
॥५०॥ ॥कबित्त॥ ॥कृष्णकोंकहावडुष्टमान्योनासु
योधननेंक्षत्रीकुलनासकाजग्रहकेअदिनकूं॥किरीटीकोंजे
ठीएसेबोलिउठ्यो ठोकिभुजाकारेहुगदातेंसीघ्रअरिकेकद
नकूं॥बडेभूपनकेहियेहहरायदेऊंमालमहरायदेंहुपंचहिव-

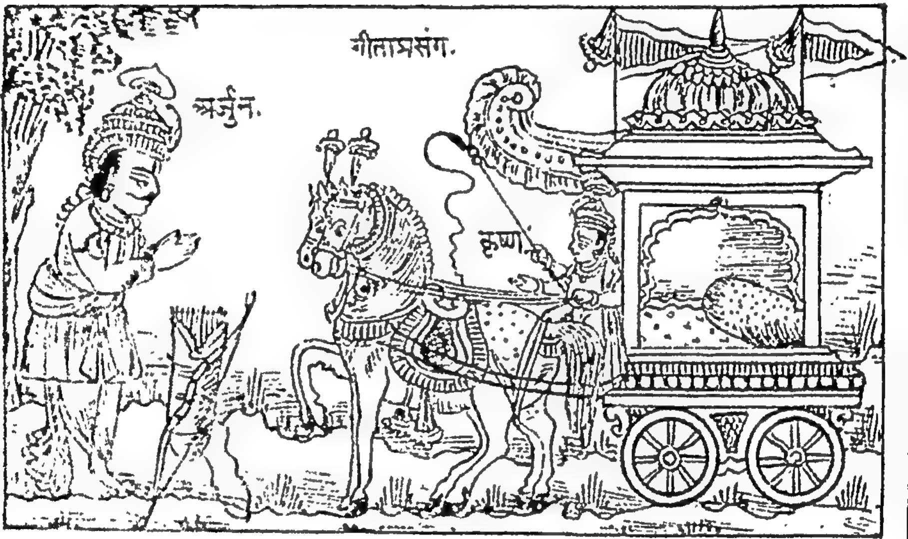
दनकूं ॥ महास्यंहअ्रासनपैंअग्रज विगायदे हूं कौरवपठायदै
कुकमकेसदनकूं ॥ ५१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इतनेंचोथोदूत
करिमातुलपुत्रसिषाय ॥ पठयसुयोधनधर्मप्रत कहिकदुघूत
सुनाय ॥ ५२ ॥ तूंतपसीमांजारगति कुलकुठारमतिनीच ॥ अं
तर्कपटीधर्मस्कत बन्योसाधुजगबीच ॥ ५३ ॥ जोनच्यौंवैराट
विच वेणीसीसगुहाय ॥ सोअरजुनकर्नादिकू बोलतभीतब
ताय ॥ ५४ ॥ दुरयोधनकेसिरसदाधि बंधीभूमइहबेर ॥ डर
दिखायकोउरवौसिले ऐसोकहाअंधेर ॥ ५५ ॥ ॥ युधिष्ठिर
उवाच ॥ ॥ प्रत्यूत्तर ॥ ॥ स० ॥ ॥ नितप्यासदुसासन
श्रोनितकी चितभीमकोयूंअकुलावतहै ॥ छिनजामलौंबीतत
जामजेंद्यौसलौंद्यौसतेमासलौजावतहै ॥ फिरमातुलपूतउ
लूकफूंमेलिकेक्यूंकछुवादसुनावतहै ॥ नृपतेरीअनीतकों
नाकलौंनीरवढ्योंअबसासनआवतहै ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा
॥ ॥ पुत्रहीनह्वैहैपिता मातअंधमसोक ॥ मरतोमारेंअ
बधकू आवकुसीसअलोक ॥ ५७ ॥ ॥ अर्जुन ॥ ॥ नचिछोडे
वैराटमैं कर्नादिककेप्रान ॥ गांजिवजुतनचिरीपमें अवहरिले
कुनिदान ॥ ५८ ॥ इतेसातग्यारहउतै मिलिअक्षोहणआनं ॥
कुरुक्षेत्रडेराकिया लखिनिरदूषनथान ॥ ५९ ॥ रथीमहारथी
अतिरथीसंख्या ॥ ॥ रथीरथीतैंजुद्धकरी राखीपरिकरसोय
॥ मद्धजोइवलपुरनितै ताहीकीजयहोय ॥ ६० ॥ ॥ महारथी
॥ ॥ एकलरैदससहस्त्रतैं राखिलेतरथसाज ॥ सारथि
हयउपसारथी चक्ररक्षनिजकाज ॥ ६१ ॥ राखेलेतनिजरथ
हिकूं करिअगनिततैंजुद्ध ॥ कहततांहिकोअतिरथी जेहैबुद्धि
विसुद्ध ॥ ६२ ॥ ॥ डिंगल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लाखाईलस
करलार धरमपूछजिसडोधणी ॥ भारयबालोभार भीमा-

अर्जुनरेभुजा ॥ ६३ ॥ हैमहारथीहजार जुजुधानंसिखंडीजि
सा ॥ भारतवालोभार भीमार्जुनरेभुजा ॥ ६४ ॥ धृष्टद्युम्नध
नुधार श्रुतिकीर्तिश्रुतिवरमसा ॥ भारथवालोभार भीमाअ
र्जुनरेभुजा ॥ ६५ ॥ उत्तरकुरुवरउदार द्रौपदनकुलविराटदृढ
॥ भारथवालोभार भीमाअरजुनरेभुजा ॥ ६६ ॥ अभिमन
तेजअपार सुभद्रानंदनविजयस्कत ॥ भारतवालोभार भीमा
अरजुनरेभुजा ॥ ६७ ॥ श्रुतिसोमहुकुसियार प्रतिविंधसहदेवसु
प्रगट ॥ भारतवालोभार भीमाअरजुनरेभुजा ॥ ६८ ॥ सतानी
कगहेसार धृष्टकेतचिकितानधृत ॥ भारतवालोभार भीमाअ
रजुनरेभुजा ॥ ६९ ॥ जुधसहदेवजुझार जरासंधसुतजोमरद ॥
भारतवालोभार भीमाअरजुनरेभुजा ॥ ७० ॥ केकयनृपतकु
वार कुंतिभोजपूजितकहर ॥ भारतवालोभार भीमाअरजुन
रेभुजा ॥ ७१ ॥ सलभूरिश्रवसार दुरयोधनसल्यसोमदत्त ॥ भा
रतवालोभार करणद्रोणभीसमकरा ॥ ७२ ॥ कृपाचार्यजुध-
कार जयद्रथभटद्रोणीजिसा ॥ भारत० करणद्रोण० ॥ ७३ ॥ नृप
बाल्हिकनिरधार कृतवर्माभगदत्तविकट ॥ भारत० करणद्रोण०
॥ ७४ ॥ अलंमासुरआधार दुःसासनविकरणदुसह ॥ भारत०
करणद्रो० ॥ ७५ ॥ चलाजुधीईकतार श्रतकेतूकांबोजविंद ॥ भार
त० करणद्रो० ॥ ७६ ॥ कृतदुरसुरवजयकार चित्रसेनअनुविंद
विचित्र ॥ भारतवालो० करणद्रो० ॥ ७७ ॥ सुदक्षिणग्रहीयासार
चित्रकेतजसडाअचल ॥ भारतबा० करणद्रो० ॥ ७८ ॥ सकुनी
जुधसाधार सुसर्मासररवासुभट ॥ भारतवा० करणद्रो० ॥
॥ ७९ ॥ दुरधरचीतउदार कुलभूषणलछमनकुंवर ॥ भारत
वा० करणद्रो० ॥ ८० ॥ जेबांकाजुझार सलिसुतदुःसासनसु
तन ॥ भारतवा० करणद्रोण० ॥ ८१ ॥ धषकुरुपांडवधार ॥

आल्हासाह्लाउलडीया ॥ भडसनादोयभार भीष्मद्रोण-
अरजुनभुजां ॥८२॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकापुनःउ
द्योगपरवणिनवममयूखः॥९॥ ॥श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

श्रीरस्तु

अथभीष्मपर्वप्रारंभः







श्रीगणेशायनमः॥ ॥दोहा॥ ॥द्वैपायनरिखनागपुर सुत समझावनआय॥ कहतसभाविचिसांतिहित जेउतपातलखाय॥१॥ ॥कवित्त॥ ॥द्योसचारिकूकेनिसानिसाचारीकूकेंघोसबनचारीनयनअचारीबनधावेंहैं॥आम्रबीचफूलेकंज कंजमेंलगेहैंकेरीकालदेसबस्तुकोविरोधसोलखावेंहैं॥विनापौंनतूटेध्वजाजलेनाआहुतीहोमयधनकेफूडकुरुक्षेत्रहीपैंजावेंहैं॥होतउतपातक्षत्रिवसकोअदनकाजकुलकोकदनपुत्रकूंनसमझावेंहैं॥२॥ ॥दोहा॥ ॥धृतराष्ट्र०॥ ॥भवतव्यऊपरजतन कछुमेरौफुरैनतात॥ करियेआपउपायकछु सुनौजुधकीबात॥३॥ ॥व्यास०॥ ॥गुपतप्रगटजुधकीकथा कहिहैसंजयतोहि॥ देवादिकहूपेप्रबळजो भवतव्यसुहोइ॥४॥दसदिनबीतेंजुद्धके संजयनृपढिगआय॥ पूंछीनृपजेसीभई तैसीकहतसुनाइ॥५॥ ॥संजय०॥ ॥छत्रिनकोगुरुछत्रधर छत्रिधर्मनररूप॥ सांतनुगंगातेंप्रभव गिरयापितातवभूप॥६॥सुनिपितुबधमूर्छितभयो व्हैसचेतकियप्रश्न॥ कैसेछलकरिममपिता कहहुगिरायोकृष्ण॥७॥कार्तिकशुक्लत्रयोदसी जुधआरंभसहे-

त ॥ मच्छव्यूह भीषमरची अर्धचंद्रकपिकेतु ॥ ८ ॥ पछिमपांडव पूरबकुरू जुरीसैन्ययहभाय ॥ मानहुलोपमृजादकूं सिंधुमिलेद्वैआय ॥ ९ ॥ कस्योयुयुत्सुतिहिसमय अग्रजकोउपदेस ॥ जाकेबलगरजततृपति सैन्यनरहिहैसेस ॥ १० ॥ भूपजुधिष्ठिर धर्मनिधि उपदिष्टाजगदीस ॥ भीमधनंजयभटजहां हैजय विसवावीस ॥ ११ ॥ कहेसुयोधनबचनकटु मिल्योधर्मतेंजाइ ॥ अर्धक्षोहणीसैन्यले लियोपार्थउरलाय ॥ १२ ॥ कहिअर्जुनदोऊसैन्यबिच रथथापहुयदुवीर ॥ जोलोंजुधकरतापुरस लखोमोरसमधीर ॥ १३ ॥ रथथापतअर्जुनलख्यो दोउअनीककरध्यान ॥ बांधवसंबंधीसमुझि डारिदियेधनुबान ॥ १४ ॥ ॥ अर्जुन ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ काकेओरभतीजेमामेभागनेय श्यालेबंधुबहिनेंऊपितामहगुरुद्विजमारिवो ॥ रुधिरकेभीनेभोगकोनऐसोराजचहैयातेंश्रेयमानतहूंभिक्षाअन्नधारिवो ॥ पुलकितभयेहैरोमकंपितसरीरमेरोविकलहृदयताकूंकैसेकलपारिवो ॥ कोऊकहोसूरकोऊकायरअसाधुकहोऐसेजीविवेतेंतोसंदेवभलोहारिवो ॥ १५ ॥ अर्जुनअरवंडआत्माकोनासमानेंमतपोनतेंसुसतनाहिंआगितेंनजारिवो ॥ जलतेंगलतनाहिंछिदेनाहिशस्त्रनतेंव्यापकअद्वैतव्योमकोसोचितधरिवो ॥ जीतवेतेंराजमरेहीतेंलाभस्वर्गसाजछत्रीकोअनन्यधर्मउच्छबतेंलरिवो ॥ वारिवोनचरिवोनांगरिवोनगारिवोत्यूंहारिवोनहरिवोनामारिवोनमारिवो ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अग्निदत्तविषदत्तनर क्षेत्रदारधनहार ॥ वहुरचकारतसस्त्रगहि अवधवध्यषट्कार ॥ १७ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ प्रथमहलाहलदियोहोभीमसेनजूकूंदूजेलारवाग्रेहर्याचअग्निसेंजरायेहें ॥ तीजोद्रौपदीकोअभिमर्षनहेवारकीनोचौथेसबवैभवकेअंगहीछिनायेहें ॥ पंचमरसाकूंरचोसिवनकूं

पठाइदियेछठेहाथसखबंधुमारिवेकोंआयेहैं॥एकअंगहीतें
वधदोषनहींकृष्णाकहेकुरुषट्अंगआततांईतेंअधायेहैं॥१७॥
ग्यारमीअध्यायदिव्यचक्षुदेंदिषायोरूपकेउसीसनेत्रपायकेउ
भुजाधारीहे॥सूर्यचंद्रअग्निजेसेसस्त्रऔरभूखनहैदांतनकीरेख
बीचमरीसेन्यसारीहे॥रत्नादिककोट्यावधिकरीहैप्रसंसाताकूंदे
खिकेकिरीटीदेहदसाकोंबिसारीहे॥दूजियेप्रसन्नसांतिरूपकूं
दिखेयेदेवमेरोहेंनिमित्तसबेरचनातिहारीहे॥ ॥दोहा॥ ॥
अर्जुनगहिगांजीवकों कियोऐंचिटंकार॥तोलोंपदचारीनृपति
कियपरदलसंचार॥१९॥भीमादिकबांधवकहत ऐनभरतकु
लरीत॥अधिकदेखिरिपुसेन्यकुं आतुरहोनअनीत॥२०॥कृ
ष्णाकहेनृपकुंवना काउसुभकारनजात॥भीष्मद्रोनकूंपरिक्र
मन करिनृपबूझतबात॥२१॥ ॥सवेया॥ ॥तिनविष्णुपदी
सुततेंविनतीइकभूपयुधिष्ठिरयूंगुदरावे॥अवजीतिरुहारहेरा
वरेहाथमेंजापेंकृपालकृपासोइपावे॥धरतेंकरप्रीतिकिधौंवनतें
द्विविधामेंअहोनिसजीअकुलावे॥कुरुभूषनभीषमएककहोह
मघोरखुदावेंकीकाठमंगावे॥२२॥ ॥दोहा॥ ॥जोयहांआ
ज्ञामांगवे नहिंआवतकुरुराज॥हमप्रसन्नहोवतनहीं होवततो
रअकाज॥२३॥अबतेरीजयहोइहे गुरुजनदेतअसीस॥हमतो
कारनजीवका भयेअन्यायअनीस॥२४॥ ॥नृप०॥ ॥जोलों
भीषमद्रोणदोउ सहस्त्रधरेंजुधन्याय॥तोलोंइंद्रादिकनजुत मेरी
जेयनलखाय॥२५॥भीष्मकहेपूरबक्रिया तिनकोंदेहुप्रष्ट॥मा
रकानगांजीवधर बातकरहिसमनष्ट॥२६॥द्रोनकहेंअप्रियवचन
करिहेसत्रुपुकार॥ताहिंसुनतधनुवानसब देहुंकरतेंडारि॥२७
॥ ॥सवेया॥ ॥कबहूनलखीनसुनीकहेसंजयदानकथाअ
दभूतनवीनी॥सुरराजकेजाचवेदानीदधीचभोव्रततेंजीतचेकी

थिधचीनी ॥ कुरुपांडवसैन्यजुरीतिहीबेरमें भूपयुधिष्ठिर विनती कीनी ॥ जिनतैंलरिबोतिन्है भीसमद्रोननेंजीवदियोजयआसिरवादीनी ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुरुजनपैंवरदानले गयोजुधिष्ठिरतात ॥ धौरभयोद्वैदिवसजुध तीजेदिनकीवात ॥ २९ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ संजयकहतएकगांजीवतैंमहावीरपांडवप्रजास्योतहांसुनेहैवरवानमें ॥ देवदैत्यनागकोव्याधीतेलराईउतेइतेमेघबूंदनरुकाईव्योमथानमे ॥ ऐसीचपलाईतापैं छाईचपलाईदेखितारुन्ययेब्रधगंगापुत्रकीनीदानमें ॥ नैनपिताध्यानमेंज्यूंसारथीअज्ञानमेंत्यूंवानरहैम्यानमेंपरवोवाकटेपानमें ॥ ३० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कोईकहैअज्ञानक्यों स्वयंब्रह्मकूंहोय ॥ तोक्यूंसंदनचक्रकर धर्योप्रतज्ञारवोइ ॥ ३१ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ तीजेंघोसकुरुक्षत्रशत्रुसैन्यकोहटायकिरीटीकोंआपकोपराक्रमदिखायोहैं ॥ सारथीमहारथीजेदोनौकृष्णाचक्रतहेंभेरवेकूंअस्वसस्त्रछिद्रनहिंपायोहे ॥ आगेपीछेसव्यअपसव्यजोनिहारेताकूंरथनालखोवेसरांपंजरयोछायोहें ॥ आनबीरबानतेंबचावेप्रानवासवीकेगंगापुत्रवानकोवितानसोवनायोहे ॥ ३२ ॥ पितामहपारथकोप्रबलप्रहारपेखिपार्थिवअनेकएकएकनाअरोरहो ॥ अर्जुनउदारबलअस्त्रकीचिसारिबैठोवामपानस्थिरीभूतिगांजीवधरोरहो ॥ पैजकोनिवारभक्तपैजप्रतिपारवेकोरथअंगधारिरासिन्धावकडरोरहो ॥ ताछिनविसंभरयासमरकोकीनोकोपकम्मरतेंछटिपीतअंबरपरोरहो ॥ ३३ ॥ करीहीप्रतिज्ञाअस्त्रप्रेरकप्रतोदविनीलोहकूंछवूनयुधआदिकीयेवानीहे ॥ ताहीकूंविसारिचक्रस्यंदनकोधारिचलेभीषमपैंताहीवाररसाअकुलानीहे ॥ ताहिसमऊाइबेकूंकटितेंखुलोहैपटधूजेमतिदासकीप्रतज्ञाउरआनीहें ॥ पटकौंतथाभिप्रायचडेलोफफूलपरैताकोंसंगछांडिदैनोनीतिकीनिसानीहें ॥ ३४ ॥

॥ ॥दोहा॥ ॥आतुरनररथतैंउतरि पकरेहरिकेपाय ॥यहअन्यायकाकरतहो दोरतसस्त्रउठाय॥३५॥हरिआतुरलखिभीष्महसि डारिदियेधनुबान॥मैंसमीपअबमारिये तजियेकोपविधान॥३६॥आपकहीमैसस्त्रबिन भूमिहरहुसबभार॥हमैंछत्रिकानागिने बोलहुवचनविचार॥३७॥डारिचक्रहरिहसिदयो कियउत्तरब्रजराज॥तजीप्रतिज्ञामोरमें तोरप्रतज्ञाकाज॥३८॥जुद्धभयोनवदिवसपुनि घोरपरसपरघात ॥कहतपितातेंतोरसुत नवमदिवसकीरात॥३९॥पिताभरोसेआपके मेंधार्‍योसंग्राम॥चाहतपांडवविजयतुम करत अकतसेकाम॥४०॥ ॥छंदपधरी॥ ॥अर्जुनकेसरतनकटेभाल॥तूंकहतवचनस्कतनाटसाल॥सुयोधनसुनहुपूरबवृत्तांत॥एकभयोभूपजुतमदअसांत॥रिखनतेंकहतदीजेबताय॥मोतेंसंग्रामकोउजुरैआय॥बरनारायणबद्रीनिकेत॥तिनरिखनबताएजुद्धहेत॥तिनपैंजुधजार्‍योनृपमदंध॥सीतलतोउबोलेकृपासिंध॥हमरिखितपस्याकरतलेखि॥जुधकाजऔरकोउक्षत्रिदेखि॥मान्योनवचनफिरजुद्धनाच॥नारायणनरतैंकह्योवाच॥यकअस्त्रउचारनकरहुगूढ॥मदभ्रष्टहोययहदुष्टमूढ॥नरसुनतहकार्‍योभूमिपाल॥व्हैसावधानसजिसस्त्रजाल॥मंत्र्योअभल्लसरकणसमुंज॥प्रेर्‍योसुरुकेसबसस्त्रपुंज॥मुखरुकेनेनअरुश्रवनघ्रान॥सरकणतेंसबकेरुकेप्राण॥निजसैन्यदुखितलखिप्रणतकीन॥दयाजुतनृपहिहरिखिअभयदीन॥भुवभारहरनअवतारधारि॥विधिप्रारथनानीकेविचारि॥तेइअजयसुरासुरतेंअनूप॥वसुदेवतनयअर्जुनसरूप॥पनकर्‍योनजीतूंतोउप्रात॥तजिहूंरनतीरथभ्रानतात॥सुनिगयोसुयोधनआपथान॥सुनधर्मआयबंधुनसमान॥भीष्मतेंमिल्योहरिजुक्तभूप॥

आदसहिपायआसनअनूप॥ पितातेंकहतपुनिजोरिहाथ॥सब परत्तजातनिजमोरगाथ॥यहकोनत्रियाजिनतेंजुदीठ॥जोरघोंआ परीनफरीपीट॥कहिभीष्मसिखंडीकुंवरकाज॥रिनभ्रातसंमुखम मकरहुराज॥तातेंनहिंसनमुखहोकुतात॥तासमयकिरीटीकराहि घात॥ज्यूंकह्योपितात्यूंकियोव्याज॥गांगेयमहाबलहतनकाज ॥इकएकदिवसदसदसहजार॥असवारपयादेकरसंहार॥४१॥ ॥ ॥दोहा॥ ॥राजपुत्रइकसहसपुनि नवसहस्रमातंग॥अ ष्टसहसमारेरथी दसदिनबीचअभंग॥४२॥इरावानअरजुनत नय उत्तरसरवस्त्रवेत॥तीनपुत्रवैराटके मरेसुदसदिनहेत॥४३ ॥सतरासुततेरेसुनृप भीमसेनकेहाथ॥मरेगयेईवारमें भी ष्मजुद्धकेसाथ॥४४॥अग्रसिखंडीकूंकियो रह्योकिरीटीपीठ॥ पूर्वत्रियाअंबासमाऊ भीस्मबचाईदीठ॥४५॥दीठबचाईदेखि नर मेलिदियेधनुबान॥भयेपरामुखपित्रकों हतवोपापपिछा न॥४६॥ ॥कृष्णवच०॥ ॥भीष्मद्रोणअरुकर्नको बहु रिसुयोधनकेर॥मुसकलछलबिनमारिबो करिग्रहारहियहेरि ॥४७॥लगेबानगांजीवके इंद्रवज्रकेरूप॥गिरयोंपितानरभूमि में सरसज्यासनरभूप॥४८॥ ॥छंदपधरी॥ ॥लखिगि रयोंभीस्मकुरुहीनगर्व॥पांडवनआदिरहेघेरिसर्व॥कीयेआज्ञा भीसमनीरकाज॥सबलियेकमंडलुकुरुसमाज॥अविलोक्यों भीसमविजयओर॥कियेप्रगटगंगतिहबानघोर॥आचमनकि योजलपानआप॥पुनिकह्योकरनतेंजुतप्रताप॥सुयोधनतोरआ धीनवीर॥मैमरयोअबहुकरिसंधिधीर॥तुमलरयोतेजगांजीव तात॥कियेबाणमारिगंगाविख्यात॥ ॥कर्ण०॥ ॥आधीनभू पममसत्यबात॥ततकालसंधिजबकरहुतात॥इकदेहुमोहिंवर दानआप॥सस्त्रतेंनमरूंताकेप्रताप॥मृतलोककिरीटीबिनाधीर

॥ वधकरतातेरोकोऊनवीर ॥ ऐसीअभिलाषारहततोर ॥ ताकेरहुजुधनृपकरमघोर ॥ भीसमढिगजामिकनरपठाय ॥ अबहारसैन्यदोउसिवरआय ॥ ४९॥ ॥दोहा॥ ॥करनहिसेनापतिकियों चाहतहोतवपूत ॥ करनकह्योद्विजद्रोनछत यह नाहिहोयअभूत ॥ ५० ॥ भयोद्रोनसेनापती जुद्धबनेगोभ्रात ॥ आज्ञाव्हैजुधदेखिके फेरकहूंगोतात ॥ ५१ ॥ तेरीनवअ-क्षोहनी पांचधर्मसुतपास ॥ रहीसुमततेरेनृपत व्हैहेवेगहीनास ॥ ५२॥ ॥धृतरा०॥ ॥कबित्त॥ ॥जानेअस्वतीसअस्वमेधनकेवोधिरारवेजोतेनिजरथनाछुरायेगयेकाहुपे ॥ रामइकईसबारनिछत्रीकरैयाभूमिजुधकोसिखैयाजुधजीतिलीनोजाहुपें ॥ कासीराजहुकीकन्यालीनृहीपकरल्यायोस्वयंवरजीतिकेनजीत्योगयोताहुपें ॥ ऐसोपिताकोभलहीजुद्धकेमिपातभयोरुयोधनमूढविजैचाहतहेयाहुपें ॥ ५३ ॥ ॥दोहा॥ ॥जाहूसूतकुरुक्षेत्रमें पूतनमानतरंच ॥ जोभवस्यासोइहोयहे कीजकहांप्रपंच ॥ ५४ ॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशोंदुचंद्रिकाभीषमपरवणीदसममयूखः ॥ १० ॥ ॥श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु॥ ॥







श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथद्रोणपर्वप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥
पांचदिवसलखिद्रोनजुध हतनापुरमेंआय॥द्रोनपतनपांड
वविजय संजयकहतस्रनाय॥१॥ ॥श्लोक॥ ॥गेहेयस्य-
श्रुतिंपठंतिनितरांनानास्वरैर्ब्राह्मणाः वीराणांहिभृणोमिघोषमु
दितंजाकर्षितांधन्विनां॥उच्चैर्वेणुरवादिवाद्यविविधैर्नृत्यंतिवा
रांगनाः हाहाद्रोणकुतोसितस्यसदनेवाक्यंसमुदीर्यतां॥२॥
॥ ॥धृतराष्ट्रवचनश्लोककोआसय॥ ॥सवैया॥ ॥जितना
हिजराजकेगेहविषेहिजघोषश्रुतिसमृतीकरते॥फिरसोथधनु
मुरवीसुनिकेकुरुराजकेसत्रुसबैडरते॥वजिवाद्यअनेकहिगाय
कगानतेंहिसबश्रोतननकोहरते॥तितहाकितद्रोनबिडारिगयो
बहुसब्दअसंभवसेंवरते॥३॥ ॥सोरठा॥ ॥महाअसंभ
वभीत द्रोनपतनसंजयदुसह॥भारथकुजथाअभीत जुधकि
यो दुजराजने॥४॥ ॥संजय०॥ ॥सवैया॥ ॥जोतिसकेंति
नतेंनरकोजयदाइकजोव्है गुपालसोनाहीं॥वाहिजराजकेबान
समानकरेउपमानपेंकालसोनाहीं॥हाथनमेंचलचालअनोपम
हैचितमेंचलचालसोनाही॥द्रोनबराहकीडाढनमेंपरिकेकदिवी
कछुखालसोनाहीं॥५॥ ॥कबित्त॥ ॥द्रोनकेप्रहारेबानमा
रेज्यूंविचारेप्रछभयेमतवारेझूमेझूकेझुकेझुके॥बानकोसधा-
नसत्रुप्रानकोंप्रयानसाथविऊकेजहांकेतहांलरवतरुकेरुके॥
नैनविडरानेऐनबैनतुतरानेसबैसैनथहरानेमुखअधरस्रूके
स्रूके॥वावरेसेव्हैरहैउतावरेजितेकतितेजावरेकेघालेरहेडावरे
लुकेलुके॥६॥द्रोनकह्योमागसुयोधननृपमाग्योवरजीवतही
धर्मराजमोहिपकराइये॥अर्जुनछतेंयहैकठिनादिगयालनकों
द्रोनकहेदोऊकोवियोगकैसेपाइये॥त्रिगर्ताधिपतियोसुसर्माने
ममरवेकोकीनोकहीसेनकोह्यांअरजुनबुलाइये॥नेमनरकेघ

दैन्यअरुआयुआसागिनेनाहिशत्रुजुत्थजाचैताकैसन्मुषसिधाइये ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नहींदीनताक्लीब्यता अर्जुनकेदोयनेम ॥ आयुअन्तदेहैअवसि आयुरारिवहेक्षेम ॥ ८ ॥ इतेएकगांजीवधर उतैंपचासहजार ॥ बहुतरथीइकपहरमें कीनेविजयसंहार ॥ ९ ॥ मोहअस्त्रतेंसारथी रथीकृष्णअरुपार्थ ॥ लखेपरतअरिप रसपर हततजाननिजसाथ ॥ १० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ संसप्तके युद्धकूंकिरीटीकेगयेतेकरिप्रेरयोभगदत्तभीसहूकोअंतलैरह्यो ॥ स्वबलविचलनिष्ठसब्दसुनितिष्ठतिष्ठआयोयूंउच्चारतहिगांजिवकूंछैरह्यो ॥ मारयोवानएकहीप्रचारिढिगआवतसोपरयोवामूडपेंलखावेतुंडउच्चैरह्यो ॥ धर्मजकेविजैकेवितानसेतनैंगेतातेंमहू रतआदिकीलरोपीवेकोव्हैरह्यो ॥ ११ ॥ भगदत्तनेंवैष्णवअस्त्रमेरयोअर्जुनपेंनारायनवीचझेल्योनरकूंबचायकें ॥ पटकावरदानकोहोइएकाजसत्रुसीसकृष्णनेकटायगेरयोकथासमुझायकें ॥ वहैगजमारिसीसडारीभूपेंभूपहुकोविजयउचारिनिजबलकोसुनायकें ॥ भिरेहैजेजेआयकेकेआयुधउठायकेवातेजहुकूपायकें तेपरेमूरछायकें ॥ १२ ॥ ॥ सुयोधन ॥ दोहा ॥ ॥ हैदिनअरजुनबिनरह्यो धर्मनपकरयोआप ॥ बरवृथाकिअथवावृथा भयेतोरसरचाप ॥ १३ ॥ ॥ द्रोन० ॥ ॥ चक्रव्यूहअबरचतहूं आजपकरिहूंभूप ॥ नातोहतिहोंसूरकोऊ ताहीकोअनुरूप ॥ १४ ॥ अर्जुनकोंजुधकोगये संसप्तकेसंग ॥ तापीछेद्विजद्रोननें कीनोंव्यूहअभंग ॥ १५ ॥ ॥ युधिष्ठिर ॥ ॥ व्यूहभेदपैंहारजयलगीपुत्रविरव्यात ॥ वेधतहैप्रद्युम्नहरि तूंअथवातवतात ॥ १६ ॥ तोविनअभिमनतीनहू वेतोनहिंयहकाल ॥ तूंवेधहूंतवपृष्टपें रहिहैंहमसबलाल ॥ १७ ॥ चक्रव्यूहकेवेधसें अभिमनकवरउदार ॥ धर्मराजआदेसतें चल्योंकवचधनुधार ॥ १८ ॥ ॥

कबित्त ॥ ॥जयद्रथकोमृत्युऔअजयसुयोधनकोछकुवीरधी
रनकोअजसलखागयो ॥ विजयजुधिष्ठिरकोऊजसकिरीटीजूकौ
द्रोनकोपतननाहिंजतनररवागयो ॥सुभद्राकोसोकअहबातनास
उतराकोकेउन्नृपपुन्नकोकाळज्यूशिषागयो ॥ इतनेपदारथकोच-
क्रव्यूहरंगभूमेअर्जुनकेआगमतेआगमदिखागयो ॥१९॥ द्रोनको
हद्दायोदलदुसह दिखातदीर्घदारुनदुसासनसेचक्रव्यूहचनायो
हे ॥जाकोभीरभेदवेकोभर्तवंसभूषनयोंपायपितुआज्ञाभुजभा
रभीसभायोहे ॥ पारेअवनीसनकेसीसअभिसेसकीन्हेकेतेइकु
मारमारेतोउनअधायोहे ॥सुभद्राकीकूरवकीबलैयालीजेबारवार
जाकेबीचवीरधीरअभिमन्युजायोहे ॥ २० ॥ बैरीबरवानतहेसुयो
धनकीसेन्यबारेअर्जुनतेंजाकोतेजलखतसवायोहे ॥ वडिबाको
भोरजेसोचक्रव्यूहतापैवेगदक्षजग्यकाजवीरभद्रदरसायोहे ॥
बापहूकोआकारजओरसबक्षत्रिनकोताकेसुखबापजेसोआपप
दपायोहे ॥सुभद्राकीकूरवकीबलैयालीजेवारवारजाकेबीचवीर-
धीरअभिमन्युजायोहे ॥२१॥ ॥दोहा॥ ॥काकाऔरभती
जके भयोजुद्धअद्भूत ॥दुःसासनमूर्छितभयो ताहिभागोलै
सूत॥२२॥ ॥सवैया॥ ॥मातापितासुभद्रारुधनंजय
हैपरवतेजकदीविसरेना ॥ज्येष्ठतोकष्टमेद्रष्टपरेनकनिष्ठकीक
ष्टमेंप्रष्टफिरैना ॥ तातकोभ्रातडरेबहुसत्रुमेंभ्रातकोताततसदैव
डरैना॥काककीहोडभतीजकरैनहिकाकोभतीजकीहोडकरैना
॥२३॥ ॥कबित्त॥ ॥सुयोधनकोपकियेसुभद्रानंदपैंचल्यो
ताकूंदेखिसेनापतिद्रोनअकुलायोहै ॥ बारबारबरजूंमैंचरजोन-
मानेसटमरीद्रष्टबालप्रलयकालसोलखायोहे ॥अकेलेकुमारला
रयोंलोकतरीवाहनीकौमारिकेअवारजमलोककूंपठायोहे॥
आस्तवीकोछक्योज्यूंअसावधानजातकितेआगेदखिमहा

वीरवासवीकोंजायोहैं ॥२४॥ ॥ छंद॥ ॥दवावेत ॥
अर्जुनकेपीछेकुरुदलकेउमगायेते ॥ बंधनचक्रव्यूहहिंयमसु
तकेफुरसायेते ॥ अभिमनकेन्निहाइनधीरेरथलागतहीबगतरत्त
नधारतरवसंरवनकेवागतही ॥ रुकुगोदसहित हूतेंवायुदिनरूरवो
सो ॥ भैचकसोकालहिनृपपुत्रनकोभूषोसो ॥ दिनमणीकीरस्मी
निरतेजहीदरसावैत्यूं ॥ कंपतभूभूधरअहिकोल्लहिकसकावैत्यूं ॥
कायरमुरवसूकेतुतरानेकरकंपतहे ॥ सूरनकेजसकीपरलोकहि
कीसंपतहे ॥ व्यूहेकरिबेधनगोकबरनकेंऊंडनमें ॥ छत्रनकीछा
यातकमारतसुरमुंडनमें ॥ छाईसुघराईदलअर्जुनकेछोनेकी ॥
लाघवताकरकीसुघराईमुरवलौनेकी ॥ निररवोआचारजछविसु
भद्राकेनंदनकी ॥ करकीचलचालनगनसत्रुननिस्कंदनकी ॥
पंचनतेंबोलतचरवअद्भुततापेरवूंहुं ॥ हैअर्जुनऐसीभईशिषीकुं
देरवूंहुं ॥ दाहेंअरुवायेधनुमंडलसरसंजुतहे ॥ रस्मीजुतसूरज
परीवेरवहिमेरजतहैं ॥ कालहिकेबालहिसेवाननवरसावैजे ॥
सालननटसालनदरसालहीदरसावजे ॥ अभिमनकेसनमुरव
अजरायलजेअडतेहे ॥ जमपुरकेभमलकेउघायलतडफतेहे ॥
वीरनकेजुद्धनविचचालनतिहबेरुकी ॥ सेंधमुहबालनकेभाल
नसमसेरूकी ॥ वीरानृतनचिकेभटजूटेरचिरचिकेत्यूं ॥ मचकेल
गिचाहनषचिषचिकेंधरलचकेत्यूं ॥ गडगडतेतूरनवडवडकेते
उलडतेहैं ॥ भिडतेकेऊमुडतेकेऊंऐडतेकेऊपडतेहे ॥ किलके
मिलमिलकेदलबलकेअगवारीपें ॥ चलिकेछलबलकेअनजल
केंइकतारीपें ॥ लेकेउडोलेकेउनोलेतरवारनकूं ॥ खोलेनिसान
केघोलेअरिमारनकूं ॥ भूमेकेउघूमेंकेउवाहनरथनागूपें ॥ रूमें
केउदूमेंभडअछेहयआगूपें ॥ क्षेत्रनतेंसत्रुनकीसेनाऊरिपर
तीहैं ॥ जोगनीलक्कनतेंपत्रनकूंभरतीहै ॥ कोकादुसासनकूंसू-

रछतकरिडाखोहीं ॥ हेसतनृपपुत्रनजुतलछमनकूंमाखोहीं ॥
भानुसुत १ द्रोनी २ कृप ३ भूरिश्रव ४ आचारिज ५ सल्य ६
जुतमिलविरथीसोकीनोजवमारनकज ॥ दीनोसिरसंकरकों
पलरतपलचारीकों ॥ पितुकोजयमृत्युभयजयद्रथअपकारीकों
॥ लाखनकोंदेकेविधवापनअरिप्यारीकों ॥ उत्तराकोंदीनोवि-
धवापननिजनारीकों ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मखोकंवरसं-
ध्यासमय भयोसैन्यअबहार ॥ सोकसिंधुबिचधर्मसुत कर
करिफूटतपुकार ॥ २६ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ नृपतगांधारजूकीत
नयाउछाहकरोकुंतिभोजतनयाकेउछवमिटायेते ॥ वासुदेवअ
र्जुनकूंबदनबताऊंकैसेयुयुत्सुकूंकितैसीखदेहाबिचलायते ॥
युधिष्ठिरकहतमोकूंबनकोगमनश्रेयमनकोमनोरथसोमनमें
बिलायते ॥ भलेमनभायेपायेराजपदअंधपूतस्कभद्राकेजा
येवीरस्वरगसिधायेते ॥ २७ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मधुभोजनमेंम
निभूषनमेंमृदसेननमेंजहांपानिपिया ॥ सिवगोननमेंसुधभोन
नमेंथिरवाहनपेंसुतदेखिजिया ॥ करियेजिनकोइनठाहरअयसो
हायअबेअकुलातहिया ॥ धिकमोधिकक्षत्रनकूंजुधबीचकहांक
ढुवालकुंअग्रकिया ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अर्जुनदेखेआइके
सांऊसिबिरहरिसंग ॥ नहिंवादित्रप्रदीपनहिं नहींरागनहिंरंग ॥
॥ २९ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ आयोवीरसमससकगनकोंसंभारि
जबसूनेसेसिबिरदेखिसोकबेसुमारहे ॥ पूछतहेंदुसहदूसाभ्रात-
नआमात्यनसूंकेसबकेसंगयोकिरीटीबेकरारहे ॥ भर्तबंसभूसन
जोदुसनदूसहगनकूंताकोलडेतोमेरेप्रानकोआधारहे ॥ बलभा
गनेयकहांसुभद्राकोछावाकहांकहांपांडुनंदनअभिमन्युकुमार
है ॥ ३० ॥ नानासूरसेनतेरीमाताकुंतीवीरसुयापितामहशांतनु
त्यूपितानृपपंडुहे ॥ कीनोसुरलोकअभेलीनोनरलोकजीतिवासी

नागलोककुकेमानतबलचंडहै॥केसवकिरीटीजूसूंकहैंअभिन्यु-
कहांसत्रुजीतिवेकौंतेरेबिरदअरचंडहै॥देषिध्वजदंडतजिषंडअ
रिझुंडतानतेरेभुजदंडहूतेअभयब्रह्मंडहै॥३०॥ ॥अर्जुन०
॥ ॥दोहा॥ ॥क्यूंधारतहौसस्त्रतुम महावीरबहुभांत
॥तुमदिगसिसकैसेमस्यौ यातेंचितअकुलात॥३१॥ ॥युः
धिष्ठिर॥ ॥कबित्त॥ ॥तेरेगयेपीछेद्रोनचक्रव्यूहरच्यौ
ताकौवेधवेकोकीनोपनप्रेस्योमैंकुमारकूं॥बेधिहोमेंव्यूहपीछो
आयवेकोसंसयहैचारुभ्राततेरीपीठरहैंगेनिकारकूं॥सिंधुरा
जवरकेप्रभावचारोंजीतिरोकेरुद्रकेप्रतापमेंलख्यौनहोनहारकूं
॥ऐसेजीपिरायबैठेसत्रुकोसिरायबैठेलाखूतेंभिरायकेमराय
बैठेवारकूं॥३२॥सल्यछेद्योसूतसूतपुत्रधनुद्रोनीअश्व भूरि
श्रवात्रानद्रोनढालकरवालकूं॥दुःसासनपुत्रभयेविरथगदातें
जुस्योमूर्छित्तभयेकौंदेखिप्रहास्यौविहालकूं॥दंतीकेपछारिवीर
मारिमस्यौलाखनकूंलछनकुमारलूंविदारव्यूहजालकूं॥मंगल
निवारिबैठेविषयविसारिबैठेयूंअलोकधारिबैठेमारिबैठेबाल
कूं॥३३॥बारबारवारिद्रगधारबहैसभद्राकेकहैपार्थनाथजू
सिरानोबलरावरो॥भीमआदिभूषनकोधारतस्तसस्त्रभदति
नकौनप्रेरेभूपभयोमतिबावरो॥कुररीलौंकूकेहूकेउठतकरे
जेबीचदेखौप्यारोपूतकहाजुधकौंउतावरो॥होतोसबछत्री
मेरेजानैंतोनिछत्रीदलद्रोनव्यूहदारुनविदानकूंडावरो॥३४॥
प्रातभयेअग्रजतिहारोंसोसंवारिरथसारथीव्हैसैन्यवीचअभ
यविहारीहै॥कपिकीगरजघोषदेवदत्तगांजीवकीरिपुरिपुनारि
नकेगरभप्रहारीहैं॥नामांकितयानमेरेपानकोसंजोगपायआछे
आछेवीरनकेप्रानकौंअहारहै॥जैसेअत्ररोवेतेरेपुत्रकीकलित्र-
प्यारीतैसेपुत्रसत्रुकीकलित्रतूंनिहारीहै॥३५॥ ॥अरजुन

॥ ॥दोहा॥ ॥प्रातश्रस्तलौंनारहै जयद्रथवाममप्रान ॥ द्वो उरहौतोहोकुश्ल मोकोंनरकनिदान॥३६॥सरनयुधिष्ठिरकृ
ष्णकी अथवाभजिनहिंजाय॥ तोइंद्रादिसाह्यतोऊ पितृनदेंकु
सिलाय ॥३७॥सुनीप्रतिज्ञापार्थकी दूतनतैंतिहिबेर ॥जयद्रथनृ
पभगिजानकूं मातकियोहियहेर॥३८॥कहेसुयोधनद्रोनतें जय
द्रथराखहुआप॥प्रातश्रस्तमितभानुलौं ममजयतोरप्रताप॥३९॥
द्रोनकहेमृगराजको करिअपराधअमीत॥ जंबुककीमति सिंधुनृप
यहतोपरमश्रनीत॥४०॥त्रिधाप्रातरचिहूंचमू सकटपद्मशुचि
व्यूह॥ तावेधनसमरथनहीं सुरइंद्रादिसमूह ॥४१॥एतेही-
मेंभवसिवासि होइसिंधुनृपनास ॥अखयसुखनकोंभोगिहौं नि
धिकेउस्वर्गनिवास॥४२॥भूमिसयनरचिपार्थके आपहाथव्रजना
थ॥ताहिसुवायरुस्वप्नमें शिवपुरदरसयसाय॥४३॥शिवहि
रिझायरुपायतहां एकवानअहिरूप॥ जयद्रथवधहितपासुप
ति दूजोअस्त्रअनूप॥४४॥अस्त्रासिखायोस्वप्नमें हरिनिजडेर
निश्राय॥ कहतकामनाअर्धनिस दारकतेंसमझाय॥४५॥ ॥
॥कबित्त॥ ॥सुनोमित्रदारुकजयजयद्रथवधावेकाजद्रोनसेश्र
साधमिलिव्यूहकीविचारीहै॥प्रातनहिंछोरूं इंद्रआदिकसहाय
जापेंअर्जुनकोसत्रुसोहमारोसत्रुभारीहै॥अर्जुनहैमेरोप्रानमें
हूंप्रानअर्जुनकोअर्जुनकीजीवनसोजीवनहमारीहै॥ अर्जुनवि
नानछिनदेखसकूंविश्वहूकूकहेगिरधारीमैंसदैवऐसीधारीहै॥
४६॥ ॥दोहा॥ ॥समरथसज्जीभूतकरि राखहुमोरसमीप॥
अर्जुनतेंनमरेतऊ मारिहौंसिंधुमहीप॥४७॥ रातप्रतिज्ञाया
दकरि चढ्योप्रातकुरुवीर॥ महिजयद्रथअकुलातदोउ धरधरा
तत्ताजिधीर॥४८॥ ॥कबित्त॥ ॥कोपकीकटाक्षतैंनि-
हारतहीरिपुओरकामकीकटाक्षवामातिनकीचितानहै॥ मू-

वींगांजीवताकोंसपरसकरतअरीनारनके कज्जलकोपरसमि-टातहै ॥ दसतहैंओठआपपीरकोंसहतवीरसत्रुबंधुओटनकीपारसोविलातहै ॥ धारिउसकारनहीअर्जुनकेसत्रुनकी स्त्रियनकीचूरनकोचूरनदिखात्तहै ॥ ४९ ॥ ॥ द्रोन० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ रिनविनजीतेसत्रुके तूंअर्जुननहिजात ॥ जोमोहिजैहैजीतिअब तबपनसांचोतात ॥ ५० ॥ ॥ अर्जुन० ॥ ॥ तुममेरेंनहिसत्रुहो आचारजद्विजवंस ॥ जिनतैंहारनजीतसमछत्रिनकहतप्रसंस ॥ ५१ ॥ दैगुरुकोंसप्रदछिना अपसव्यकैपराथ ॥ जयलछनदैद्रोनकूं चल्योनाइकैमाथ ॥ ५२ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ कहतेकिरीटीजूसंकरिहैकलहक्रूर महासूरबीरनकीमनमैंमनीरही ॥ वाहनकेवेगवासुदेवप्रेरीचैनेवाजिवाहतोभईनाचितचाहतोधनीरही ॥ दोयकोसआगैंसत्रुनासकरेऐसेबानदोयकोसपीछेपरेंचक्रतअनीरही ॥ पायेहैंनृपतिपतिअछरअपतिहै पैंपाथसत्रुसंपतितेंविपतिबनीरही ॥ ५३ ॥ च्यारचारकोसविस्तारदिसाचारहीमेंकपीचिन्हलीयेंव्योममंडलमेंजूटिवो ॥ ऐसोध्वजदंडरथवेगहैअखंडतेसोजारवप्रचंडब्रह्मांडकेसो फूटिवो ॥ अर्जुनकी-सीघ्रताकोकौनपेबखानबने एकसारथदूरपाथसत्रुआयुटूटिवो ॥ पांचसतबाननकोछिनमेंनजान्योजायतौनतैंनिकारिचौंसघानऐंचिछूटिवो ॥ ५४ ॥ सुचि १ हासि २ करुणा ३ औ रौद्र ४ वीर ५ हैबिभत्स ६ भयानक ७ अद्भुत ८ औसात ९ लौं विख्यातहै ॥ रति १ हांसी २ सोक ३ कोप ४ उत्सव ५ गिलान ६ भीति ७ विस्मै ८ निर्वेद ९ थाईकारनकहतेहैं ॥ स्त्री १ रिषी २ सत्रुमिमें ३ राजा ४ सूरे ५ सकुनी ६ मैकायर ७ दिखेये ८ युधिर ९ मैं सुहातहै ॥ दोनूंअखैभातनतैं अर्जुनकेहाथनतें-काटेप्रथीनाथनतें नोरसदिखातहैं ॥ ५५ ॥ उतैबैनिकारबर

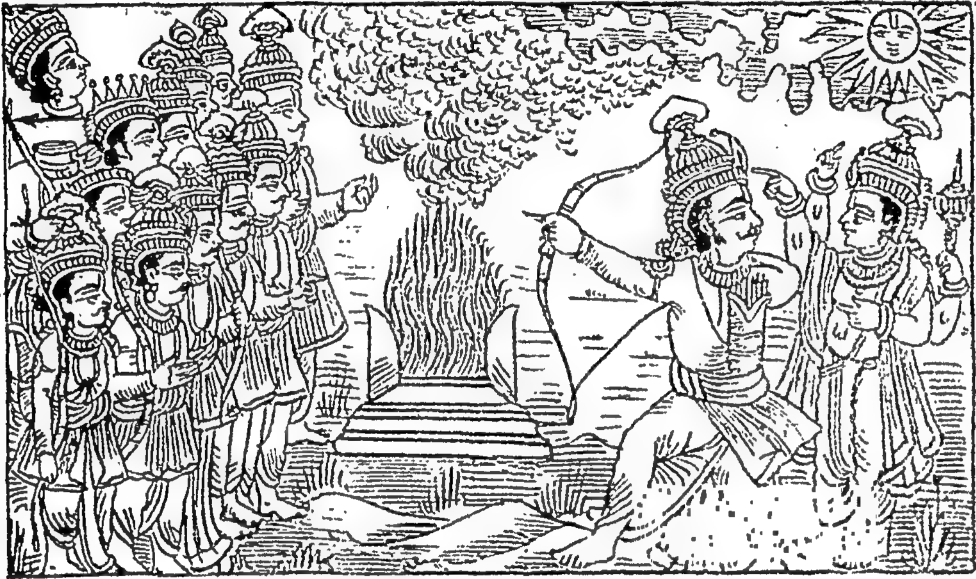
मालाद्रव्यसंपुटतेइतेअरवेतूनतेंनिकारतहीवनके ॥ उतेदेववधूमालग्रंशिकोसंधानंकरेगांजीवकीमुरवीपेंहोनहीसंधानके ॥ इतेजापेकोपकीकटाक्षभरेनैनपेउतेभरकामकीकटाक्षप्रेमपानके ॥ मारिवेकूंमरवेकूंदोनूंएकसाथचले इतेपाथहाथउतेहाथअछरानके ॥ ५६ ॥ जाहीपेंसंधानबानगांजीवतेंअर्जुनकोताहीपेंअच्छरचरवचंचलचलातहे ॥ रूपरंगभूषनजेबसनानिहारतहीछिनहीमेंओरहीकेओरसेदिखातहे ॥ मेरोहिवस्योहेकेधोओरकोवस्योहेऐसोअस्त्रविनसरूहीमेंविस्मैविख्यातहे ॥ याहीख्यालबीचहेविहालसुरबालडारेंस्वेतफूलमाललालठालभईजातहे ॥ ५७ ॥ गंगागतिगांजीवविराजितसहितघोसरवितनयाजूकेरूपइषुधारपेंनीहे ॥ सरस्वतीरूपजाकीपनचउदारसोहेलोकलोकबीदअद्भूतजसलेनीहे ॥ नारायनढिगतेंचलीहेकुरुषेतबीचमहासूरबीरनकूंजोतमेंमिलेनीहे ॥ हेतोगतिऊर्ध्वदेनीचतुर्वर्गभेनीपरहोयअनभवैनीसुरलोककीनीसेनीहे ॥ ५८ ॥ कोनसमेतोनतेंनिकारेंद्रोनसैन्यकहेकरतसंधानछोरिआनकूंगहतहे ॥ दोयदोयकोसआगेपीछेपाथदसूंदिसादसदसकुंजरकेपिंजरदहतहे ॥ जाकेताकेजअतत्रजहांतहांजबेतबेएकआनलगेफेरज्ञाननरहतहे ॥ अर्जुनकेबानकोप्रमानदेखसत्रुनकेप्रानकोप्रयानानिजप्रानन्नचहतहे ॥ ५९ ॥

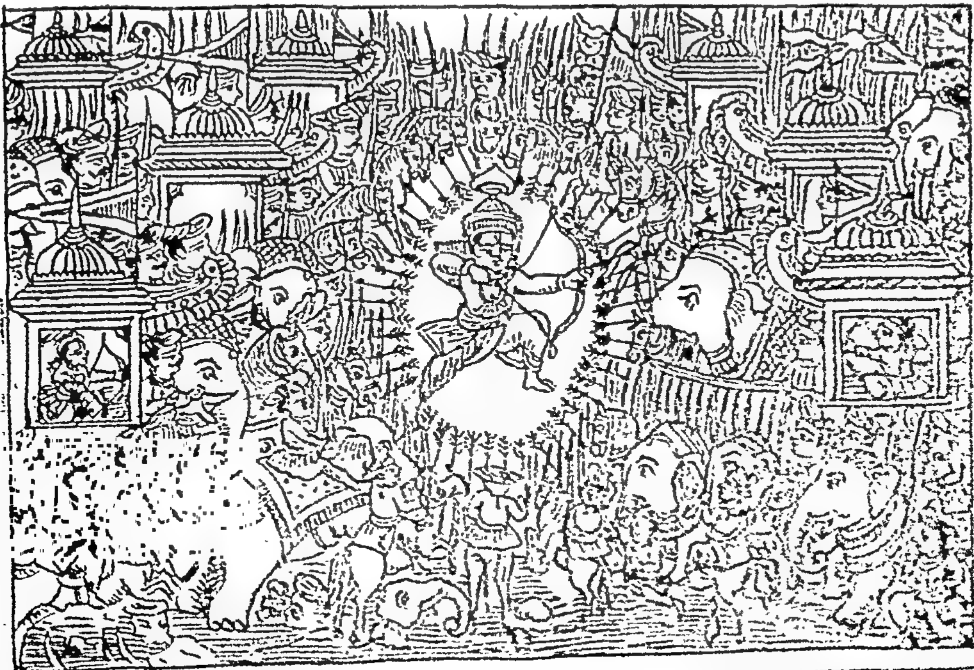
॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ करिप्रथमद्रोनतेंजुद्धवीर ॥ जयलक्षनदेंपुनिचल्योधीर ॥ दंतिनकीसेनासबविदारि ॥ जबनाधिपतीअंबष्टमारि ॥ अवंतीपतिव्यंदानुव्यंद ॥ कीनेदोपुत्रनजुतनिकंद ॥ नहिंसुतभूपहरिकीयोखंड ॥ निजअस्त्रहितेंपायोसुदंड ॥ मूर्छाहरिअर्जुनकीमिटाय ॥ हतिसत्रुसैन्यपरवेसपाय ॥ केउरथीओरहयगजारोह ॥ कीनेविनासअर्जुनसकोह ॥ वहसमयकृष्णनरतेंउचारि ॥ बहुश्रमितनृषातुरहयविचारि ॥ ततकालअस्त्रतेंरचहुतो

ल ॥ समऊहुइइषुमइ पुनि अस्वसाल ॥ निरसल्य कस्रू अस्वनपि
वाय ॥ करिअभययुक्ततूं सथिरकाय ॥ ज्यूंकह्यौकृष्णत्यूं कियौ
पार्थ ॥ सरबरहयसालाएकसाथ ॥ हयपायकियौहरिग्रहप्रवेस
॥ सोरह्योपयादोविजयसेस ॥ ६० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बिधिरथह
रिसारथिबिगर पार्थभूमिगतपेखि ॥ उमगेअरिफानूसबिनु
दीपसलभगदेखि ॥ ६१ ॥ बिनरथअर्जुनबहुरथी रोकिलियेजुत
छोभ ॥ अगिनतगुनगननरनके ज्यूंरोधतइकलोभ ॥ ६२ ॥
॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ मूररवकेवेनमेंनकुलटाकेनेनमेंनमीनगति
लेनमेंनचपलाईऐसीहै ॥ ताररवकेगोनमेंनत्यूंहिपुंजपोनमें
नविद्युतकेहोनमेंनकोनजानेकेसीहै ॥ सब्यअपसब्यहूकीफु
रनीनजानीजायकिरीटीकेहाथनमेंजेसीहोइतेसीहै ॥ जितेजिते
जेतिजेतिसत्रुसैन्यजुरेजबतितेंतितेंतोतिनेंतिसीप्रताअनेसीहै ॥
॥ ६३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अेष्ठयहीकौअतिथज्यूं कबहुनवेमुरवजा
य ॥ त्यौंअर्जुनतेंभिरिसमर बिनछतकोउनलखाय ॥ ६४ ॥ ॥
कबित्त ॥ ॥ ह्वैकेप्रतिकूलजानेखांडवनजारदीनोसानकूल-
ह्वैकेसत्रुइंद्रकेकियेनिपात ॥ भोजनकीबेरऔरपुत्रत्रियासप
रसकूंसबहीकोदक्षनकरबढतलखावेतात ॥ आहवमेंअर्जुनके
उभैबाहुएकसेहैलखेताकूंगांजीवअलातचक्रसोलखात ॥ बामअ
गूंदक्षनत्यूंदक्षनकेआगूबामवामनभूमापवेकेपेंडसेबढतजात
॥ ६५ ॥ पार्थकेप्रहारपरलोकप्रथीनाथनकौपेषिदुरयोधनपछि
तातपानपीसेंत्यौं ॥ दुसहदुरापदीर्घकपीध्वजदंडदेखिदूसासन
आदिदुतिहीनभयेदीसेत्यौं ॥ सोहतहैसरअतेसराहतसरबची
र ॥ वाहनकिरीटीवाणदसहूदिसासेत्यौं ॥ बरकेबरीसेरूपसरस
भीसेइतेंकीटंइकसीसेउतेंअच्छरअसीसेत्यूं ॥ ६६ ॥ ॥ सवैया
॥ ॥ सिंधुनरेसकेमारवेकाजलयोपनवासवीसद्यगयोचल ॥

जाकेप्रवेसकेपीछेद्विजेसनेमारविदारकेटारदियेरवल ॥ विद्रुहेऊम
रसुद्ध पराक्रमताहिके जुधमेंनाहिकछूछल ॥ पौनमृगेंद्रतैहोतग
जेंद्रत्यूंदोनकेपोनतेपांडुनकोदल ॥ ६७ ॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदु
चंद्रिकाद्रोणपर्वणिएकादशमयूखः ॥ ११ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

अथद्रोणपर्वउत्तरभागप्रारंभः





श्रीगणेशायनमः॥ ॥युधिष्ठिरउवाच॥ ॥कवित्त॥ ॥नेरैंकाजवनहीमैंकहतोकिरीटीमोसुसातकीकेजोरहीतेंसत्रुनकोमारिहौ॥कृष्णबलदेवजोपैहोयनसहायतोहूएकसैन्ययहूतेसवैकाजसारिहौं॥सोहीकाजआजकोसद्दादसलौंद्रोनव्यूहतोविनतरैयाकोहैनाहितेपुकारिहौं॥देवदत्तगांजीवकीघोसनसूनुहूंतेरे गुरुविनप्रथाकूंमैंकामुखदिखारिहूं॥१॥ ॥सात्यकी॥ ॥दोहा॥ ॥ ॥जबनसैनदससहसगज अर्जुनलायोजीत॥ तेउजुधकूंसनमुखखरे लखकुकालविपरीत॥२॥ इनहिंद्रोनजुतलोपिकै कर्नसैन्यकूंधाय॥दुसासनजलसिंधुहनि मिलहुविजयतेंजाय॥३॥ ॥कवित्त॥ ॥व्यूहकेउलंघिवेकूंसोचमोकूंनेकनाहिंआपकोहैसोचमेंभरोसेछोरूकौनके॥हमेंयाहीकाजदोऊकृष्णयहांराखिगयेजीवितग्रहनतेरोकन्योनेमद्रोनके॥जुधिष्ठिरकहेमैंकाक्षत्रीनाहुभीमादिकमेरेहेसहायक्योंनजाहुउतगोनके॥एतीसुनीमोनकैंदिवायदानविप्रनकूंव्यूहदीनकेपैंचल्योरथीवेगपोनके॥४॥ ॥दोहा॥ ॥सकटव्यूहधुरद्रोनतें प्रथमहिंभयोमिलाप॥द्रोनकहतदुरधर्षसों लखियेसैनेयप्रताप॥ ॥५॥जामगर्वहैतबगुरुकट्यो रेसात्वतमदअंध॥त्यूंअपसव्यहैनिकरिनूं कैतुहिंनूटहिकंध॥६॥ ॥सात्यकी॥ ॥ जामगआचारजकटै कदतनसिखकूंसोच॥तिनकूंजोदूषितकहै तिनकीबुधिमहिपोच॥७॥आडेफिरफिरहटगयो तीनवेरद्विजद्रोन॥ तिनसात्वतजुद्धकुसलतें कहिजयपावतकोन॥ ॥८॥मारिसारथीद्रोनको कृतवरमाकोजीत॥ समरुाईदुसासनहिं कपटद्यूतकीरीत॥९॥सातकिवाननतेंविकल रन-त्याग्योजुवराज॥ दूसासनचितचकितसो गयोद्रोनपैंभाज ॥१०॥ ॥सवैया॥ ॥सीसकेभूषनभूमिपरेकटिसात

कीवीरकेबानकेमारे ॥ द्रोनकहे हसिकें कुरुराजजू आयेभले
करमुंडउघारे ॥ बीजकोबोवत पूत दुसासन जान्योनहीफल
लागिहेरवारे ॥ जोप्रियहोइसोजाहर कीजिये पागमंगावेंकीचून
रीप्यारे ॥११॥ द्रोनकहे भ्रकुटीकरिबेकभयेंकृतकायरमंगल
गावें ॥ राजसभाबिचनाहररूपरुकामपरें परस्यालकहावें ॥
क्यूंतुमसेंनृपपूतदुसासन गालवजायकेंवीरतापावें ॥ सात्यकी
तेंबचेजन्मभयोनयोसूपवजावे किथालबजावे ॥१२॥ ॥
छंदघनाक्षरी ॥ ॥ करेंनासंधानसरकोपजुतबानीदुजक-
हतदुसासनतेंभाग्योलखिवारवार ॥ सातकीकेबाननतेंत्रास
तहोमेरोपूतकिरीटीकेबाननसहोगेकेंसेअलेकार ॥ बरजतर-
च्योधूतकाननपिताकीकीन्हीद्रोपदीकोऐंच्योचीरसंधिक्यूंनली
नीधार ॥ जाननक्यूंखेलेहेंअजाननलोंपासनकेबाननकेजुथ
व्हेहेंप्राननकेलेनहार ॥१३॥ टेढीभ्रुकुटीद्रोनदुसासननिकटदे
षिबोलेंप्रगटवाक्यकुसलजुतआयेधाय ॥ रवातरसुयोधनकी-
सातकीकूंदीनीजयपूर्वतजिरायसाजबनकेनकीनेजाय ॥ कुरुद
लबीचनरसिंघआपवीरबजोधिकहेहजारजाकोंअरितेंविमु-
खकाय ॥ वायबीजहाथनरयूंपायजुवराजपदषायधाईपीठदीठ
लाजहुनआईहाय ॥१४॥ ॥ कृष्णार्जुनउभयोक्तक ॥ ॥
॥ द्रोनदलफारिकेंविदारव्यूहदंतिनकीमार्योसदर्सनजलसंध
हूकोगिलगो ॥ जवनपछारिपुनिद्रोनसारथीप्रहारिजादवउदा
रफेरदुसासद्रोनदलिगो ॥ विक्रमवरवानेसवेंवीरभर्तवंसिनकेकु
रुसेंन्यसिंधुनरदेखित्तूंबिचलिगो ॥ सात्यकीमदोन्मत्तकुंजरकरा
लकृष्णबाल्हिकनृपालपोत्रकीचवीचकलिगो ॥१५॥ ॥ दोहा
॥ ॥ युयुधानभूरिश्रवा यदुपुंगवकुरुवीर ॥ जुटेविरथविन
कवचभये तोउदोउतजीनधीर ॥१६॥ द्वंद्वयुद्धकरिपटककुरु

सातकीकोतहांसीस ॥ छातीचढिकाटनलगो यादवभयो-
अनीस ॥१७॥ ॥धू०॥ ॥कबित्त॥ ॥कृष्णजैसोसार
थीअनासरथत्यूंहीअस्त्रअरवेभातागांजीवकीगुनकुकटैनही
॥किरीटीसोरथीताकीसमताकरैयावीरद्रोनरच्योव्यूहतापैअ
केलोनटेनहीं ॥सकटकेबीचपद्मपद्मबीचसुचिव्यूहदोयदस-
कोसताहीदेवहूअटैनहीं ॥अटनकियोहैंताकूंऐसेसातकीकोसी
सछातीचढभूरिश्रवाकाटैपेकटैनहीं ॥१८॥ ॥दोहा॥ ॥
युधमन्युउत्तमौजहैं द्रुपदपुत्रभयद्रोन ॥नररथांगरक्षकतोऊ
व्यूहवाह्यकियगोन॥१९॥ ॥संजय॥ ॥सोमदत्तताकोस
नी काटनलागोसीस ॥करीदयाजीवतलज्यौ उनभजिज्या-
च्योईस ॥२०॥ याकेसुतकोमोरसुत मृतकप्राययुधमांहि ॥क
रैविलपसुनिधुरजटी तथाअस्तुकहिताहि ॥२१॥बन्योजोगता
तेइहै कृष्णकह्योनरदेखि ॥आयोकुरुदलसिंधुतर गोपदडूबत
लेखि ॥२२॥ ॥अर्जुन०॥ ॥प्रेरयोममहितसातकी
कीनोनृपतअकाज ॥इनयाकीरक्षाउचित इनजयद्रथवध
आज ॥२३॥यूंकहिवामहिपानितैं प्रष्टअदृष्टहिबान ॥मोरच्यो
भुजभूरिश्रवा षडगजुक्तकियहानि ॥२४॥त्यागिसस्त्रसंन्या
सलै कही किरीटीदेख ॥तोकूंऐसीउचितक्यूं पुनिसंगतिफल
पेखि ॥२५॥लरतआनतैंभ्रमतमैं ममभुजछेद्योसोइ ॥ कृ-
ष्णमित्रविनक्षत्रतें यहअधर्मनाहिंहोय ॥२६॥ ॥अर्जु०
॥ ॥राजपुत्रनिजसैन्यकूं राखिलेतभयबेर॥ बनीनरच्छा
अंगकी कृष्णहिनिंदतफेर ॥२७॥ ममहितआयोसातकी
तजिआसानिजप्रान ॥ताकोमृत्युसंकष्टमें क्यूंनहोउतनआन
॥२८॥ इनतैंसातकिभूमितैं सोईरिचढुउठाई ॥ कृष्णादिकबरज
तरहैं दूरकियेसिरकाय ॥२९॥ ॥कृष्ण०॥ ॥ दारु-

कसातिकिकूंकरहु ममरथपरआरूढ ॥ जौलौंगांजिववानतैं मरैसिंधुनृपमूढ ॥ २९ ॥ ॥ युधिष्ठिर ॥ ॥ पांचजन्यकीघोषसुनि कह्यौभीमकूंदोर ॥ देवदत्तधुनिविनुसुने मनअकुलावत मोर ॥ ३० ॥ नहींकपिध्वजकीकुसल कृष्णलरत ममकाज ॥ द्रोनव्यूहविचगोनकूं औरकोनतूंआज ॥ ३१ ॥ कहिहैसबहित-अनुजके तजीसातिकीदूरी ॥ करहुधनंजयतैंअधिक जाकोजतनजरूर ॥ ३२ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ सातिकीजूंभीमहूंकों पठायोकिरीटीकाज द्रोनतेंरुनाएकदुबादवीररसमें ॥ मैंनाकिरीटीसिष्यतसात्यकीप्रसिस्यनाहींहारिकढोंकैसेज्यूंकटैहेतेरेबसमें ॥ रेरेद्विजनीचअवमानतहूंसत्रुतोकूंजीतेबिनवैसेकैसेजेहुनानिकसिमें ॥ धनुभुरवीकेरथनेमिउरवीकेघोसगदागुरुवीकेत्यूंरुनाएदसादिसमें ॥ ३३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकगदाहतकरदियो अस्वसहितरथचूर ॥ नातरजमपुरभेटलें द्रोनकूंदिगयेदूर ॥ ३४ ॥ एकतीसएकदिवसमें चवदानिसाबिचपूत ॥ तेरेजमपुरकोगये हतेभीमरनधूत ॥ ३५ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ पांचवेरभीमतैंभोपराजैदिनेसपुत्रएकबेरसोईजीत्योभीमकोंबकारि-के ॥ जैसोशस्त्रलीनोतैसोकाटकेद्विधासोकीनोमृत्युगजआनसूंहीछेद्योवानमारिकें ॥ धनूकेअणीतेंद्योदादेकेकदुबादकहेरवायोकरीबोहोतउठायोकरोह्मारिकें ॥ आजपीछेजुद्धकोंविचारकेपधा-र्योकरोतुल्यसत्रुधारिकेमैंकहतपुकारिकें ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मरनप्रायकरिभीमको नामार्योयहहेत ॥ कुंतीकोंचहुपुत्रको दियोवचनकरचेरत ॥ ३७ ॥ ॥ अर्जुन ॥ ॥ करनवांचधाभीमतें क्योंनपराजयवाद ॥ एकबेरतूंकरिविरथ बोलतहैदुरवाद ॥ ३८ ॥ धूकअसूयकजनकी दृष्टिबुद्धिइकभाय ॥ तमपरऔगुनमेंफुरे दिनपरगुननलखाय ॥ ३९ ॥ निजकुत्रिन-

यनिजपानितें मर्दतटूकअलाद ॥ होयतहोयस्वमुखहितें अ-
सकृतकोअपवाद ॥ ४० ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कुइसैन्यबाह्य
मिलिद्रुपदपुत्रअरुमिलेसातकीभीमअत्र ॥ इनाबिनहिएकअर्जु
नउदार ॥ कियेसत्रुविकलसुरअभयकार ॥ मूर्छितकियेकृपकू
एकबान ॥ सुतद्रोनभग्योलैंमातकजानि ॥ मद्रदेसअकियखंड
खंड ॥ पुनिहतेदुसासनयहप्रचंड ॥ रथभगेंअस्वलैमरेसूत ॥ त्रष
सेनकरनदोऊपितापूत ॥ भूरिश्रवसातिकीकियोनास ॥ दुरयोध
नभाजिगोद्रोनपास ॥ उतदेखनरिनअरिसिरउडाय ॥ चितक्षुभित
कियहरसरचलाय ॥ ४१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बहुतनमिलिकीनोवि
कल अभिमनदलविनएक ॥ धन्यएकगांजीवधर कीनेविकलअने
क ॥ ४२ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ अरुहीतेकीनोहेसरोवरअनूपरु
पकीनेनिरसल्यअस्वनीरहूपिवायोहै ॥ भूरिश्रवाभुजाछेदिसाति-
कीबचायलीयोतासोपुनिभासनभीसबकोसुझायोहै ॥ सिंधुनृपर-
क्षाकाजअष्टधनुधारीठाढेतिनकोंदबायकीयोआपमनभायोहै
॥ सीसछेदिताकोदसजोजनउडायताकेपितायदडारिसिरताहीकों
गिरायोहै ॥ ४३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जयद्रथहिमारिपु-
निफिरेजोध ॥ रिनकवनातिनहिकरिसकेरोध ॥ श्रीकृष्णकहतरि
नभूरुभाव ॥ पार्थलखीयहगांजिवप्रभाव ॥ केउपरेबीरसिरखुले
केस ॥ बोलहिजनुफाटेचरवविसेस ॥ गजपरेइतेंरथपंथरून्ध ॥ जा
जुल्यकियोजहांजवनजुद्ध ॥ केउपरेधनुषत्राक्तीनिषंग ॥ कहु
अधोभागकहुअर्धअंग ॥ कहुचमेवमभूषनाकितेक ॥ कहुअ
स्वरथनकेअंगकेक ॥ इतहतेअस्मजोधाअपार ॥ सातिकीकि
योअरिदलसंहार ॥ यूंकहतयुधिष्ठिरनिकटआय ॥ लखिविज
यविजयजुतकंठलाय ॥ पटकुतैमिल्योकरिहृदयलीन ॥ नृपमा
निजनभजिनकोनवीन ॥ भगिनीपतिमार्योसुन्योभूप ॥ तव

पुनपरयोदुषदीर्घकूप ॥ वहसमयगयोद्विजद्रोनपास ॥ नहिंसि थरस्वासडारितनिसास ॥ वहश्रमितवृद्धद्विजश्रप्रमाद ॥ बोल्यौ फिरातिनतेंकटुकवाद ॥ तुमविजयविजयकीचहीतत्र ॥ अजय ममचहतगमपरीअत्र ॥ जानिकरिपार्थतुमदियोजान ॥ साति- कीवृकोदरसथसमान ॥ जयद्रथहिजियतरविअस्तजोत ॥ तो जरतपार्थममविजयहोत ॥ मैंआपभरोंसेकस्याजुद्ध ॥ करत ममसैन्यअरिनासक्रुद्ध ॥ यहसुनतकह्यौद्विजद्रोनआप ॥ निस रचहुजुद्धममलरविप्रताप ॥ ममरचुलहिकवचकेमृतककाय ॥ अ थवाकिखुलहिसत्रुनमिटाइ ॥ ४४ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ द्रोनद्रगदुसहदिखायकेसुयोधनकोकहेंदाघेबेनतबेस्करताकिते गई ॥ अष्टधनुधारीबीचजयद्रथबच्यौनहायजीयकीअरुजयकीउर आसतौरितेंगई ॥ पहलेंहुजतनकस्योनप्रानरारववेकोअबतो सबसैन्यहूकीआयुसडेंतेगई ॥ जादिनतेंभीसमसरसेजपोढे तादिनतेंबडेबडेबीरनकीबीरताबितेंगई ॥ ४५ ॥ सुनकेकटुक वादनृपतसुयोधनकेद्रोनकहेंकाहेंनृपउच्छवकरेंनहीं ॥ अष्टम- हारथीतुमरक्षकनिरर्थभयेहत्यौसिंधुराजतातेंभवस्यटरेंनहीं ॥ द्वादसहीकोसपरयंतमेरोरच्यौव्यूहतामेंएकमहारथीसातकीडरेंनही ॥ जबतेंनद्रष्टपरेंध्वजादंडभीसमकोतबहीतेंविजेतेरोद्रष्टहीपरें नहीं ॥ ४६ ॥ ॥ धृतराष्ट्र० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संजयममजा मातुको बद्धभयोस्कानिकान ॥ आचारजकाकरतभयो कह हुबखानिसुजान ॥ ४७ ॥ ॥ संजय० ॥ ॥ पठयदूतस्त धर्मपैं क्हेंहैंनिसिजुधघोर ॥ देहुपयादीसैन्यको हातदीपदहु ओर ॥ ४८ ॥ रथदिगपांचरुद्विरददिग चारतीनहयपास ॥ य हअनुक्रमदोउसैन्यबिच भईमुसालप्रकास ॥ ४९ ॥ सुगंध तैलमयरतनमय भयेव्योमसुरदीप ॥ देखनजुधकौतिकमिलें

अछरबरनअवनीप ॥ ५० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ जबसिंधु
नरेसहत्यौतिहक्षोभतें पुत्रपिताअतिदुर्धरसे ॥ नृपता छिनबा
चलबीचदिखापरेनासविराटकेह्वैहरसे ॥ मनुहाटिककस्यपमहा
रनकोंविषखंभकेजाहरनाहरसे ॥ द्विजद्रोनरुद्रोनियछत्रिन
मेदोउदोयभृगूपतिसेदरसे ॥ ५१ ॥ दलपांडुनबीचविहारकरैंदूज
जाकोंनिरोधकीकोनकरेतथ ॥ जामगद्रोनकटैरनक्रीडतभोनृपसो
हुकठोरमहापथ ॥ पित्रनहीतेंमिलायदियेकेऊऔरबचे तिनकीसु
नियेकथ ॥ श्रोनतुरंगहैंसारथीश्रोनहीश्रोनध्वजाअतिश्रोनरथी
रत ॥ ५२ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ मलैंहुकीअंचकेसमानबानिबैठो
द्रोनतापैंधृतरूपबैननृपतसुनावेहैं ॥ मारिबोहीधारिकेसंधार-
वोविचारिसत्रुबीरताअपारतनत्रानभेंनभावेहैं ॥ पलितहैकेसकर
ललितचलाकिचित्रकिरीटीजवानतोहूउपामानपावेहैं ॥ जाहीओ
रलखेताकीआयुसाविरंचिहरितीनपचोंदिसामंचखालींदरसावेहैं ॥
॥ ५३ ॥ रथबिनरथीकेऊसारथीविनाहैरथमावतविनाहीगजदस
हीदिसाभ्रमाय ॥ धोरेविनजोरेकेऊजोरेविन धूमेकेउमरेभूमेकटे
कहेविलुलायहाय ॥ तनविनत्रानकेत्रानविनकेतेतनम्यानविा
नसस्त्रकेतेसस्त्रविनगोतेखाय ॥ जत्रजत्रगोनहोत द्रोनकोसुत
तत्रतत्रसत्रुसैन्यछिनमेंविचित्रचित्रजानीजाय ॥ ५४ ॥ डोलत
पुहमिदसौंदिसहूकेदिग्गजतेधूजतधरतपांवधीरजधरेंनहीं ॥
जोगनकेजूथचितचक्रतचहोंधाचींतेफिरतअत्रसतत्रपत्रतोभरे
नहीं ॥ वीरभद्रआदिनकीमुंडमालकियेमानिथिकविलोके
विदारांकरधरेनहीं ॥ देषियेअमोघबलकोरवदलदावानल
पांडदलयोधनकोंअच्छरवरेनही ॥ ५५ ॥ मेरेजानेजमदग्निक
रीहौनिछत्रीभूमिएकवीसवारकोपतोहुनासिरायोहै ॥ पिता
केनिवारिवेतेंसांतअतलीनोहै पैद्रोनव्याजहीतेंतेजबानदर

सायोहै ॥ एकनिसाद्योसवीचक्षोहनीरवपाईसाततताकीविद्या घोरहीतैंदोनूंदलघायोहै ॥ पिताकहैधन्यपूतपूतकहैधन्यपि तापितापूतदोनूंरूपभलेकोदिखायोहै ॥ ५६ ॥ ॥ सवैया ॥ नपरैद्रगगोचरश्रानकछूगमिकैसबकीजनुबुद्धिगई ॥ अरुअश्व रथीगजसारथीतेउध्वजाध्वजदंडनआदलई ॥ रनव्योमपताल दिसाविदिसासकमनोचरूकथाहिजरूपभई ॥ जितहीतितपांडव सैन्यतितेसबहीसदलक्षैरह्योद्रोनमई ॥ ५७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ करनकह्योनृपद्रोनकों गिनहुनकछुअपराध ॥ जुद्धअमि तअरुवृद्धवय नकरुबचनतेंबाध ॥ ५८ ॥ देखहुमेरोजुद्धअब करिहूंसत्रुनिकंद ॥ देहूंतोकूंविजयजस हतिकोउपांडव नंद ॥ ५९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सजिचल्योकरन जहांमहासूर ॥ कियनासपांडवीसैन्यक्रूर ॥ निजसैन्यकूक सुनिकपीकेतु ॥ हरितैंकियविनतीजुत्तहेतु ॥ अबप्रेरहुममर थकरनओर ॥ करिरह्योसैन्यकोकदनघोर ॥ मारिहोताहिति हूंपुत्रमारि ॥ पुत्रकोंसोकलहैविचारि ॥ यहसमयकृष्णकही गूढअर्थ ॥ करनतेंभिरननाहिंसरसमर्थ ॥ हरिकह्योहिडंबासुत हकारि ॥ निसजुद्धतोहिलायकनिहारि ॥ ६० ॥ ॥ घटोत्क च ॥ ॥ राक्षसीअक्षोहणीसैन्यओर ॥ ममहतीद्रोणसुत अबहिघोर ॥ तोउकरिहुंमायासहितजुद्ध ॥ करनकूंरोकिरारव हुसक्रुद्ध ॥ यूंकहीरुगमनकीनोअकास ॥ परबतनकरीबिर खाअकास ॥ निजसैन्यसुयोधनहोतनास ॥ लखिकह्योकरन प्रतजुतत्रितास ॥ ममसैन्यप्रलयसबहोतआज ॥ फिरसक्ति वासवीकवनकाज ॥ मोरवीसुकरनयहसुनतवैन ॥ इकवीर घातनीसक्तिऐन ॥ घटोत्कचमारिगईइंद्रधाम ॥ सकनिहर षाकियोदिगविजयस्याम ॥ ॥ अर्जुन ॥ ॥ कियह

रघसोकठांकवनकाज ॥ ॥ कृष्ण० ॥ ॥ यह मरतबच्यौ
तूंपार्थआज ॥ ६१ ॥ ॥ धृ० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संजस्वान
बराहकी स्वपचकरावतरारी ॥ मरेदोऊबिचएककै वाकौहि
नहिविचारी ॥ ६२ ॥ त्यूंहीकृष्णाकेकरनवा मरैभीमस्कतप्री
त ॥ नरकोवचवोभूमिको भारनहारनदोउरीत ॥ ६३ ॥ कट
तसैन्यदोउसरवरी तीनजामगइवीत ॥ हटतनकोउपरसप
र सकतनकोंऊजीत ॥ ६४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पहर
निसरहीफिरकह्यौपाथ ॥ सयनअबकरहु कछुउभयसाथ
॥ यहसुनतसबनदीनीअसीस ॥ विजयतबहोहुनरविसावी
स ॥ सबहयगजरथपरसयनसेन ॥ निद्रागतकीनी मिलतनै
न ॥ पुनिवजेवीरवादिनप्रात ॥ लरतेअरुमरतेनृपपललरवा
त ॥ प्रथमदिनपांचपांचालपुत्र ॥ जमपुरहिपठायेद्रोनजत्र
॥ सोइक्षोभलियैनृपजिज्ञसेन ॥ द्रोनतैंभिर्‍यौदुपस्कहदद
न ॥ द्रुपदकेद्रोनकेलगेबान ॥ परवसहिविथातुरभयेप्रान ॥
जिहिसमयजर्‍यौद्विजकोपज्वाल ॥ कियरुद्ररूपमनुप्रलय-
काल ॥ द्रुपदकोकाटिसिरभूमिडारि ॥ चौपाटपतीपुनिलि-
योमारि ॥ वहसमयधृष्टद्युम्नसुअभीत ॥ पैंसटहजाररथजु
तप्रतीत ॥ बदलोपितुलैवेकाजवीर ॥ आयोसुभिर्‍यौद्विजतैं
अधीर ॥ जूटेदोउसेनापतीजुद्ध ॥ कियेसत्रुनासद्विजसहित
क्रुद्ध ॥ हतद्रोनरथीपैंसटहजार ॥ बचायोसत्रुकारनबिचार ॥
फरिविरथआपकोहतकजानि ॥ मोच्यौस्कधृष्टद्युम्नहिपिछा
नि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ धृष्टकेतुशिशुपालसुत मगधपतीसह
देव ॥ भिरेबहुरिरिनभूमिमे मार्‍यौद्रोनअजेय ॥ ६५ ॥ ॥
सवैया ॥ ॥ दिनद्वैनिसएकजुरीनहिद्रोनकी संधिउपास
नअंजुलिका ॥ बहुवीरनपांडुनकेबरवेउतरीकेउअच्छरआ

बलिका ॥ वरमालकेकारनहेरतही फिरतेपरेपायनमेंफलिका ॥ सुरराजकेबागसुनंदनमेंकहांपुष्पजहांनमिलेकलिका ॥ ६६॥ सोमकसंजयनाकषिजेपरआसरवगेंद्रसीमानतताकी ॥ सांध्रतछोरत्तसत्रुप्रहारतेंचीन्हपरेनहिशस्त्रचलाकी ॥ चारकह्योसनिसाइकमेंबिरलेतहांबीरवचेफिरवाकी ॥ सातअक्षोहनीपांडवसेन्यकोएकहिद्रोणइकारगोडाकी ॥ ६७ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ जैद्रथकीरक्षाकाजटाढोभयोजबहीतेएतेबीरमारेगिनेपावेंकविपारको ॥ द्वादसपहरबीचभईषटसंध्यातामेनाहीबन्योकर्मकछुद्विजकेविचारको ॥ केतोदेवतरपनमेंकेतेपितृतर्पनमेंअर्पनकियेज्यूंसत्रुकरिहैउदारको ॥ तीनअक्षौहिनीकोसंधारकियेएकादशीद्वादशीमेंपारनाभोपेंसटहजारको ॥ ६८ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ सलभानसमाजजेद्रोनकेबानप्रयानतेभाननभानपरे ॥ कितनेअसमानसमानकितेकबरवाननपाननपांवटरे ॥ कटप्रानकितेसुरथानचलेसुविमाननबैठिकेबाटडरे ॥ तितग्यारसप्रानतेंद्वादसीसांझलोंरातिप्रभातिनजानिपरे ॥ ६९ ॥ दोहा ॥ ॥ रिरवनकह्योमिलिद्रोनतें करहुसस्त्रअबत्याग ॥ यहअपनोनहिधर्महै करिहरितेअनुराग ॥ ७० ॥ कह्योकृष्णस्वतधर्मतें ताहीसमायसिरवाय ॥ हत्योअश्वत्थामाइति द्रोनहिकहहुसुनाय ॥ ७१ ॥ दूरद्रोनतेंकोसइक लरतहुतोनिजपूत ॥ प्रेर्योनृपकुंतिहसमय जयकारनहरिधूत ॥ ७२ ॥ ॥ जुधिष्ठिर ॥ ॥ बोल्योंझूठनआजलूं सहजाहिमेंजदुराय ॥ केसोबोलूंपूज्यद्विज द्रोनबधकेकाज ॥ ७३ ॥ ॥ श्रीकृष्णव ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ छलबलतेंकीजेशत्रुनास ॥ यहकहतराजनीतिहिप्रकास ॥ निजसैन्याहिरदअश्वत्थामनास ॥ व्रकोदरहत्योसुनिकृष्णकाम ॥ सबहिनिमिलिप्रेर्योधर्म

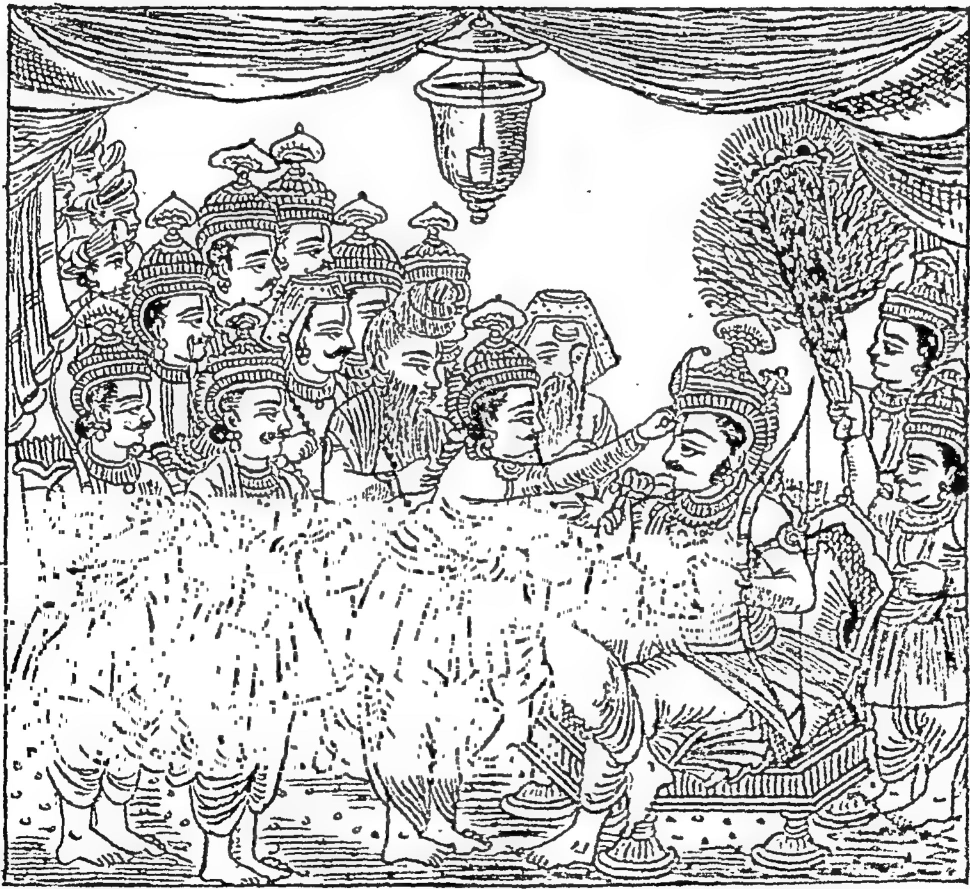
राज ॥ यह करयो वचन द्विजतें अकाज ॥ वधपुत्र अप्रिय अतिसु
नेबोल ॥ तजिसस्त्र भूमिआसन अडोल ॥ करिदियोस्वास भ्रकु
टीचढाय ॥ यहसमय द्रुपदसुत निकट आय ॥ छेद्योसुखड्ग-
लेद्रोनसीस ॥ होउसैन्य कह्योधिकधिक अनीस ॥ ७३ ॥
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कपटवादसुत धर्मके सुनकर प्राणायाम ॥
धृष्टद्युम्नकौं निमतदै गयोवीरसुरधाम ॥ ७४ ॥ सहसराज-
सत गज अयुत तीनसहसरथवृंद ॥ भयेपयादे दोनकर
चवदालारवनिकंद ॥ ७५ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ द्रोनकांप
तनदेखिसैन्यदुर्योधनकी अष्टविधसात्विककोसेवन करतहै ॥
पायनपयादे भगेबाहन विकलदेखिकेतेसूरधीरनके आयुधगि
रतहै ॥ केउमरेकुंजरकेप्यंजरप्रवेसकरेतेउपलचारनके मुखतेम
रतहै ॥ अपजस अजैसोकभयके भयंकरसे दुस्तर समुद्र चारु
सहजेतरतहै ॥ ७६ ॥ उमरतोबरषपंचासीबीचमहाबाहु औ
रकोजवान हूकीउपमा घटैनहीं ॥ विचरतरह्योजालोंउ भयसं
ग्रामाविषेंशत्रुकीबलैंनजाकेसस्त्रहू न हटैनहीं ॥ मारेद्रोनकहां-
द्रोनइहैंद्रोनहतोद्रोनऐसोहिबकतरोगमानसीकटैनहीं ॥ आंखि
नतें हदे हुते पांडुसैन्यवीरनके द्रोनतो मिटौपैचित्र द्रोनको मिटै
नहीं ॥ ७७ ॥ प्रकटपिताको परलोकपेखिपानन मेंपैनेबानपक
रिपिनाकीसो लखापरो ॥ नारायन अस्त्र निरमुक्तकीनो सत्रुना
स अर्जुनतें आदिनाहिं औरतें सिखापरो ॥ पायनपयादे पुंजस
स्त्रकेधरेपरोक्षपारथलौंपांडुसैन्यपीरखमखापरो ॥ दीहभद्रद्रो
नीदलदोवनकेबीचहूद्रोननतोपरोपैदसद्रोनसो दिखापरो ॥ ७८
॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णकह्यौ यहअस्त्रको औरनसांति
उपाय ॥ तजिबाहन सबरअनजि परियेमन क्रमपाय ॥ ७९
॥ ॥ सवैया ॥ ॥ द्रोनकेपुत्रके अस्त्रकेतेजतें त्यागि-

मरोरकैंगैरमजे ॥ वाहनसस्त्रतेदूरधरे सबकृष्णकीसीरवन बेरसजे ॥ भारतजैंग्रहिस्सूरउदैनहिमातपृथापयपानलजे ॥ नीमपयारलूंपावअचालकूं क्षत्रत्वसीमकौभीमतजे ॥९०॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भयोसस्त्रमयअग्निमय भीमसेनपरव्यूह ॥ कृष्णविजयसबसस्त्रतिह छिनहीमिट्योसमूह ॥ ९१ ॥ व्रथाभयो सुतद्रोनको वहनारायनअस्त्र ॥ विकलभईतवसैन्यनृप गहे पांडवनसस्त्र ॥९२॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ मैंहुकह्योताहिस मयसकुनीदुसासनतैंमानीनावसीठीनबैकहाहियसूनोहो ॥ पांचघोसनिसा एकशत्रुकेमिटाईमिटयोसोतोद्विजराज देरवोसबही तेजूनोहो ॥ ताहिविनकुरुसैन्यभ्यासतअलूनोअबमामाभाग नेयबीजबोनहारदूनोहो ॥ गांजिवकीभारबीचक्यानअंगभूनो होजूद्रोनबोयलूनेंजेसेक्यूनबोयलूनोहो ॥९३॥ ॥ धृतराष्ट्र० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ भीममहाभुजदीपप्रकासमेंमोसुतसं धपतंगज्यूंनासत ॥ बाडवकोपबेलाल चीबेस्यजूंनावप्रवेसनें- कनत्रासत ॥ भीमभुजानकेबीचसदाजमराजकौराजसमाजप्र कासत ॥ संजयमोंसुतकंजकोक्यारबयारतुषारज्यूं भीमविनासत ॥९४॥ बिचदीपकजोतपतंगगिरेकोउनासव्हैकोउडिजावतहैं ॥ जमराजकेलोकगयेकुजियेतिनकीजगबातसुनावतहैं ॥ वडवानलबीचपडेकुबचेकरसूतमुकुंद दिरवावतहें ॥ सुनिसंजयमोरकतकालग्रसोभरभीमतेकोऊनआवतहें ॥९५॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ ॥ जलहूतेंआगवडवागहूतेंजेसेजलकेसरीतेंजेसीविधकुंजरनिबलहैं ॥ वाजतेकपोतजैसेतारखतैंउरगतैंसेपोनसेप्रचंड गोनअभ्रजूंविचलहै ॥ इंदुहुतेंइंदीवररुद्रतेंत्रिपुरक्षुद्रइंद्रहु तैंदैत्येंद्रजाविधिविकलहैं ॥ पाछलेसत्रुजैसे संजयसंघमेरेंसूतप्रथमकेसत्रुजेसेमारुतप्रबलहैं ॥९६॥ ॥ सवैया ॥

कोपाछिपीवडवानलआहितिमंगलग्राहगदाधनुधारी ॥ बान महाउरगादिकहैउरमीसुमनोरथव्योमविहारी ॥ नावकौदाबकछुनलगेद्विजद्रोनसीकर्नसीफारपछारी ॥ मोसुतनैकनपैरिसकेभुजभीमभयंकरसागरभारी ॥ ८७ ॥ रनमेंभिरकेहिरंबासुरसोरुबकासुरसोनविछूटहिगो ॥ फिरकीचकसोरुजरासंधसोकुलदोवनकोसिरकूटहिगो ॥ जगमेंनहिंसत्रुबच्योजिनतेतिनतेसुतजीवनतूटहिगो ॥ भिरभीममहाभुजपाहनपायसुयोधनसोघटफूटहिगो ॥ ८८ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ गांजीवधनुषजहांअरवयनिरवंगदोयवन्हिदतवाहनयहमारुतकेमीतहै ॥ सारथीहैकृष्णभीमसातकीसिखंडिओरधृष्टद्युम्नआदिवीरजगतअजीतहै ॥ देवद्विजदीनग्रधसेवानृपसावधानबेदकुलकलोककीमजादबीचप्रीतहै ॥ रविकोउदयकोज्यूंनिश्चयप्रतीतजैसेयुधिष्ठिरविजेहुकीविजयेप्रतीतहै ॥ ८९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ होबलबंडजरासंधीसोतिनतेंगयेभूपनकेगनकेदटओरकीकाजगदीसभगेसोईभीमपछारिकेमारिलियोऊट ॥ जीतिसुरेससहाईसुरेसकीकीनीकपिध्वजलोककहैरट ॥ कोतिनजीतसकेसुनिसंजयहैजहांभीमधनंजयसेभट ॥ ९० ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ ॥ कीरतननारदसो १ सोनकसोंसुनिबोहे २ पूजनप्रथूसो ३ पदसेवरमारानीसो ४ ॥ दासत्वहनूसो ५ सदाबंदनअक्रूरजेसो ६ आत्मानिवेदबलिदैत्यराज्यदानीसो ७ ॥ सखापनउधवसो ८ समरनसेसकोसोमनूसीतपस्याज्ञानदत्तात्रयज्ञानीसो ॥ नारायनजुक्तनरऐसोताकोजीत्योचहहेकोनमूढमेरेपूतअभिमानीसो ॥ ९१ ॥ ॥ ॥ संजय ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सेनापतिसुतद्रोनको चाहतहोतवपुत्र ॥ करनछतेद्रोनीकह्यो यहेउचितनहिअत्र

॥९२॥ करनहिसेनापतिकियो सोपिअक्षोहिनीपंच ॥ तीनरहीसतधर्मके तेउनहिरहिहैरंच ॥९३॥ लेआज्ञाकुरुक्षेत्रप्रति चल्योसूतसिरनाई ॥ फिरजेसोजुधदेखहु तैसोकहिहुंआई ॥ ॥९४॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकाद्रोनपर्वणिद्वादसममयूखः॥१२॥ ॥श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु॥ ॥श्रीरस्तु॥

अथकर्नपर्वपूर्वार्धप्रारंभः



श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथकर्नपर्वसूचि॥ ॥दोहा॥ ॥ ॥वैशंपायन०॥ ॥ लखिद्वैदिनकोजुद्धपुनि संजय

परमसयान ॥ कहिन्नृपतेंतवपुत्रको काटचोकर्नतनत्रान ॥ १ ॥ ॥कवित्त॥ ॥ भीमबडवाब्धिजाकोनेकहुनकीनोभयसातिकीतिमंगलकोत्रासहुनमान्योराज ॥ नकुलसहदेवधृष्टद्युम्नसिखंडीजेसेमहाबलत्राहूनकोचिंत्योनाकछुइलाज ॥ किरीटीकेकोपवायुचंडखंडखंडकीनीगांजीवलहरचलीलोपिकेप्रमानयाज ॥ जातेंनृपचाहतहोत्र्यावहसमुद्रपारसुयोधनवारकर्ननवकाडुवानीत्र्याज ॥ २ ॥ पंकजुक्तभयोद्यूतक्रिडातेंयुधिष्ठिरकेयसकोसरोवरसोनिकेकेनिषरिगो ॥ पोनपुत्रकोपकोप्रचंडपोनगोनतातेंचोकरीचंडालमेघमंडलविखरिगो ॥ पानकियेदरिवश्रोनभीमकोदुसासनकोमहलताकोटूटिभूसिखरिगो ॥ कर्ननदीगांजीवकीफेटतेंसुयोधनकेविजयमनोरथग्रछमूलहिउरवरिगो ॥ ३ ॥ मेरुकोंचलनइंदुरथकोपतनभूमिउदयप्रभाकरकोप्रतीचीमेंकहेंकाहि ॥ सिंधुकोसोसखणत्र्यदाहतेजत्र्यगनीकोफटिबोभूगोलकोसोसंजयविन्दारोजाहि ॥ च्यारूंपांडुपुत्रादिसाजीतिकोंजितेंयायेकन्यायतेंकोत्र्याहवमेंदेवदैत्यजीतेताहि ॥ कोउनिरसंसेएतिबातेंसुनिमानैजोपेंतोउनिरसंसेमेरेकर्नकोपतननाहिं ॥ ४ ॥ ॥सवैया॥ ॥ मारुतिकोविषदीनोजबैदससाहस्रदंतिनकोत्र्यसुलायो ॥ जारतहोसोजरचोपरधानउतेंनृपद्रोपदतेंबलपायो ॥ त्र्यापनकाजगयोद्विजराजसोत्र्यासिषदेहमहीतेंरुसायो ॥ त्र्यंधकहेंमम्पूतहेंत्र्यंधतेजीतकेकोजूधद्यूतबनायो ॥ ५ ॥ ॥सोरठा॥ ॥ करनमरनसुनिकानुहियनफटतकहावज्रहे ॥ कितसुतविजयविधानमानहानिजानीपरी ॥ ६ ॥ ॥दोहा॥ ॥ करचोजुधकेसेकरन मरचोकर्नकिमतात ॥ डरचोमोरचितपुत्रहित कहहुजथारथवात ॥ ७ ॥ ॥संजय०॥ ॥

मच्छव्यूहकीनीकरन धृष्टद्युम्नशशिअआध ॥ भिरीपरसप
रसैन्यदोउ होनलगेनृपबाध ॥८॥ ॥कबित्त॥ ॥भी
मद्रोनीदोबनकेयुधकोसमाजभयोलागेनरदेवधराव्योमबीच-
ध्यानसे ॥दोवनकेकेसरुद्रदोऊयहैऔरऔरदोवनकेटूटेध्वज-
मानअप्रमानसे ॥दोवनकेकवचकटेहैफटेवस्त्रजैसेदोवनके-
अंगहैफलासकबीनपानसे ॥दोउनकेबानलगेदोउनकेआनिभ
गेदोवनकेज्ञानटगेदोवनकेप्रानसे॥९॥ ॥छंदपधरी॥
॥ ॥यहरीतिभयोमिलिद्वंद्वजुध॥कुरुपांडवजूटतसहित
क्रुध॥कुलबिरदनामनिजसन्नुवंस॥परसपरसुभटबोलतप्रसं
स॥नृपतीरमंत्रकोयहविलास॥निजवंसहोतदोउओरनास॥
पांडवीसैन्यबिचगतीपाय॥हजारनकरनदिसेमिटाय॥दरस
भिरेभीमतेंतोरपुत्र॥जमलोकगयेदिनप्रथमजत्र॥लखिप्रल
यरूपनिजदलबिदार॥करनप्रतिनकुलबोल्योंहकार॥धनिआ
जादिवसरिनबीचधूत॥सबकलहमूलतूंमिल्योसूत॥तेंबये
बीजकुरुकुलअन्याय॥दैहुंसजमनीपुरपटाय॥जोअबहिभा
गिजेहैननीच॥मिलिहैनकुटुंबसीरचढीमीच॥द्रुपदाकेकढि
हैबचनसाल॥सुखसयनकरहिंधरमजभुवाल॥यहसुनतक
रनबोल्योअभीत॥नहिंबहुतबोलिवोसुभटरीत॥पौरसहि
दिखावतकरसंग्राम॥ऐसेनसुभटबोलतअकाम॥यूंक
हतचलेमार्गणअपार॥यतउतहिभयोबाणांधकार॥सरभर
दोयघटिकाभयोजुद्ध॥कर्नकोभयोपुनिविसमक्रुद्ध॥नकुलके
अथमचहुअस्वमारि॥सारथीएकबानहिंसंहारि॥धनुषनि-
खंगपुनिध्वजादंड॥हनिवानाकियेसबखंडखंड॥ढेरवड्गचर्म
पुनिसमुखदोरि॥तेउबानमारिदियेकरनतोरि॥मार्योन
अथावायकरसभारि॥कटुबचनकहेगरधनुषडारि॥ऐसीन

कहहु मुरवकबहु बात ॥ समभटहि निमंत्रण करहु तात ॥ अनुजरथभयो आरूढ आप ॥ विनुरद करंडगत यथा साप ॥ धनिधनि नृपमानतहु सधीर ॥ त्रयगर्तपतीके अनुगबीर ॥ ज्यूं ज्यूं समसमकमरतजात ॥ त्यूं नरतें भिरत न मुरततात ॥ अर्जुन तवसेना सांऊवेर ॥ अतिकरी विकल नृपघेरि घेरि ॥ भोकरन थकित थिर टेरि टेरि ॥ सब भगत कपिध्वज हेरि हेरि ॥ कटि परे वीर केउ समर घोर ॥ अवहार भयो दोउ सैन्य ओर ॥ ११ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कह्यो लोरस्कृत करन प्रति डेरन हृदय विचार ॥ मानत होत व भुजन पर सरब जुद्धको भार ॥ १२ ॥ सो इत तव देरवत सैन्य मम करी किरीटी नास ॥ जीवेको जयको व हुर रारवहु कस विसवास ॥ १३ ॥ ॥ कर्न० ॥ ॥ रथ हय सूत निरवंग धनु नरसनसमें नांहि ॥ तिहि समान जुध करत तोउ कहत न्यून मम कांहि ॥ १४ ॥ सल्य कर मम सारथी लेहु विजय धनु हाथ ॥ रारवहु ढिग वानन सकट कहा विचारो पाथ ॥ १५ ॥ परसराम दत्त विजय धनु बहु दिन पूजत चान ॥ अर्जुन हित रारवेउ भय अहिहू वज्र समान ॥ १६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ तव पुत्र मद्र भूपति बुलाय ॥ सब कह्यो कर्न वांछित सुनाय ॥ मम विजय तोर आधीन आज ॥ हांकिये कर्न रथ मोरकाज ॥ तुम अस्वकुसल कृष्णहि प्रमाण ॥ है कर्न रथी अर्जुन समान ॥ कर्न धनु विजय पुनि पूज्य बान ॥ तुम जुत्त हरा हि कपिकेतु प्रान ॥ कपिकेतु विना भी मादि ओर ॥ तत काल पठेहु पित्रठोर ॥ तजि भागनेय मम किय सहाय ॥ यह पूर्न सुजस तो हि मिलहि आय ॥ १७ ॥ ॥ संजय० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गयो युधिष्ठिरतें मिलन सल्य प्रथम वैराट ॥ मातुलतें ज्यांच्यो नृपत समऊभविस्यत घाट ॥ १८ ॥ तुम्हें सुयोधन जाचहै करन सारथी काज

॥अकरनहुकरियोअवसि मेरेहितमहाराज॥१९॥ करनस्तु तिकेअधिकबल निंद्यातेंबलछीन ॥ कैसारथीनिंद्याकर-हु होहिदुष्टमदहीन ॥२०॥ तथाअस्तुबोल्यौतौउ नल्योस ल्यतिहिकाल॥ करनप्रानरखंडनकरन कहेवचनाजिनुसाल॥ ॥२१॥ सूतपुत्रकोसारथी करतनृपतकूंआज॥ मेंभगनासु तआयुग्रह भलेतजेतवकाज॥२२॥ ऐसेकहिनृपउठिचल्यो करहुंजुद्धइकंत ॥कौनरहैतबढिगजहां सरभरसंतअसंत॥ ॥२३॥ कर्नगिनतहीपराक्रमी औरक्षत्रिकानाहिं॥ देवादि ककीसेन्यकूं मैंरोकूंरनमांहि॥२४॥ फेंटपकरिबैठायढिग विनतीकरीबहोर॥ मानतहूंश्रीकृष्णतें अधिकपराक्रम तोर॥२५॥ आहिकरनपैंश्रेकअब अर्जुनहंतकबान॥ता तेंचाहतहूंनृपति सारथितोरसमान॥२६॥ करिसाथिता रुद्रकी विधित्रिपुरासुवार ॥नररथप्रेरककृष्णलखि य हेमतदव्यूहार॥२७॥ ॥संजय०॥ ॥कह्योकृष्णतें अधिकमुहि भयोप्रश्नगुनग्राम॥ हरिहूतोरविषादनृप करिहूंनीचहुकाम॥२८॥ करेकोलजोसूतसुत सहैवचन ममसूल ॥ कटुवीअर्धविभागको भोक्तामेंअनुकूल॥२९॥ ॥ ॥कर्न०॥ ॥रथीसार्थिकूंहोतहैं सुखदुखभोगस मान॥उभयपरसपरबनतहि कष्टपरैतनआन ॥ ३०॥ ता तेंहितकिअहितकी कहिहेमद्रनरेस ॥ मैंसाहिहौरन-भूमिमें करिहौक्रोधनलेस॥३१॥ ॥छंदपधरी ॥ ॥ भयोप्रातदुंदुभीवजेघोर ॥ कहिव्यूहसैन्यचढिउभय-ओर॥रथएककरनअरुमद्रराज॥ गिरएकजथारविहवन भाज॥ तहांभयेसकुनविपरीतरूप॥ भयत्रासितभईतव सैन्यभूप॥गिरिपरयोकरनकोध्वजादंड ॥ पुनिकियोसकु

गुठाडोप्रचंड ॥ उलकानिपात भोचारओर ॥ धर धूजि मि
ट्योरविप्रभाजोर ॥ तितकह्यो करननृपसुनकुमद्र ॥ रवि
व्येवलरवावत्तसहितछिद्र ॥ उत्तजरीसमुरव दोउ सैन्य आय
॥ सवन प्रतिकरनबोलतसुनाय ॥ ३२ ॥ ॥ कबित्त ॥
॥ ॥ देहुअस्वकरीआजकिरीटी दिरवावै ताहि देहुवाअमो
लवस्त्रभूषनअपारमें ॥ देहुसात पांच त्रियासमादे समाग-
धकीयेहुनाचहैतो और देवेकूं उदारमें ॥ देहूं निजदारापुत्र-
ओर मनवांछितजेकपिध्वजा देखतही कहूं निरधारमें ॥ पां
डवकोविभोओरवासुदेवहुकोविभोविस्वमें विख्यातकर्नठा
ढोदेनहारमें ॥ ३३ ॥ ॥ सल्य० ॥ ॥ गरुडकीसमता-
कौंमच्छरउडानउडेतिमंगलसमताकूं झिंगाबह्याजातहै ॥ के
हरकीसमताकूं जंबूककरतजोर रविकी समानतारवद्योतक
चैपातहै । शेषकीसमानताज्यूं डिंडम कियोही चहै हंसकी-
समानताकूं काकअकुलातहै ॥ सल्य कहै कुंजरकीसमताच
हैज्यूं चींटीअर्जुनकीसमतातूं करनदिखातहै ॥ ३४ ॥ कहां
साचकूट कहांकाचकहांहीरकनी कहां राइमेरुकहां महीव्यो
मथानहै ॥ कहांनिसाद्योसकहांदीपकहांराकाचंद्रकहांक्षीर
सिंधुकहांकूपकोप्रमानहै ॥ कहांदेवतरुकहांविकलबंबूलवृ
छकहांहैकथीर कहांकंचनकीखानीहै ॥ अचलताधूकी क-
हांकहांपानपीपसको कहांकर्नअर्जुनकीसीलतासमान
है ॥ ३५ ॥ एकस्यामकाजदूजें सारथीबन्योतूंभूपतिजेबं
ध्योकोलसूनमारोतीनव्यंगतें ॥ कर्न कहै सल्यमरुत्रियातें
हैजन्मजाकोचित्रकहा ऐसो कटु बोलैसोउमंगतें ॥ मांसमदा
हारिणीउच्चारिणीतेकामगीलधारिणीकुसंगअंगव्याकुल
अनंगतें ॥ पतिकौंतजें विसारि पूतकौं तजें निकारजारिकूंतजे

नन्यारीप्यारकेप्रसंगतें ॥३६॥ प्राकृतधनुषसमैं गांजीवधनु-
श्रनासमरैबाणषीणवाकेअक्षयनिषंगहैं ॥ वाकेकृष्णसा
रथीसदैवअनुकूलमती मेरेप्रतिकूल तेरेसो सारथी कुसंग
है ॥ मोकूआपदोयगुरुरिषीके महानहानवाको वरदानरु
द्रइंद्रकोअभंगहैं ॥ अस्वरथबैसेनांवरोबरी कस्तूहूंजुधऐसो
क्यूंनबोलेतोकोंकोटिकोटिरंगहैं ॥३७॥ ॥सत्यं० ॥
॥ ॥श्लोक॥ ॥ग्राहपत्रीशसिंहैश्च कव्योमवनचारि-
भिः ॥द्वेषंकृत्वाकगंतासि बकत्वंस्वास्थ्यमिच्छया ॥३८॥
॥ ॥दोहा॥ ॥ग्राहखगेंद्रमृगेंद्रतें जलनभवनचारीन
॥बककितजेहैंबैरकरि चहेथिरवासप्रवीन ॥३९॥ ॥
॥ ॥श्लोक॥ ॥गिरिसानुपादपाग्रेत्वं तिष्ठस्युपदेस्त्र
कृत् ॥प्रमत्तःसंभवानत्रउच्छ्रितान्मापतिष्यसि ॥४०॥
॥ ॥दोहा॥ ॥चढेअग्रगिरसिखरतरु अन्यबचावन-
काज ॥सावधानमतिआपहु गिरजाबहुमहाराज ॥ ४१ ॥
॥ ॥श्लोक॥ ॥भ्रष्टाचारःसारमेयोराज्ञासत्कृतवा
नथ ॥दुर्ईरेणैवसिंहेन समतांगतुमिच्छति ॥४२॥ ॥
दोहा॥ ॥भूपतितेसत्तकारलहि श्वनीपुन्नहठरूढ ॥
करीप्रहारकस्यंहतें समतान्वाहत्तमूढ ॥४३॥ सूतपुत्रसं
ध्यासमय घूरवहुकरतगलार ॥ अर्जुनरविव्हैहैउदय जें
हैंतेजतुम्हार ॥४४॥ ॥कबित्त॥ ॥आदिआपभ
योसोकूगुरुजामदग्न्यजूको दूजेद्विजआपरथआश्रयध
रनके ॥ तीजेसक्तिवासवोनिसाकेजुधमोघभईसुनेसमा
रहेडंबेयकेलरनके ॥ राधापुत्रकहेमद्रदेसमूढदेखिहैतूं
दापिहैअकासबानकंचनपरनके ॥रुद्रहूकेसर्नंनरमरनव
चातोकैसेहोतेजोनहर्नभानकुंडलकर्नके ॥४५॥ ॥

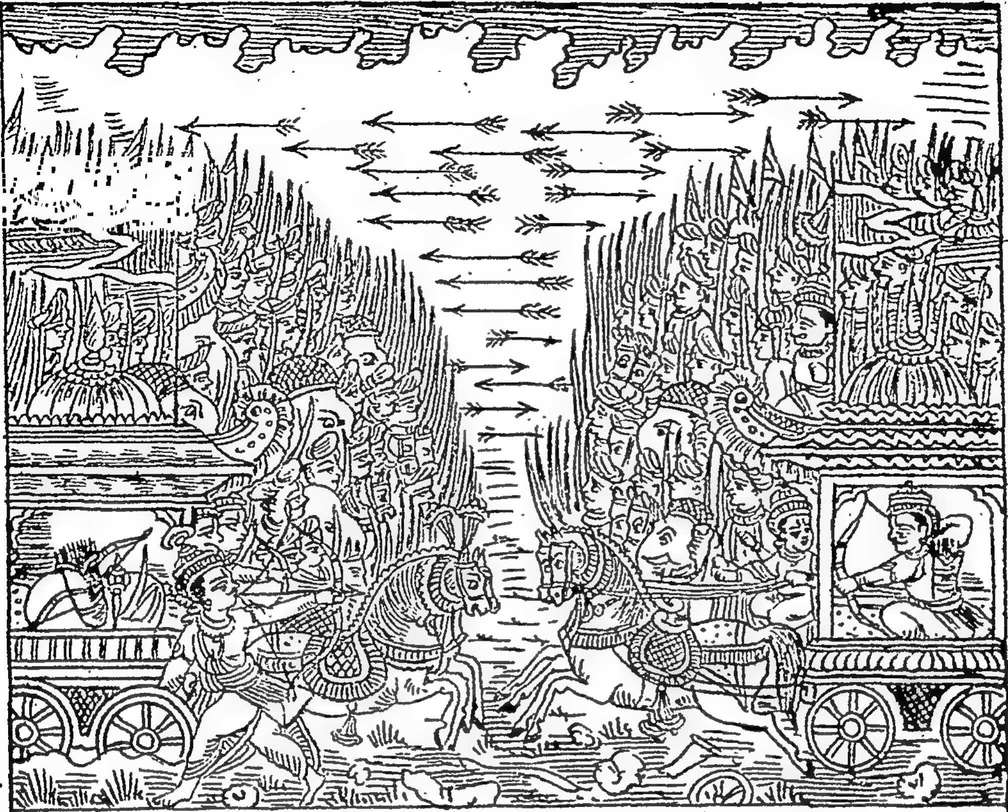
॥ ॥संजय०॥ ॥दोहा॥ ॥समससकेसाथ कूं कोटिकोटिहैरंग॥लीनोतहांफटायके अर्जुनसमर अभंग॥४६॥नरकोआवाहनकियो सुसरमाजुध्धसाज ॥जापीछेजूटतभये कुरुपांडवजयकाज॥४७॥इतकर्न रक्षकउते भीमसेनरनधीर॥कटततमिटतनाहिनहटत उ भयसैन्यबरबीर॥४८॥ ॥छं० मोतिदास॥ ॥भट क्कतक्रोधजुरेतिहकाल॥अटक्कतएकनएकअचाल॥चट क्कतबोलतवानकमान॥हटक्कतअस्त्रनअस्त्रसमान॥ रटक्कतमानहुस्यंद्हवराह॥कटक्कतआयुधदंतसनाह॥ पटक्कतजासिरधायप्रहार॥लटकतसोतनुज्ञानविसारि ॥अटकतनाहिनअंगप्रहार॥सटक्कतबोलकढेतनपार॥ ठठक्कतकायरकेकहिहाय॥छटक्कतसस्त्रनहाथरहाय॥ वटक्कतस्वापदआदिअनेक॥गटक्कतकंकरुगिध्धकितेक॥म टक्कतभैरवबीरअपार॥ऊटक्कततेलउठायअहार॥सरक्क तनाहिनमीचविहाय॥ढरक्कतमंचनतेंसिरकाय॥ षर- क्कतत्रानरूम्यानअनेक॥फरक्कतबानवरमनछेक॥कर क्कतमानहूंबीजप्रकास॥धरक्कतनैकनदेरवविनास॥भ रक्कतवाहनभाजनदूर॥फरक्कतहैध्वजदंडसमूर॥मुरक्क तआवतआहवबीच॥बरष्षतवानमचावतकीच॥करष्षतको दंडकानप्रमान॥जरक्कतत्रानत्वचाअरुप्रान॥जितेतित नाचतकेककबंध॥जितेतितफूटततूटतकंध॥जितेतित जोगनिपत्रभरंत॥जितेतितअच्छरवीरवरंत॥जितेजित जूटतसस्त्रविहीन॥जितेतितकुंजरपिंजरनवीन॥जिते तितहोतप्रहारप्रचार॥जितेतितनाहिनमानतहार॥जिते तितरथालियमंचलरथाय॥जितेतितघायलकेकबकाय॥जि

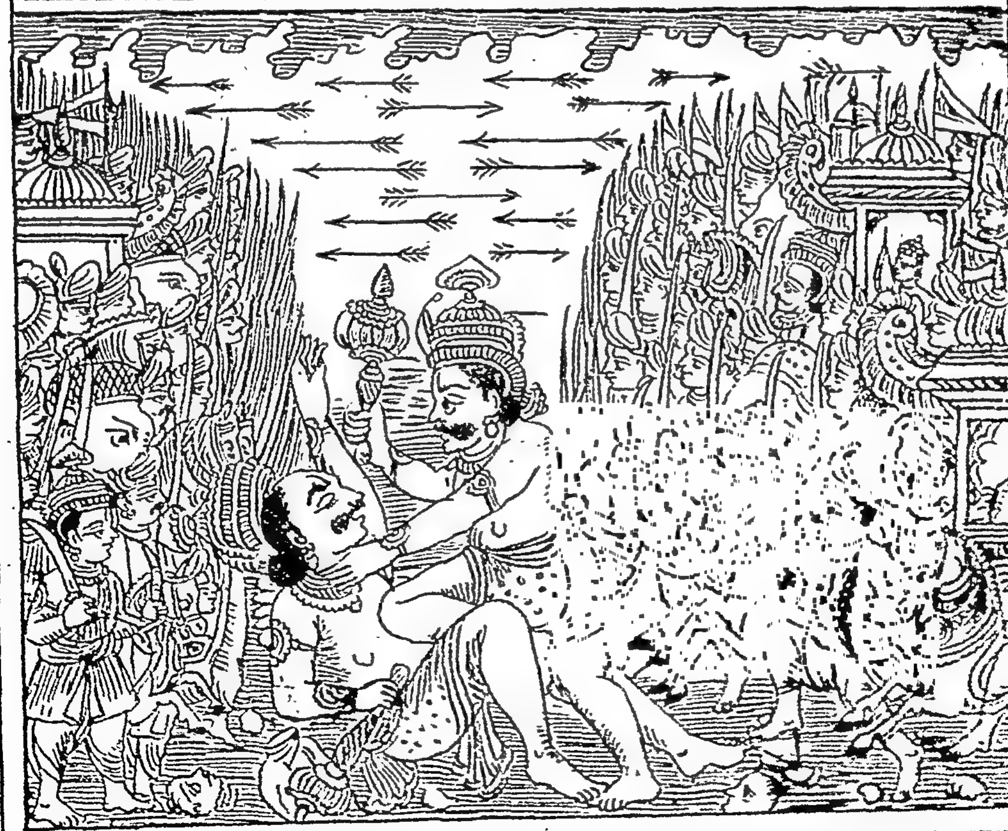
तेतितश्रोननदीउषकात ॥ जितेतितदेखतवीरवहात ॥ जिते
तितकेसग्रहाग्रहीहोय ॥ जितेतितमल्लजुद्धजूटतदोय ॥-
जितेतितहाथनलातनजुद्ध ॥ जितेतितदांतनघातनक्रुद्ध ॥
हकारतवीरनकौंतिहओर ॥ प्रहारनआयपरेसिरजोर ॥ कहाच
तआपमहारनसूर ॥ नआवतआजबजायकेतूर ॥ नपावतपू
ठरहेभटनाम ॥ नभावतईससहिकोयहकाम ॥ नभावतबोल
तवीरसुवान ॥ नसावतप्रानरवोवतमान ॥ सहोतनबान-
नकेसुप्रहार ॥ रहोथितमीचहिकोसिरधार ॥ कहोमुखबोलस
भाबिचक्रुद्ध ॥ जुरोनमुरोलखिदारुनजुद्ध ॥ ४९ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ ॥ कर्‌योविरथसुतधर्मकी बानविकलकरिअंग ॥ कहेक
रनदुरबचनप्रति हत्योननियमप्रसंग ॥ ५० ॥ ॥ कर्न० ॥
॥ ॥ आपनिपुनरिखधर्ममें क्षत्रधर्मअतिक्रूर ॥ अग्निहो
त्रसंध्याकरहु लखहुजुद्धरहिदूर ॥ ५१ ॥ बाननतेंदुरबचन
तें भयोदुषितस्रुतधर्म ॥ गयोशिवरबिचद्रुपदजा सपरस
तेंभोसर्म ॥ ५२ ॥ हानित्रिगर्तकीसैन्यकूं क्रुष्णसाहित कौंतेय
॥ भीमकरनतेंभिररह्यो आयोतहांअजेय ॥ ५३ ॥ ॥
छंदपधरी ॥ ॥ तितपर्‌योदुसासनभीमद्रष्ट ॥ त्रियादुखस
मरिभोसोकनष्ट ॥ ध्वजकाटिप्रथमपुनिधनुषछेदि ॥ रथच
तुरअश्वहातिवर्मभेदि ॥ पुनिकेसजूटग्रहिमाहिपचारि ॥ कर
नादिलखततबपुत्रमारि ॥ उरफारिकर्‌योरतउष्णपान ॥ बिक
रालरूपराक्षसविधान ॥ ॥ श्रीकृष्ण० ॥ ॥ विधिजु
असंभवकहतसोय ॥ पीवोरत्तबांधवक्रूरहोय ॥ ॥ भीम०
॥ ॥ मांसादिभरव्रतलगेअस्त्रघात ॥ निजतारुरुधिरस
ब्रनिगलिजात ॥ निजरक्तभ्रातरतकहाभेद ॥ यातेंनक्रुष्णक
छुकरहुखेद ॥ पुनिउभयसैन्यप्रतिबदातिबैन ॥ जुतक्रुष्णसु

नहुयूंभीमसेन ॥ ५४ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ द्रौपदीके ऐंचेकेसतादिनाउठिविसालज्वालकीकरालमालरोमरोमदाग्योहै ॥ भीमसेनकहैनाथसुनियेहमारीबातआजलौंभयोनचैनमहाक्रोधजाग्योहै ॥ दुसासनमारियाकूंपुहमीपछारिफारिवक्षस्थलरक्तपीयोतातैंदुषभाग्योहै ॥ दुष्टनकेलोहुकोकहोंगेकोहुस्वादकेसोनागलोकसुधापियोतातेंज्यादालाग्योहै ॥ ५५ ॥ उषकोपीयुषकोनचंदकीमयूषकोत्यूंचाह्योभषभूपकोनचाहतहोजिनकूं ॥ पृथामातदुग्धहुतेजादासत्रुश्रोनपानऔरकावताऊस्वादयादमोरमनकूं ॥ करनादिकवीरकूंबकारकह्योरक्षाकीजेरुधिरनिकारपियोपूरनपरकनकूं ॥ भारगयोद्रौपदीतेउरनअवारभयोकह्योयूंपुकारकेडकारदुसासनकूं ॥ ॥५७॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रोनपियतरनसत्रुको दरसतभीमअनूप ॥ कहिराकससंचरवढकत लरव्योनजाइस्वरूप ॥ ५८ ॥ दुसासनकेहृदयतें सबैकुटलतासोधि ॥ वायुतनयकुटिलानकूं मनहुदिरवावतबोध ॥ ५९ ॥ भिरेचतुरदसपुत्रतब अग्रजवधलखिओर ॥ भीमगदातेंछिनकमें गयेदुसासनठोर ॥ ६० ॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकाकर्णपर्वणित्रयोदशमयूखः ॥ १३ ॥ ॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥

॥ शुभंभवतु ॥

॥ श्रीरस्तु ॥





श्रीगणेशायनमः॥ ॥दोहा॥ ॥अर्जुनकेदृष्टनपर्यो
धर्मपुत्रध्वजदंड ॥ कह्योभीमतेंसोधकरि कितहैनृपबलवं
ड॥१॥ ॥भीम०॥ ॥मोअरिभरगलमानिहै तुम
हीसोंधहुतात ॥आयोडेरनबीचरथ लखिनृपतिहहरखात॥
॥२॥ ॥जुधिष्ठि०॥ ॥कवित्त॥ ॥जाकेडरहीतेंमोकूंनी
नदससमंतसरनीकेनिद्राआईनहींताकूंमारिआयोतूं ॥-
जाकेआगेचारदिकपालनकीविजेनाहींताहीसूतपुत्रकोमिटा
यविजेंपायोतूं ॥तीनलोकविचतीनकालमेंनऐसोकोऊतेंसो
धनुधारीलोककलोकमेंकहायोतूं ॥ युधिष्ठिरकहेधन्यभागहे
वधाईआजसारथीसमेतअदभूतजसलायोतूं ॥३॥ ॥
अर्जुन॥ ॥आपकीध्वजाकोदंडनिजनपर्योनभीमनदथा
सत्रुनिंदातेंनिहारिवेकोआयोमैं ॥ अवलोहेकर्नविधमान-
मोरसोमकानअबीदेखिआयोभीमसेनकोपठायोमैं ॥आ
पकूंकुसलदेखिराबरोहुकमपायपायकुविजयमारिकेउवि
जैपायोमैं ॥इंद्रकोजरायोबनरुद्रकोरिझायोऐसेनानायुध
जीतिदेवदत्तकूंवजायोमैं॥४॥ ॥युधिष्ठिर॥ ॥प्रथा
केअसूततेरोभयोसातद्योसपीछेभईव्योमबानीयोंअनायन
कूंपारिहै ॥जीतिहैत्रिलोकअभैकरिहैअमरओकवातेकोनजी
तेंभूमिभारकोउतारिहै ॥ देववानीमिथ्याभईतूंनकन्याभई
काहजुधछोरिआयोसत्रुदेखिकाउचारिहै ॥कृष्णादिकऔरकूं
तिहारांधनुसोंपिदेहुयहांबैठोदेखिराधापुत्रकोतेमारिहै ॥५॥
॥दोहा॥ ॥यूंसुनिकियोविकोंसअसि ज्येष्ठबंधुवधकाज॥
कृष्णकहेअर्जुननिकट यहैकोनगतिआज॥६॥ ॥
अर्जुन॥ ॥कोउमोकूंसनमुखकहै डारिदेहुधनुबान॥
मेरोनेमअखंडहै सद्यहरोंतिहप्रान॥७॥ कहेआपकेसक

नतसोइ धर्मपुत्रदुरवाद ॥ जियकोजयकोराज्यको मिठ्यो-
मोरअहलाद ॥ ८ ॥ धर्मराजकूंमारहू ररवनप्रतज्ञामोर ॥
फिरमेरोजीवनकहां तजिहोंप्रानबहोर ॥ ९ ॥ ॥ श्रीकृष्ण०
॥ ॥ कहेधर्मदुर्वादतोहि क्रोधबढावनकाज ॥ कोप्योंअर्जु
नकर्नकूं अवसिमारिहेंआज ॥ १० ॥ कहेसमुरवदुरवादरे
तूंसंबोधननीच ॥ गुरुजनकोविनुसस्त्रतें बधकहतश्रुतिबी-
च ॥ ११ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ जुधिस्थीयतेतिताकूं कहतयु
धिष्ठिरसोआपयूंपधारेयुधधीरताकहांरही ॥ आपतेंकनिष्ट
क्षत्रधर्मतेंगरिष्ट भीमसोंकोंजोकहेतोकहोवाहूऐसीनाकही
॥ आपकेअभागरवोयो पिताकोविभागकीनीत्यागबंधुच्या-
रुजीतीदिसाच्यारकीमही ॥ रावरीयेभूलहोतवंसनिरमूलकहीं
आपकीकबूलरारवीसूलआजलोंसही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यूंक
हिऐच्योंरवडगपुनि समझिपितावधपाप ॥ आपघातकूंकृष्ण
कहे बहुरकरतकहाआप ॥ १२ ॥ भोमोहिअग्रजभ्रातको
बिनासस्त्रबधपाप ॥ कैसेरारवूंदेहकूं आगेप्रेरकआप ॥
॥ १३ ॥ ॥ श्रीकृष्ण० ॥ ॥ आपकरेजसआपको आ
पघातसमसाच ॥ जीवनमृतगनिअपजसी स्वायंभूमनु
बाच ॥ १४ ॥ ॥ अर्जुन० ॥ ॥ छप्पे ॥ ॥ एकधनुष
गांजीवविजयकीयइंद्रसुरासुर ॥ एकधनुषगांजीवप्रगटकि
यअभयअमरपुर ॥ एकधनुषगांजीवकरीदिगविजयहतें
उरवल ॥ एकधनुषगांजीवदलिउदुरजोधनकोदल ॥ विनुसे
न्यएकगांजीवधनुकेउसत्रुरवंडनकरिय ॥ करिकोपसोंपिध
नुओरकूंआपकहाइहउच्चरिय ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ औ
सुनिदुरवचअनुजके कियेनृपबनदिसगोन ॥ ताकेपदगहि
कृष्णकहि कहिनृपहयगतिकोन ॥ १६ ॥ ॥ युधि० ॥ ॥

मैंदुरव्यसनीभाग्यहत दुरवदायककुलकेर ॥ येनृपहोमैंतप करहु भ्रातकहतसातिटेर ॥१७॥ ॥श्रीकृष्ण०॥ ॥ तेरेतेरेबंधुकी मृत्युबचावनआज ॥ रखनप्रतज्ञाविजयकी कियेमोरगनिकाज ॥१८॥ कंठलगावहुअनुजकूं ममजुतआज्ञादेहु ॥ निसकंटकसबभूमिको राजविजयजसलेहु ॥१९॥ धर्मपुत्रकहेआपसे जिनकेनाथकृपाल ॥ तिनकेबिनछनकमें क्यूंनविधनकेजाल ॥२०॥ मिलेपरस्परहरसरिस दरतअश्रुदोउभ्रात ॥ कहतजुधिष्ठिरछमहुमम विजयहोहुतवतात ॥२१॥ कहुअर्जुनमेरीछिमहु मातपितागुरुनाथ ॥ ऐसेदुरबचआपकूं अबलूकहेनपाथ ॥२२॥ कै दुरजोधनआपकी विजयआसमिटिजाहु ॥ केराधाकुंतीतथा पुत्रसोकबिललाहु ॥२३॥ कैसुभद्राअहुपातअब मिटजेहैततकाल ॥ नथाकर्नकीत्रियनकूं भूषनव्हेहैसाल ॥२४॥ धारसुदरसनकहतहरि मरतेंमरनैनआज ॥ तोउमेंहतिहूंनयमतजि करनहिकोतवकाज ॥२५॥ यूंकहिरथआरूढभय भयेसकुनसुखमूल ॥ अनिमत्तउलकापातजे कर्नहिकूंप्रतिकूल ॥२६॥ भीमकहेयासमयजो वीरकपिध्वजहोय ॥ मरेंदुष्टराधातनय डरेसुयोधनरोय ॥२७॥ मोरजुद्धतेंअमितयह भिरेविगतश्रमपाथ ॥ दुरयोधनकीसैन्यसब अबहीहोयअनाथ ॥२८॥ ॥कवित्त॥ ॥ कहेहैविसोकनामसारथीमहारथीतेस्यंदनकीनेमितेंभूधूजतधुकातहे ॥देवदत्तपांचजन्यगांजीवकीघोसहीतेंसैन्यकोरवीकेप्रानपंछींउडेजातहे ॥परसनकीयोहेसख्यआजलोंमुकुंदअवकर्नप्रानकर्सनसुदर्सनसुहातहे॥महामेरुकंदरसीदेखिध्वजअंदरत्यूंमदरागिरीसौंसीमबंदरदिखातहे ॥२९॥ ॥दोहा॥ ॥

कह्योसारथीतेरथी देखुनतुरदसयाम ॥ यहेबधाईबीचही ओरगजादिइनाम ॥ ३० ॥ जुरेअर्जुन कर्नजबहि कुटिल-द्रष्टजुतक्रुद्ध ॥ ढांक्योव्योमविमानतें सुरननिहारतजुद्ध ॥ ३१ ॥ ॥ सल्य० ॥ ॥ जोव्हेहैकपिकेतुते करनमरनविधिकोय ॥ तोहतिहूंकपिकेतुको मेंसेनापतिहोय ॥ ३२ ॥ ॥ कृष्ण० ॥ ॥ जोकदाचकरकरनके होयधनंजयपात ॥ करिकुसत्रुअजातिकु सीघ्रहिसत्रुअजात ॥ ३३ ॥ हत्योविजय व्रषसेनकु पितुसमीपकरिक्रोध ॥ करनकरनकूंप्रथमही पुत्रसोकबोबोधि ॥ ३४ ॥ ॥ छप्पै ॥ ॥ यतेकृष्णसारथी उतेमरुदेसनरेश्वर ॥ इतगांजीवटंकारउतेंधनुविजयसब्द कर ॥ इतध्वजकपिकीगरजउतेगजकक्षभयंकर ॥ इतउत स्वेतहुअस्वइतेंइंद्रादिसकलसुर ॥ उतभानुआदितमयो-निसब इच्छतविजयविवादरत ॥ इनवीचअंसभवजयउभ-य कित्येकलखिऐसेकहत ॥ ३५ ॥ इतअभिमनदुखदुसह उतेंव्रषसेनदुसहदुख ॥ इतद्रुपदाद्रुखाद उतेंबधबंधुनकी रुख ॥ करिसमरनजुतक्रोधचलेगनबानभयंकर ॥ नभअच्छादितभयोकटतदोउसैन्यबीरबर ॥ हयमहारथीदोउ सारथीभयेबसंतपलासलम ॥ कहेदेवकिरीटीपुरनधनिक रनधन्यकोऊकहतयम ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नाभूतो नाभविष्यती ऐसोअदभुतजुद्ध ॥ यतेंइंद्रसुतवढतज्यूं बढतभानुसुतक्रुध ॥ ३७ ॥ दूजेंदिनरनकरनको तीजेंदिनस्कतगंग ॥ चोथोदिनहिजद्रोनको अदभुतजुद्धतिहुंअंग ॥ ३८ ॥ जुरेकरनअरजुनजहां दोनोसैन्याविहाल ॥ होयजथादोयगजभिरत कदलीकोक्षयकाल ॥ ३९ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ अरिकोसमूहघरघरकोमित्योहेसैन्यताकेवीचडरकौनलेसजाके

परको ॥ वरकोप्रभावहै किनरकोप्रभावहै किसरकोप्रभावकेप्र भावउभैकरको ॥जेतेअवनीसदीपुपरैतेनदीसपरेबीसवीस पैंडलोविजोगसीसधरको ॥कैसोयाकोव्हैसोपोनगोनतेंअनैसो होतऐसोरनजैसोबनतारिनारियरको ॥४०॥ गांजिवकोघोस देवदत्तरथनेमिनकीअवेगुदामेंढ्यसुनेवाहनतितेतिते ॥ रविसो उदैसोनरआगमतेतारागनभिरवेकूंसूरबीरभासतकितेकि ते ॥ पानदोनूंहाथकोप्रयानयदुनाथकोत्युभजेकरुसाथतेज पाथकोचितैचिते ॥ ज्ञानभूलिजावेलाभहानिभूलिजावेकेतेप्रा नभूलजावेबानलागतजितेजिते ॥४१॥ कौरवीहमारीसैन्य पांडवीमिटायदेहेकायरकूंमारेनाहिंसूरनपैंक्रुद्धहै ॥ बालकाल हीतेदुरजोधनकूंचाहेहमचालकालहीतेयाकेपनतेविरूधहै ॥ आगेजेवढेगेपीछेसुजसपढेगेकविकेतेव्हैकटेगेभूमिजूधतें- निरुद्धकिरीटीभिरेहै ॥ आंबस्त्वभकीसीखुलीजातक्रुधदेविरुद्धहै निरुद्धहैनजुद्धहै ॥४२॥ कमलकेदलहुतेकोमलजुगलकरजुध वेरप्रबलकठोरतविचित्रहै ॥ अर्जुनहैएकतथाअर्जुनअनेकजे सेजुरेसत्रुजेतेकूंलरवावेंजत्रजत्रहै ॥ भाथनतेंसत्रुनमेंसत्रुनतेभा थनमेंहाथशिशुमारचक्रइषुजूंनषत्रहै ॥ पत्रनकेमेरवेतेसव्य अपसव्यदोनोसत्रुपतीपित्रलोकप्रेरवेकेपत्रहै ॥४३॥ नावनिज सैन्यलाभभूमिरत्नलैनप्रेरीसत्रुसैन्यसिंधुमैंप्रवेसनेकपायेहै ॥ युधिष्ठिरसाहवासुदेवसेनलाहपायतिनकीसलाहविघ्नबंद कूंमिटायेहै ॥ त्रयोदसघोसवीचतरेसिंधुतीजोभागपांचघो- सवीचदोयभागकूंनधायेहै ॥ पुत्रकेमरेतेकोपपप्रोनभोप्रचंडता तेंसव्यअपसव्यवर्धमानसेलरवायेहै ॥४४॥ ॥छंदपधरी ॥ ॥करिक्रोधजुरयौरिनसूतपुत्र ॥ असिसैन्यपांडवीजत्रजत्र ॥ करनप्रतिलरनहितभिरतकेक ॥ उनकूंनसरनविनमरनएक

॥सरघरनवरनकरछुतनसोय॥जुतपरनधरनबिनमगनहोय॥
तरनजुधलखतथितधरनिओर॥सुतअरनउतैनरभिरनघोर॥ल
खिकरनचपलताअरिनमध्य॥ नवपुत्रविजयमानीप्रसिद्ध॥
परिकरनवानतेंकरिनत्रास॥चिक्करतभजतकेउहोतनास॥
त्यूंभीमसेनतबगजअनेक॥सिशुमारवीचप्रेरेकितेक॥दुख
हरनसखाजदुपतिदयाल॥केउवारबचायोनरकृपाल॥४५॥
॥ ॥दोहा॥ ॥खांडुजरतअहिबचिगयो निगलिउडीतिह
मात॥एकजानिइकबातकी घातभईभइपात॥४६॥
॥ ॥कबित्त॥ ॥सोईवैरयादकियेकर्नबानव्यापकभो-
आगेथोअमोघयाकेतेजतेविसेसभो॥ कर्नविनजानेताकोकि
योहेसंधानदेखिहाहाकारभूमिअंतरिक्षदेसदेसभो॥जोरयो
कंठदेसकृष्णमचकलगाईअस्वगिरेभूमिबीचनरसीसपेप्रवेस
भो॥गिरयोहेकिरीटीकदिरतनजरयोहेताकेविषतेंजरयोहेमे
किरीटीकोनलेसभो॥४७॥ ॥दोहा॥ ॥पुनितूनी
रमवेसकरि बोल्योकर्नसंभारि॥संधहुतवममसत्रुपें लेहुप्रा-
नानिकारि॥४८॥कर्नकहेतुमकोनसोइ कहतसर्पमोहिजा
नि॥लेनवेरममातुको आयोसमयपिछानि॥४९॥ ॥
कर्न०॥ ॥कर्नजोरलेओरको जुधनकरेंअहिराज॥कपटबा
नजोरेनहीं सतअरजुनबधकाज॥५०॥जगबिचप्यारेदार
सुत तिनतेंप्यारेप्रान॥प्राननतेंजसमोहिप्रिय स्वामिहिध
र्मसमान॥५१॥जयजियरक्षाकवचअरु कुंडलजसकेकाज
॥दीयेताहिद्विजरूपधरी जाचतभोसुरराज॥५२॥इहसु
निअहिसररूप करिलेनकपिध्वजप्रान॥चल्योसुहरिउपदे
सतें नरछेद्योषटबान॥५३॥कर्नगुरुद्विजश्रापतें ब्रह्मअ
स्त्रथभ्रष्ट॥उतरयोचक्रनिकारक कृष्णकह्योकरिनिष्ट॥

॥५४॥ ॥श्लोक॥ ॥निमग्नेरथचक्रेतुकर्णस्यपृथ-
वीपते ॥तंकेचिदागतेकाले तेप्रोचुस्मकिरीटिनं॥१॥माकर्णांत
धनुर्मुर्क्तैकर्षयंकर्णनालिकैः॥ कुरुणांकुलकर्तासि त्वंकर्णःक
रुणाकुरु॥५५॥ ॥श्लोकोकीटीका॥ ॥दोहा॥ ॥
कर्णरथांगनिमग्नते भोप्रज्ञाचषभूप॥ कितनेपुरुषकिरीटि
कूं कहतभयेयहरूप॥५६॥मतिधनुजाकर्णांततलों ऐंचहुंघोर
रुबान॥ कर्नविषैकुरुनाकरहु तूंकुरुभूषनभान॥५७॥ ब
हुकरनअकरनसमजि तजेपार्थधनुबान॥कृष्णकहतहत
सत्रुकों देखतकहाअज्ञान॥५८॥ ॥कर्न०॥ ॥सुन्यो
वेदतेंबडनतें धर्मकष्टतनत्रान॥ सोहमसाध्योआजलों
जथाशुकसुनिकान॥५९॥ धर्मभक्ताधिकधर्मको जेहमछी-
जतजात॥ पांडवगुरुपितुकपटपथ मारिबढतदिनरात॥
॥६०॥सरनागतहूविप्रहू इतिवदतनरनमांहि॥ कर्नधनंज
यतेंकहत तुमसेहततननताहि॥६१॥ विषरेकचरुविकवच
पुनि विधनुविरथअरिन्वाहि॥बालवृद्धमुरछतश्रमित तुम
सेहततननताहि॥६२॥ मेरेतोतेंकृष्णतें नेकत्रासमतिमान
॥छनकछिमाकरभूमिते चक्रउधारतजानि॥६३॥ ॥
श्रीकृष्ण०॥ ॥विपतपरेपरनीचनर वनतधर्मवरजोर
॥धिकधिकनिंदतधर्मकूं कुकरमळरवेनकोरि॥६४॥ ॥
छप्पै॥ ॥जदिनधर्मसुधकरिय भीमकोंदियोविषमाविष
॥जदिनधर्मसुधकुरिय लाषगृहजारिसुपतलिख॥जदिन
धर्मसुधकरिय दुवनरजकृकतरानी॥ जदिनधर्मसुधकरि
य कपटकरलीरजधानी॥कहकृष्णतहांकधनाकरियहु
पदसुताबनविचहरिय॥ अहोभाग्यवधाईधन्यदिन कर्नध
र्मदिनसुधकरिय॥६५॥जदिनधर्मसुधकरिय आपकोवि

प्रपठायो ॥ जदिनधर्मसुधकरिय घोषयात्राचढिआयो ॥
जदिनधर्मसुधकरिय त्यागिरनबिचनृपभजेउ ॥ जदिनधर्म
सुधकरिय गाइघेरतनहिलज्जेउ ॥ कहकृष्णतथासुधना
करिय मिलैबहोतअभिमनमर्यो ॥ बधाइआजिदिनधन्य
तुम करनधर्मसमरनकर्यो ॥६७॥ ॥दोहा॥ ॥ कृ
ष्णवचनसुनिपार्थके क्रोधानलकीज्वाल ॥श्रोनननासाचषन
तें बढासधूमविसाल ॥६८॥ कोपज्वलितचषविजयतें कीयो
धनुषटंकार ॥ सोॐकारगुरजनसुरवद दुरजनहृद्यविदार
॥६९॥ ॥कबित्त॥ ॥ सूरकेआवाहनकोकायरवि
सरजनकोबंधुनकीरक्षाहीकोजत्रतत्रजान्योमें ॥ इंद्रकेउ-
छाहहूकौरवीउरदाहहूकौअच्छरविवाहहूकौकारनपिछा
न्योमें ॥ गांधारीकेआपदाकोप्रथाजूकेसंपदाकोजुधिष्ठिर
विजयप्रतापउरआन्योमें ॥ गांजीवकीप्रतिंच्याटंकारकोअ
मोघघोसयतननेंपदारथकोवीजमंत्रमान्योमें ॥६८॥ ॥प
द्धरी॥ ॥वृषवाहहत्योनरएकबान ॥ सोमहावीरअभि
मनसमान ॥पुनिहत्योकरनकोदुतियपुत्र ॥जुतकुंडलमस्तक
गिर्योजत्र ॥ वृषवाहरुवृषपर्वापछारि ॥पुनिकह्योसुयोधन
तेंपुकारि ॥तेंकियविरुधयहदुरहेत ॥ तिहहततअबहिकिन
राषिलेत ॥ यूंकहिरुकियोगांजीवसंधान ॥ वज्रकेरूपसोइ
रुद्रबान ॥६९॥ ॥दोहा॥ ॥ऐंचिपनचकर्नासिपुनि तें
जवानकर्नांत ॥ मोरर्योसिरहरिकरनको कियोदीपसमसांत
॥७०॥ दुरयोधनकेग्रेहविच ताबिनभयोअंधार ॥तेंजनि-
कसिरबीचिचभो सबदेखतसंसार ॥७१॥ देवदत्तअहिज-
क्षगिर सिंधुनदीधरिदेह ॥आयेजुधलखिचकितभये गये
विजयलखिगेह ॥७२॥ करनमरतभाजिबलडरत गिरतरुक

रतगुहार ॥ दुरजोधनदुखसिंधुकौ तरतनपावतपार ॥ ७३ ॥
॥ ॥ सुयोधन० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ क्षात्रिधर्मछोरिके महा
रेपिताभीसमकूंचेसहतेद्रोनकूंनईश्वरकौभावेगी ॥ त्यूंहीभूरिश्र
वाराधापुत्रहूअसावधानमौरें प्रथानंदकीकाकीरतरहावेगी ॥
योंहीछलहीतें भीमसेनतेंहमारोबधहैं भवस्यमृत्युदेहधारीकूंतो
आवेगी ॥ कर्नहूकेमर्नहीतें सबकौंदिखानीमेंहूंप्रानहानिमा
नियेकहानीतोनजावेगी ॥ ७४ ॥ ॥ संजय० ॥ ॥ राम
अवतारहीतेकरिहैंविलोमरीतलघुसेसअंसइहांअग्रजकहा-
योहै ॥ वहांअनुकूलरहेसदाएकपत्नीव्रत दछनव्हैंइहांविभचा
रपदपायोहै ॥ वहांनित्यपथकूउलंघपांवधस्योंनाहिंयहांऐसी
रीतहीतेंकामकूंबनायोहै ॥ वहांइंद्रपुत्रकोसंधारिराख्योभानु
नंदयहांवासवीकौंराखिरविजमिटायोहै ॥ ७५ ॥ ॥ दोहा
॥ ॥ राजपुत्रहनिपंचशत उभयसहसरथवार ॥ हतेकरन
गजद्वैसहस एकलक्षपदचार ॥ ७६ ॥ कीयोसल्यसेनापती जय
आसासुततोर ॥ फिरकहिंकुलरिवहूंजथा जुद्धबनेंगोघोर
॥ ७७ ॥ मरेभीष्मद्रोनहुमरे कर्योकरनबलवान ॥ पांडुनजी
तहिसल्यअब आसानृपबलवान ॥ ७८ ॥ उतेंएकअक्षोहि
नी तेरेसुतकीतीन ॥ रहीसल्यकेजुद्धमें सोसबव्हैहैलीन
॥ ७९ ॥ मिलेराजसूजज्ञमे धर्मपुत्रकेपास ॥ तितेदेसकेतो
रमत भयेरूव्हैहैनास ॥ ८० ॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदु
चंद्रिकाकर्णपर्वणिचतुर्दशमयूखः ॥ १४ ॥ ॥ छ ॥
॥ ॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥

अथशल्यपर्वप्रारंभः







श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथसल्यपर्वप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥संजयअोरयुयुत्सुदोउ आयेनृपकुलेस॥ त्रियनजुक्त कुरुखेतहित वडीबधाईदेन॥१॥ ॥संजय॥ ॥कबित्त॥ ॥भीमकोंदियोहोविषतादिनबयोहोबीजलाखथहभयेतांकोअंकुरलखायोहै॥द्यूतक्रीडाकालविसतारपायबडोभयोद्रोपदीहरनभयेमंजरीतेंछायोहै॥मछगायघेरीजबैपुष्पफलभारभस्योतैनेहीकुमंत्रजलसिंचिकेबटायोहै॥विदुरकेबचनकुठारतेंनकट्योवृक्षवाकोफलपाकोभूपतेरीभेटआयोहै॥२॥ ॥दोहा॥ ॥यूंसुनिनृपमूर्छितभयो खाईहृदयदरार॥ हायहायरणवाससब कहिकरिउठीपुकार॥३॥मूर्छाजागीनृपतकी ढरतअंशुदोउनेत्र॥सीघ्रगमनरथचाढिसकल चलेतहांकुरुक्षेत्र॥४॥संजयअरुधृतराष्ट्रभये एकहिरथआरोह॥पूछतपथविचजुद्धकी बातनृपतजुतमोह॥५॥ ॥पद्धरी॥ ॥ज्यूंभईकथाजुधविषमभाय॥सबकहततथासंजयसुनाय॥मद्रेसभयोसेनपमहीप॥सबव्यूहजुक्ततवसुतसमीप॥फिरहोनलगोसंग्रामभूप॥अरिरहेसूरजिततितअनूप॥सुसरमावधभोनकुलहाय॥पुनिहतीताहिसबसैन्यपाथ॥द्वादससुततेरेसलसमीप॥मारेसुभीमरनविचमहीप॥सहदेवहत्योतवसालभद्र॥क्षयबीजप्रवर्तकसकुनिक्रुद्ध॥मुहपकरिलियोसातिकीसहास॥करिकृपाछुडायोवेदव्यास॥जुधिष्ठिरशक्ति

१ संजय धृतराष्ट्रसे कहते हैं कि यह तुम्हारे वंशनाशके वृक्षबीज थेकेजो भीमको विष दियो औ लाखाग्रह उसका अंकुर द्यूतक्रीडा विस्तार द्रुपदीकरण कली मच्छगाय घेरी सो फूल फल तुम्हारा कुमंत्र जलसे वढा इसवास्ते इसका फल तुमको मिला.

लीहृदयबीच ॥ मद्रेसगिरयोबसिदुसहमीच ॥ करपदपसारि अधवदनहोय ॥ कामीत्रियलपटेजथाकोय ॥ ६ ॥ ॥ नरतेअष्टादससहस धर्मसेनाबिचओर ॥ कृतवर्माद्रोणेय कृप तीनमहारथतोर ॥ ७ ॥ सल्यमरेतेंतोरसुत निद्रातेंअकुलाय ॥ जलस्तंभनकेमंत्रतें जलविचसोयोजाय ॥ ८ ॥ भीमसेनकेवधिकजे गयेसिकारहिलेन ॥ नजेमृतकमृगकुंडपें दई वधाईऐन ॥ ९ ॥ सोसुनसैन्यतयारव्है गईजहांकुरुभूप ॥ धर्मराजकटुवादकहि छेड्योकालस्वरूप ॥ १० ॥ धिकदुरयोधनतोरमत अपजसकोडरनाहीं ॥ करिसारेकुलकोकदन मिलिसोयोजलमाहीं ॥ ११ ॥ कृष्ण० ॥ मैंकेंसोरनछोरहूं कहतोतूंकुराज ॥ भाजिजलबिचभयभीमके आयछिप्योक्यूंआज ॥ १२ ॥ ॥ सुयोधन० ॥ ॥ सोरठो ॥ ॥ नित तुमकपटनिवास दुरयोधननिरकपटदिल ॥ सबकहसीस्यावास अपजसहरहरसीआपरो ॥ १३ ॥ ॥ भीम० ॥ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ कुलकोविनासकारि जलकोनिवासकीनो भीसकोनत्रासओरलाजनेकआईना ॥ भीसमसेद्रोनसेकर्नसेंमरायबेठोदुसासनदसादेखितोहुग्लानपाईना ॥ भीमकहेकहतोतूंअकेलोमिटायदेहूंपेरसतोकहांगईकबहूदिखाईना ॥ करीलपराईतेंतोसबेबिसराईमैंतोद्रोपदीपिराईनाकोअबलोंसिराईना ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कोपिद्रुपदकुमारतेऊरनहोंऊंआज ॥ लैजीयतोसेंदुष्टको देंअग्रजकूंराज ॥ १५ ॥ सुयोधन० ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ द्रोनकर्नसोकहीतमोकोंनींदलागीनाहीतीनद्योसभयेहोनहारयूंबिचारेगो ॥ एकजामसोऊंतोनेंश्रमतेनिवर्तहोऊंसुयोधनतातेंनीरसज्याचितधारेगो ॥ कुसमेजगावोसदाऐसेईअधर्मकारिअकेलोहैंतोउनेकतु

मतेंनहारिगो ॥ चूकजेंहैकसेभये एकठेसेभांडेनपैठूकभयोल दुतोउभूककरिडारेगो ॥१६॥ ॥जु०॥ ॥दोहा॥ ॥कह्यो जुधिष्ठिरनृपतसुनि अबकुअर्धभूलेहु ॥ अंधमाततपितुदुखित कूं संततिकोसुखदेहु ॥१७॥ ॥कबित्त॥ ॥गदाधारे कंधपेंवकारतमदांधनृपभीमआदिसुनियेविचारकहूपनमें ॥ केंतोमुहिमारकेंअजातसत्रुराजकरोकेंसंधारतुमकूंनिवास करूंवनमें ॥ मेरीतोअखंडआज्ञारहीछत्रधारीनपेंदीननरना- रिनपेंभावेनाहींमनमें ॥त्यूंहीजुधजूटपस्योफूटपस्योजंघदेस नाहीहटछूटपस्योतूटपस्योरनमें ॥१८॥ ॥दोहा॥ ॥ भीमसिरवायेकृष्णके वामहिजंघप्रहार ॥ कस्योगदाकोवहप स्यो कुरुकुलभूषनभार ॥१९॥ ॥कबित्त॥ ॥का लीकोसोचक्रकेफनालीकोसोफूत्तकारलोचनकपालीकेकपा लकेसोहेउदोति ॥ आयुधसुरेसकेसोमानहुप्रलेकोभानुकोप कोउफानकिधोंमीचहुकीमानुसोति ॥सुयोधनदुसासनदुर्मुख दुसहगनदेखोदोगदारूपीयेदूनिहूतेदूनिहोति ॥जेठज्यालफाल हेंकींजोहजमराजकीसीजहारहलाहलकेंभीमकीगदाकीजोति ॥२०॥दोहा॥ ॥ऐसीगदाप्रहारतें भयोतोरसुतनास ॥ भीम नतोसुततेंमस्यो रक्षककृष्णप्रकास ॥२१॥ ॥कबित्त॥ ॥ चामीकरकोससस्त्रवस्त्रनकेकोसओररत्ननकेकोसएकएकतेन छीनेहे ॥ देसदेसरसंभवतुरंगरंगकेजेपतीहेविहंगसंगप्रेरकअधी नेहें ॥ओरहूअनेकराजवेभवसराष्ट्रजेतेकाजधृतराष्ट्रकनेशत्रु नतेंछीनेहें ॥ महाबलीअर्जुनकोअग्रजविपणकोरगदाकोप्र- हारएकदेसभारीलीनेहे ॥२१॥ त्रिभुवीकोइंद्रजेसेत्रिपुरकूंरुद्र तेंसेमधुकैटभकोउपेंद्रनीकेमूलहीमिटायके ॥ नागकूंखगेंद्रजेसे गज- कोमृगेंद्रतेसेकुंभरामचंद्रजुतरावनपचायके ॥ मेघकूंफणींद्र

महाकालीदैत्येंद्रकूंज्यूंहंहकोंकपींद्रत्योंहिपौरसदवायके ॥ कौ
रवेंद्रधायकेउठायकेमहानगदाप्रथानंदढाढोयोनरेंद्रविजैपायके
॥ २२ ॥ अरनीद्रुपदजाइकोपभीमकोसुआगजजतयुधिष्ठिरस-
भारस्वांगलीनेहै ॥ होताहैकिरीटीधनुसस्रुबोज्यासब्दस्वाहा-
साकल्यहैबीरआज्यवीररसभीनेहै ॥ सुयोधनयज्ञपसुकुरुक्षे
त्रअग्निकुंडपूरणाहुतिमेंगदाहीतेंअंगछीनेहै ॥ वारीप्रथाकूष-
कीसुऐसेजग्यकारीपुत्रकेतेभुवचारीसुरलोकचारीकीनेहै ॥ २३ ॥
अग्नीधअभिमनहैवायुतनयउदगाथाकपिकीध्वजाकोजहांयू
पकरिराख्योहै ॥ धृष्टद्युम्नचतुराननअध्वर्युसातकीहैगाथाहै
सिखडीवेरलेनअभिलाख्योहै ॥ आहुतीवदीकेबीचकर्नद्रोन-
भीसमऔरजयद्रथसेहोमेत्रिलोकजसभारव्योहै ॥ जज्ञरूप
देहधरेहोताकेसमीपबैठोसेनासोमवल्लीघोटिविजैसुधाचारव्यो
है ॥ २४ ॥ गदाभंगहोयकेपरेकूंधर्मराजकहैवातेंसत्रुताईकीउठाई
छानिछानीतें ॥ मातापिताभीष्मद्रोनकृष्णविदुरादिकनेंनींकेसम
झायोतामेंएकहूनमानीतें ॥ मेरीहीअनीतआज्ञासबपेरहैगीबनी
कोनऐसोमोहिकोमिटावेऐसीजानीतें ॥ कुरुराजधानीकूनसोच
तसुयोधनमेंकेतीराजधानीहायकीनीधूरधानीतें ॥ २५ ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ दुरयोधनकेसिवरसब करिआज्ञाआधीन ॥
उतरेरथतेंविजयहरि सीघ्रभयोरथक्षीन ॥ २६ ॥ प्रथमउतार्‍यो
पार्थकूं पुनिहरिउतरेआप ॥ भयोभस्मरथअस्त्रतें भीसमद्रोन
प्रताप ॥ २७ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ गोसिखरबीचउ-
ठिधर्मराज ॥ सुनद्रोनआयसुनतोरकाज ॥ लखिभूपदसा
चितविकलक्षिप्र ॥ कियसत्रुहतनसंकल्पविप्र ॥ कृतवर्मामातु
लजुत्तजाय ॥ त्रिहुछोरेरथनिग्रोधपाय ॥ कछुकरेसयनजोल-
गैनैन ॥ श्रमसमरमिटेतनहोयचैन ॥ यकआयधूकतहांनिसा-

चार ॥ सत्रकाकनकोंकीनोसंहार ॥ गुरगन्यौताहिअरिनासका
ज ॥ मातुलप्रतिबाल्योविप्रराज ॥ पितुबयरऔरनृपबयरदोय ॥
सिरधरेमरतमेंभारसोय ॥ निद्रानलगतआवतनिसास ॥ तु-
मचलहुकरहुनिससत्रुनास ॥ २८ ॥ ॥ कृष्ण० ॥ ॥ दो-
हा ॥ ॥ करिवोजुत्तनविप्रकूं हाथसस्त्रगहिजुद्ध ॥ जो
जुधकरिवोहोयतोउ स्वामीढिगअविरुद्ध ॥ २९ ॥ विनस्वा-
मीजोकियचहे सावधानअरिपाय ॥ करहु प्रातजुधहोयहै
हमदोऊतोरसहाय ॥ ३० ॥ तूंद्विजनृपरिनकटिपस्यौ नि-
द्रागतिअरिवृंद ॥ तोहिअधर्मतेंनाघटे करिवोसत्रुनिकंद ॥
॥ ३१ ॥ ॥ अस्वत्था० ॥ ॥ भीष्मद्रोनअरुकर्ननृप छलिक
रिमारेचार ॥ तेअधर्मतेंनाडरे बरजतकोनप्रकार ॥ ३२ ॥
॥ ॥ संजय० ॥ ॥ पांचपांडुरुतसातकी कृष्णगयेलेदूर
॥ देवीपूजाब्याजकरी जानिद्रोनसुतक्रूर ॥ ३३ ॥ सत्रुहतन
द्रोणीचल्यौ निसनिसीथसुनिभूप ॥ तिहिप्रतिरोधनहरिध
स्यौ बिस्वबिराटस्वरूप ॥ ३४ ॥ धरेरूपबैराटहरि रवरेरु-
डेरनबीच ॥ तिनपेंकरेप्रहारसो डरेंकदालखिमीच ॥ ३५ ॥
द्रोनीकेआयुधसकल भयेबिराटतनलीन ॥ कस्यौहोमनिज
मासको रुद्रनिमतकेंदीन ॥ ३६ ॥ दियोरवड्गहरिसिटगयो
नहेंबिराटस्वरूप ॥ हत्योंजायपितुकोंहतक पसूबध्ध्यूं भूप
॥ ३७ ॥ पांचद्रोपदीकेसुवन नानाआयुधधारि ॥ भिरेसुभा
ऐंघकृतें बिमबकारिबकारि ॥ ३८ ॥ द्रोपदपुत्रदुहित्रसब मा
रेसैन्यसहेत ॥ बचेसुकेनयमांहते अरुमातुलकरिचेत ॥ ३९ ॥
॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ मातुलसिखापनकुंद्रोनीनाहिकीनो-
कानकीनोसत्यबाक्यपूर्वपिताकेउचारेको ॥ उर्णपनोपिता-
कोनभीष्मकोसुयोधनकोकीनोसोदिखानोनीकेवृद्धओरबारे

को ॥ जाकोदेखिकिरीटीहूविकलभयोहैवीरताकोयोप्रहारेहै वि
राटरूपधारेको ॥ जमकीजमातजेसीजिमाईजटीसरसैन्यद्रोन
कौंतीसराकीनोहाथमारेको ॥ ४० ॥ सारद्वतकहैभोजवंसअव
तंसदेखिपितापितासत्रुकेमिटानहारछेटाको ॥ द्रोनीकेप्रहारतें
नसोमकसुनैगेबचेलावाज्यूनबच्योसुन्योवाजतेऊपेटाको ॥ नि
साबीचजाकोतेजप्रलेभानकेसमानउबाहेविकोसषड्गहाटक
कलपेटाको ॥ मारतचपेटामेटाचहैवंसद्रौपदिकोरवेटाकरैघेटा
ठाडोबेटावमनेटाको ॥ ४१ ॥ मातुलकीकानकूनमानीमन मा
न्योकीयोकरउरनेत्रबीचवीररसछायोहै ॥ ताहीछिनजीतिअ
स्वआयुधसंभारिबैठोसांभकौरिझायसांभरूपदरसायोहै ॥ वा
हीनिसाबीचनासकीनोचतुरंगनीकोधन्यरूपीकूरवजाकेबीच-
वीरजायोहै ॥ द्रोनआपकारकेविषैरयोकुलद्रौपदकोद्रोनीउपका
रकेविजोगकूंमिटायोहै ॥ ४२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ पांचालास्तु
गताःस्वर्गेद्रौणेनबाहुशालिना ॥ अवशेषाहतेराज्ञीद्रौणिना-
योजितापुनः ॥ ४३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ रुक्योमनपापमेन
द्रोपदीबिलापमेनमातुलकीसीरबसुनैघोरनर्कतापमें ॥ सत्रुमा
रिसातसेससुनायेसुयोधनकोदिखायोसवायोफेरबापमेंरुआ
पमें ॥ ऐसीरीससांपमैनधलेकेप्रतापमेन जैसीरीसद्रोनीकीवास
त्रुकेमिलापमें ॥ आधिरातिसोयेयेमिटायदियेपिछिलीमेंआ-
योचुपचापमेंत्युंगयोचुपचापमें ॥ ४४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बाल
वृद्धकहत्रियनविन सबहिनडारेमारि ॥ रह्योनअष्टादससह
सब्रिन्स कोइउठेपुकार ॥ ४५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ संज
यबोलतभूपअचस्रुतेंहोयसुतोंसबदेवअधीनो ॥ कोनको-
कोनकोसोचकरेसबछत्रिनकोगनजुद्धमेंछीनो ॥ द्रोनसेद्रोनी
सेहोतेदसेकनोंहोननतोसुतकोबलहीनो ॥ बोयकैलूनिगोषेन

पितास्यूंहिपूत निसामेसलाभलकीनो ॥ ४६ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ पितुकेमरकोसोक नाहिनअलोकसोकस्वामीहूंम रैतैस्वामिधर्मइकतारीपें ॥ भारद्वाजवंसअवतंसबसद्रोपदको छेदकैचढाईध्वजाजुधकथासारीपें ॥ जनोहोतोऐसोजनोजोब नपृथानरवोवंतिरोपुत्रदेखिकेपुकारिकहूंनारीपें ॥ गांधारीकहत कृपीमेरोसतपुत्रधारीवारिचारिडारूंकूरखएकपुत्रवारीपें ॥ ४७ ॥ ॥ संजय० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ द्रौणीमुखरिपुबद्धसुनि गयेसुयोधनपान ॥ विप्रसस्त्रपरित्यागकरि गोव्यासाश्रमथान ॥ ४८ ॥ हरिलैआए पांडवनसिवर नसमयप्रभात ॥ द्रुपदाकरतविलापजुत हायपुत्रहाभ्रात ॥ ४९ ॥ सबनिसिबीती वातसुनि विजयप्रतज्ञाकीन ॥ लादेहूंशिरसत्रुको मतिरोवे अतिदीन ॥ ५० ॥ वाकेसिरधरपांवतुम सूतक करियोस्नान ॥ फिरबंधुनकूंसुतनकूं देहूंजलांजुलिदान ॥ ५१ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यूंकहिरुकियोरथजुक्तगोन ॥ प्रतव्यासाश्रमनरगतिसुपोन ॥ स्यंदनलिखिद्रोनीविगतसस्त्र ॥ उनप्रेस्योनरपरब्रह्मअस्त्र ॥ लखिअस्त्रबंसपांडवनिकंद ॥ गर्भकीकरीरक्षागोविंद ॥ प्रतिरोधकरनसोइअस्त्रपाथ ॥ प्रेस्योसुभिरेदोउएकसाथ ॥ ५२ ॥ ॥ ध्या० ॥ ॥ पार्थविधिअस्त्रआकर्षिपुत्र ॥ अथवाकिहोयजगप्रलययत्र ॥ प्रेस्योयहद्रोनीजुतप्रमाद ॥ आकर्षणयाकूंनाहींयाद ॥ लखिउभयअस्त्रजगप्रलयकार ॥ सुनिव्यासवचनकीनेसंहार ॥ सुतद्रोनपकरिरथपेंबिठाय ॥ जुधिष्ठिरअग्रलेकियोजाय ॥ ५३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णभीमदोनूंकहत आततांइनहिविप्र ॥ करतदयादेखतकहा हनहुदुष्टकूंक्षिप्र ॥ ५४ ॥ कह्योजुधिष्ठिरद्रोपदी यहहमतेंनाहिहोय ॥ द्विजवधममसुतनामि-

लै कहेकूपीकारोय ॥ ५५ ॥ चूडामणिजुतहरिसनखा विज
यदेहु छुटकाइ ॥ विनासस्रयहविप्रवध निगमकहतविधि
न्याय ॥ ५६ ॥ कह्योजुधिष्ठिरत्यूंकियो शिखाछेदिभुवडा
री ॥ यापैंपगधरीनरकहत करहुस्नानअबनारी ॥ ५७ ॥
॥ ॥ इतिधृतराष्ट्रसंजयसंवाद ॥ ॥ वैशंपायन०
॥ ॥ जुद्धभूमिविचनृपतजब आयोत्रियनसमेत ॥ गां
धारीप्रतिकहतमिल कृष्णव्यासजुतहेत ॥ ५८ ॥ तूंजानत
काकहहिंहम नहींजुधिष्ठिरदोस ॥ कस्योंवंसकुरुकोकद
न एकसुयोधनरोस ॥ ५९ ॥ अवतोंहैंतवपुत्रये भूलिनदेऊ
सराप ॥ परतजुधिष्ठिरपांवतव हृदयलगावहुआप ॥ ६० ॥
पायपरतकरनखनपर परीमातुकीदृष्ट ॥ चखबंधपटअध
छिद्रतें भयेकरजदसभ्रष्ट ॥ ६१ ॥ ॥ गांधारी ॥ ॥ श्री
कृष्णप्रति ॥ ॥ कठिनजंघममपुत्रकी छलहिडराईतोरि
॥ ईश्वरतादरसातफिर स्यालसिंघपरछोरि ॥ ६२ ॥ जाकेपद
तररहतथे छत्रधारिनकेसीस ॥ पलचारीपदतेंमलत ताकोसी
सअनीस ॥ ६३ ॥ ॥ जुधिष्ठिरप्रति ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ दे
सनमेंजीवकामिटानीसइरंध्रिनकीचूरिगरबापुरेनिकारहेंक्यूं
टोटेकूं ॥ गंधीरंगरेजयेविचारेकांपेंकहेंदुखसुन्योग्रामग्राममें
संग्रामकामरवोटेकूं ॥ वारवारदीनतापुकारीत्रियाझूंडबीचगां
धारीकहतमरेदेखिछोटेमोटेकूं ॥ जुधिष्ठिरएतीभर्तवासिनकी
पुत्रवधूकरतेछुवेगीनाहीफेरकजरौटेकूं ॥ ६४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
धनुषकृतश्रमपाथकों दोउहातकहिदेत ॥ त्यूंकुरुक्षेत्रबतात
हें हतेनृपनकोहेतु ॥ अधअंधतेरोपिता चखबंधनममटेक ॥ ति
नअंधनकेलकुटिवा भीमनराखीएक ॥ ६५ ॥ कुतीभतजाभी
मके सतसुतदियेमिटाय ॥ एकसुताममसोउहती अर्जुनकु

मतिअधाय ॥ ६६ ॥ ॥ अर्जुन ॥ ॥ प्रथमहरनकिय-
द्रौपदी दुतियहत्यौसुतमोर ॥ तातें भगनीपतिहतन कियोसं
कलपघोर ॥ ६७ ॥ ॥ गांधारी ॥ ॥ पतिसिरधारेगो
दमें लखिसुतमच्छकुमार ॥ रक्तलिप्तमुखकंचनकूं पोंछति
कहतपुकारि ॥ ६८ ॥ क्यूंत्यागीअपराधका कितजेहूंकछुबो
लि ॥ मैंकांताप्राणेसतूं अंतरंगतिकिखोल ॥ ६९ ॥ ॥ युधि
ष्ठि० ॥ ॥ मातामैंराखीछिमा कुलहिबचावनकाज ॥ दुर-
जोधनकलिरूपतें अधमभयोमैंआज ॥ ७० ॥ ॥ धृतरा० ॥ ॥
अबमेरेसुतपांचए तिनमेंअतिबलप्रीय ॥ भीमामिलावहुमोर
तें कैसीतलममजीय ॥ ७१ ॥ मिलतवृकोदरचरजिहरि पुतरा
धातुबनाय ॥ मिलवायोचूरनकियो नृपहिपर्यौमुरछाय ॥ ७२
॥ यहभीमअतिदुखतहों मारेसतसुतसोहि ॥ क्षुभितनीचमें
कुमतिकरि तिनहितमार्यौतोहि ॥ ७३ ॥ ॥ संजय ॥ ॥
अबनृपमारेभीमके मिलेकितवसुतआय ॥ अधमयहहरिपुत
रान्यौं भीमहिलियौबचाय ॥ ७४ ॥ ॥ धृतराष्ट्र ॥ ॥ कृ
पाकरीममदुखितपें ईस्वरसुमतिअगाध ॥ राख्योछलकरिभी
मकों टार्यौमोहिअपराध ॥ ७५ ॥ कियोसबनकोदाहक्रम ध
र्मपुत्रजुतभ्रात ॥ प्रथाकह्योअबकर्नकूं देहुजलांजलितात ॥
७६ ॥ क्षेत्रजअग्रजपांडुसुत तेरोबंधवसोय ॥ मातवचनसुनि
नृपसखे गिर्योजुधिष्ठिरराय ॥ ७७ ॥ प्रथमसोकभूल्योसवे
सोकनयोसुनिसुद्ध ॥ पहलेमोकूंकहतती भूलिनकरतोजुद्ध ॥
॥ ७८ ॥ ॥ छंदत्रोटक ॥ ॥ लखिकैनृपवंसविनासक-
नयों ॥ जलअंजुलिदेतविहालभयों ॥ हरिव्यासदुहूं समझाय
कह्यौ ॥ सुनिज्ञानहदेंनहिनेकगह्यौ ॥ समझायनझायघहेंह
मपें ॥ मिलिव्यासबसवै तिहिभीसमपें ॥ नृपबोलतभीसमतेंबति

थां॥निरषेदतेजातफटीछतियां॥तुमदेमुरवग्रासमुबोधदिये॥
तीनपैहमनीचप्रहारकिये॥जिनद्रोनसिरवायदियेनरकूं॥अब
सेरवनग्रसग्रस्त्रधरकू॥तिनकूंरनमेंहममारिलियो॥जबमानतहूं-
धिकमोरजियो॥जिनस्वादकछुनलियेजगके॥सबवालसरेमनमो
दगके॥जिनकीअबलाविधवावरते॥तिनकूंननिहारिसकूंडरतें॥
बिनजानिरवीसुतभ्रातहन्यो॥सबतेंनिजसत्रुविसेसगिन्यो॥
सबहीकुलकोहमनासकियो॥यनवातनतेंअकुलातहियो॥कि
हिरीतपितामहराजकरूं॥यहपापतेंपारकदाउतरूं॥इतनीकह
पार्थनिबीचिगिर्यो॥उठवायकेभीसमअंकभर्यो॥सरसेजपैबो
धपरेंसुतकों॥मुरव्यथापिवेदांतहिकेमतकूं॥सबआपकीआगि
तेंआपजरे॥किहिरीततुंपुत्रविलापकरे॥कुनमारतकोनमरे
कबहू॥सुधरूपअखंडलख्योसबहू॥करताहममानतमूढ
किते॥जगबीचबंधेनरजानिजिते॥करताभुकताप्रकृतिकहि
यै॥निजजानिअलेपसदारहियै॥पतिअंगअलिंगतहैप्रमदा
॥तिनतेंदुहितादोइभावजुदा॥गतिभावहिबंधरुमुक्तिगिनों
॥सबपापरुपुन्यउभैसुपनों॥लिंगथूलरुकारनदेहत्रिहू॥
भ्रमरूपबनीनहिंसत्यकहूं॥तनकूंवतेकर्मनसत्यबनें॥अस-
नामृगतोरनकोपगिनें॥सुनिभीसमवेनअज्ञानगयो॥मनु
भानुउदेतमनासभयो॥७९॥ ॥दोहा॥ ॥दिवसपि
चोतरसेजसर रारवेभीसमप्रान॥माघशुक्लपक्षअष्टमी सु
रपुरकियोप्रयान॥८०॥दाहकर्मकरिभीष्मको नृपतगयो-
पुरनाग॥सिंहासनबैठोसदय भईप्रजाबडभाग॥८१॥ ॥
इतिश्रीपांडवयशोंदुचंद्रिकायांपंचदशमयूखः समाप्तः॥१५॥
॥श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु॥
श्रीरस्तु.







श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ धृतराष्ट्रआदेस धरमपुत्रसिरपर धर्‌यो ॥ जथासुयोधनलेस कबहुअंगीकृत कर्‌यो ॥ १ ॥ स्नानदानगजगायमांहि भोजनसबनसुहाय ॥ प्रथमकहैधृतराष्ट्रजब पीछेनृपतसदाय ॥ २ ॥ जोपदार्थहोवे निजर करिधृतराष्ट्रविभाग ॥ विदुरयुयुत्सुआदिदे सबकूं देतसुभाग ॥ ३ ॥ कैदजुधिष्ठिरकोकियो देधृतराष्ट्रसुछोरि ॥ कैदकियोधृतराष्ट्रकों छोरीसकैनाहिंओर ॥ ४ ॥ ॥ युधिष्ठिर० ॥ ॥ समरनपूर्वविरोधकरो करैपितातेंद्वेष ॥ सोमेरेअतिसत्रुहै वल्लभतदपिविसेस ॥ ५ ॥ भयोपरिक्षतकोजनम सबकुलकोसुखदान ॥ देकोटिनधनद्विजन-कों कर्‌योभूपसनमान ॥ ६ ॥ कीनीविदुरप्रधानता नृपतिपंडुकीवेर ॥ सोइयुयुत्सुनेंकरी कृपायुधिष्ठिरहेरि ॥ ७ ॥ ॥ ॥ छंदनाराच ॥ ॥ वितीतरात्रीतीनजामभूपमंजनंकरे ॥ पितांबरंसुधारिफेरिदेवसेवविस्तरे ॥ जुहावअग्निहोत्रकूंरुगायाविप्रपूजिके ॥ बुलायकेअमात्यवृंदलाभखर्चवूझिके ॥ पितारुमातकूंप्रणामधारिकेसभाकरे ॥ प्रतापदेखिसत्रुआयतापतेंजरेंडरे ॥ सदेसकेविदेसकेकठीअमात्यआयके ॥ जथास्थितंसुमानदानजेचलंतपायके ॥ निहारिअस्वसालकूंरसोइथानआवना ॥ सहस्त्रअष्टओअशीरिषीनकूंजिमावना ॥ सबंधुफेरजीमिभूपभूपवृंदसंजुतं ॥ करेविचारसास्त्र-कोआरोगिपानअमृतं ॥ तृतीयजामपायकेलषंतसैन्यहाजरी ॥ करंतसस्त्रअस्त्रएकएकतेवराबरी ॥ प्रदोषसंधिसाधिकेकरंतरात्रिकोसभा ॥ लखातगाननृत्यतेंसुरेंद्रलोककीप्रभा ॥ करंतमंत्रद्वैधरीकियेसभाविसर्जनं ॥ प्रकासमंत्रहोतना विनासपल्लुतर्जनं ॥ वितीतडेढजामरात्रिकैद्वितीयभोजनं

॥समग्रनयदेसकेबचावकोप्रयोजनं॥ यतेककाजनित्यहैनि मत्तकाजश्रौरजे॥ अनेकदानहोमजापहोतसांझभोरजे॥ प्रहारकैंधनाढ्यपैंपुकारदीनकीभये॥ निबेरनीरषीरहोतराज द्वारपैंगये॥८॥ ॥दोहा॥ ॥अंधरेकुष्टीपांगरेजेकोउ बिनु आधार॥ तिनकूंल्यावनसातसत शिबकाकरतप्रचार॥९ ॥जितनितकीनोंधर्मसुत बापीकूपतडाग॥ तथाप्रजाराजा तथा बहुदेवालयबाग॥१०॥ ॥कबित्त॥ ॥सत्रुकोउ थापिपिछोथापिबैमेंब्रतभंगदीसलजुधिष्ठिरमेंअधनमेंकृक ता॥ कैदलोककुलकीत्यूंवेदकीमजादहीमेंस्वैरगतीमारुत मेंचालिकमेंरंकता॥ इतिग्रंथपूर्णतामेंसंचरलिखैयालिखे- चोरिइतहासनमेंहोरीमेंनिसंकता॥ चंद्रमामेंकाहकालराहूते रनसंकतात्यूंदुतियामेंबंकताहैपून्यूंमेंकलंकता॥११॥ दोहा ॥ ॥करयोराजयहरीतनृप अस्वमेधकियेतीन॥ अबअथ भोमरबत्रतिय कोउछबहोतनवीन॥१२॥ पंचभ्रातश्रीकृष्ण जुत भोजनकरतप्रभात॥ अथाद्रोपदीउभयदिग चलीपूर्व कीबात॥१३॥ बिपतिसमयकोभावसब अपनीमतिअनुरूप॥ कहतस्तुतीकरिकृष्णकी सुनतयुधिष्ठिरभूप॥१४॥ ॥क बित्त॥ ॥अबभृयस्नानअस्वमेधभयेकुंतीकहैजानतीमे रोकछेहोयहै॥ गुरजनपुरकीश्रमात्यश्रमरावनकीत्रियामिलि ऐहैमेरीकृपादीठजोयहै॥ तिनकीकरूंगीसतकारकदाभांति भांतिवस्त्रसुगंधदासीलियेतोलतोयहै॥ कृष्णकेप्रतापअबै तौहिश्रावश्रादरमेंबीततदिवसनिसासोवेकबसोयहै॥१५॥ द्रोपदीकहतमेरोबांछितसदैयहतोकदानानाभांतिनकेव्यंजन बनाउंगी॥ छहूरसभक्षभोज्यलेह्यचोस्यपाकपानरिषीनृपपं क्तिजुतनृपकूंजिमाउंगी॥ करिहैप्रसंसामेरीसुनिकेश्रवनताहि

विप्रनकीआपिषातेंआतिहिअघाऊंगी ॥ कृष्णकेप्रसादअबम हानसोंदहलबीचसाचोंनित्यनेमअबकासकबपाऊंगी ॥ १५ ॥ भीमसेनकहैमेरेहतीअभिलाषाऐसीगांधारीकेपूतकदागदातें प्रहारिहुं ॥ औरहूअनेकताकेंहोयहैंसहायनृपमसकासमानतें उजुदेजुदेमारिहुं ॥ सबैभूमिराजकुरुवंसिनकोछत्रताहियुधि ष्ठिरछिमासीलताकेसिरधारिहुं ॥ युद्धसिंधुग्राहभीरजुक्तसोत र्‍यौमेंनीकेकृष्णकेप्रतापताकोंकाजसुपुकारिहुं ॥ १६ ॥ अर्जु नकहतमोकूंरहतीबडीसीचाहिभूपनकेपुत्रदेसदेसनतेंआय हैं ॥ अस्त्रसस्त्रधनुकोप्रतापमोपैदेषिहैंतेआपकोपराक्रमसोह मकोदिषायहैं ॥ धनुविद्याचारभांतिसीषीरिषहैहमारेपासऐसो दिनहैंहैकबेसज्जनकूंभायहैं ॥ तिन्हेंशिक्षादेतेंमोकूंनित्यकूंस मयनाहिंकृष्णकोकहायफरेंन्यूनासिद्धिपायहैं ॥ १७ ॥ नकुल कहेचिचारआपदाकिबारमेरोजाकेहारएकअस्वधन्यछत्रीजातसो ॥ दोयकानचारपावएकपुछऐसोहयमेरेहोयअहाभाग्यमानोंब डीबातसो ॥ जाकेअपलछनसुलछनविचार्‍यौकरोंषानपानसेवा कोविधानसांझप्रातसो ॥ कृष्णकीकृपाप्रसंगलाषूहैंतरंगजुदेअंग रंगबीन्हनहीआयूंकूंबिलातसों ॥ १८ ॥ कहैंसहदेवअभिप्रायसबै आपदाकोजानतोमैंधन्यजाकूंविप्रनकोसंगहै ॥ अघहीनिदानऔ उपायषटवेत्तावैद्यराशिऔनक्षत्रग्रहज्योतिषकेअंगहै ॥ चारवेद षटशास्त्रकाव्यकोसव्याकरनसाहित्यसंगीतध्वनीलछनारुव्यं गहै ॥ कृष्णकेप्रसादऐसीविद्याजुतब्रह्मवृंदआवतअनेकरहैनि साद्योसरंगहै ॥ १९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जुधिष्ठिरकहत जदुकुलउद्योत ॥ हरिस्तुतिकहातुमसद्रसहोत ॥ महिभईभार पीडायमान ॥ अवतारलियोयदुवंसआन ॥ पूतनासकटअरुत्र णव्रत ॥ केसीखरबकअजगरकुकृत ॥ वछासुरप्रलंबासुरसं

चारि ॥ मघवाधिधिकालियमानमारि ॥ कंसदंतवक्रअगजरक
स्तर ॥ दलिकालजवनकियभारदूर ॥ नर्कासुरमागधआदिनी
च ॥ वाकीअष्टादसदिवसबीच ॥ सबभूमिभारकीनोसंधार
॥ पुनिसेरवसोइकरहोप्रहार ॥ कृष्णगमसविघ्रदारेकृपाल ॥
गिनतेनपारपाऊंभुपाल ॥ भीमकोदियोविषछलसुभाव ॥ वि
ष्णुकोकरततुमविनबचाव ॥ वन्हिकेसदनसबजरनवार ॥
कोविदुररूपउपदेसकार ॥ मद्दिनृपनजीतिमागधमदंध ॥ सब
पासलियोकरजरासंध ॥ भीष्मतेकुरुयदुतवप्रभाव ॥ तिनवि
गरसवनकूंदियोताव ॥ अजुनगजभागसोईनृपअत्रास ॥ न
रहरिप्रतापकियभीमनास ॥ द्रौपदीसभाबिचवस्त्रएक ॥ ऐं
चतहिथक्योंछलकरिअनेक ॥ दुरवासाआयोआपदेन ॥ ल
षिकुसमयमेरोधर्मलेन ॥ तवकृपाप्रसन्नव्हैदेअसीस ॥ प्रेर
फतेंकीनीउलटरीस ॥ प्रथमादियकर्नमनकोपप्रेरि ॥ गनिभी
ष्मद्वेषजिनसस्त्रगेरि ॥ भटकर्नद्रोनभीससमअभीत ॥ एकठे
लरतहोतेअजीत ॥ भीष्मकोपतनरनअसंभाव ॥ आपविन
कठिनवनतोउपाव ॥ वैष्णवसुत्रअस्त्रभगदत्तबकारि ॥ सोरव्यो
सुआपऊस्योमुरारि ॥ अर्जुनबचायजयद्रथअसंत ॥ उनर
थिनबीचमास्योअनंत ॥ ताकोंसिरताकेपितुसकास ॥ अंजुल
गतिकरिकियउभयनास ॥ वासवीशक्तिअर्जुनबचाय ॥ किय
घोघहिडंवासुतमराय ॥ द्रोनकोकोनकरतोनिपात ॥ गुरुजा
ननअर्जुनकरनघात ॥ आपकरिबोहोतछलअनायास ॥ द्रुप
दसुतहाथकीनोंविनास ॥ द्रोनीनारायनअस्त्रडारि ॥ ममसे
न्यजीनतोसघनमारि ॥ आपसेंहोयरक्षकउदार ॥ विस्मयन
नासपायेविकार ॥ अर्जुनमोहिमारनमरनधारि ॥ उनसमयदु
कुनर्क्रीनेउवारि ॥ नर्हीजवकरनफोसरपचान ॥ पटकिरथ-

सकलाकेरखेमान ॥ भीमकूंगदाछलकहिसुभाय ॥ सुयोधनमा रिकीनोसहाय ॥ निसकियोद्रोनसुतकर्मनीच ॥ पांचहिकोले गयोविपनबीच ॥ सुबलजाताहिनीतिसुनाय ॥ विषमममश्रा पतेलियेबचाय ॥ भीमतेमिलनजबपिताभाखि ॥ लोहमयकि- योतनलियोराखि ॥ ब्रह्मास्त्रतेजतेंगर्भबाल ॥ करचक्रप्रेरिराख्यो कपाल ॥ पूर्णताजिज्ञनिरविघ्नपाय ॥ श्रीकृष्णआयहोतांसहाय ॥ दिनप्रतिजिहपूजतअसुरदेव ॥ सोईकरतआपममअनुजसेव ॥ दासनसुखरासदीननदयाल ॥ करुनानिधानअघहरकपाल ॥ रीझतेदेतसुरस्वर्गलोक ॥ आपतोषीजतोहुविष्णुश्रोक ॥ ऐसोतजि स्वामीचहतआनि ॥ सोहिपदरूपचोपदसमान ॥ भुगतिदुखमि लेअवराजभोग ॥ जेकहाराबरीस्तुतीजोग ॥ बहुनिंद्यकर्महमजु तविकार ॥ कीर्तितैंकियेजगपवित्रकारि ॥ निजदोसकृष्णकी- स्तुतिनिहोरि ॥ बंधुनतेंबोलतनृपबहोरि ॥२०॥ ॥कवित्त॥ ॥ ॥दादोकानीनपितागोलकहमकुंडजहैपांचपतीएकत्रिया एहूविपरीतहै ॥ पितामहबंधुविप्रमारेतुछलोभलागिमृ- त्युलोकराजकाजअतिसेअनीतहै ॥ हमकोनपंक्तिदैछत्रीऐ सेकर्मकारीतिनकोस्कजससुन्योमिटेनर्कभीतहै ॥ भयेराज भागीदुखभागीतेकास्तुतिकरोंकहैंनृपकृष्णकीकृपालताकी प्रीतहै ॥२१॥ ॥दोहा॥ ॥करीस्तुतीनृपधर्मकी करैपाठजो कोय ॥ सबभारथकेपादेको फलपावेनरसोय ॥२२॥ ॥श्री कृष्ण०॥ ॥कवित्त॥ ॥दानकोनमानजाकोंमाननसचा- नहकोंवंसकोनमानजाकूंदेखतथकातहूं ॥ दारापुत्रआनमादिमे रेकरिराखेकहाताकोउपकारकरोंमनमेंसकातहूं ॥ जीवमात्रमेरो रूपजानिसदापूजतहैताकेपापहोयक्यूंजोहोयतोधकातहूं ॥ कृष्णचंद्रकहैतोसोंहोयजोअनन्यभक्तमेरोनेमताकेहाथवेचे

तेंधिकातहूं ॥२३॥ ॥दोहा॥ ॥सीखमागिद्वारावती गा
येकृष्णनिजगेह ॥ दूरिनिकटिहरिरहतलोउ नृपधनबढतसने
ह ॥२४॥ कछुकभीमदुखवचनतें कछुकविदुरसुनिज्ञान ॥ भो
धृतराष्ट्रविरागमय चाह्योविपिनप्रयान ॥२५॥ मांग्योनृपसुत
धर्मतें आतुरव्हेंआदेस ॥कहतजुधिष्ठिरदीनव्हें विस्मयजुत्त
विसेस ॥२६॥ सीखलेहितेंआपतें आपसीखकिहिपास ॥ लेल
पिताक्यूंकरतहौ हामकोपरमनिरास ॥२७॥ सुनिलपट्योगां-
धारिगर मूर्च्छितजथानरेस ॥ तबहीपितुकोंधर्मसुत जान्यौ
दुखतविसेस ॥२८॥ ॥व्यास०॥ ॥चौथेआश्रमतपक
रें सवैविपनसप्रीत ॥ हठनकरहुस्कतजानदे यहराजनकीरीत
॥२९॥ धर्मपितामहसीखसुनि तथाअस्तुकहिबेन ॥ कुलजु
तपहुंचावेंचल्यो दरतअंशदोउनेन ॥ ३०॥ त्रतीयमजलतेंसीख
ले भूपचल्योनिजगेह ॥ प्रथासंगगुरजनगह्यो तजिपुत्रनकोने
ह ॥३१॥ ॥जुधि०॥ ॥तेरेसुखहितवंसको कस्योद्विजन
जुतपात ॥ मातछांडिसुतराजश्री कहिकारनवनजात ॥३२॥
॥ ॥प्रथा०॥ ॥गांधारीधृतराष्ट्रदोउ सासूससुरसमान॥
चनकीसेवायनहितें करिहूंअर्धतपध्यान ॥३३॥ नृपतत्रिया-
जुतविदुरजुत संजयपृथासमेत ॥ तपहितविपननिवासकिय
व्यासाश्रमजुतहोत ॥३४॥ त्रितियवर्णसुतधर्मतिन आयोदर
सनलेन ॥ व्याससकृपादेखीसवन मरीसैन्यनिजनैन ॥३५॥
निकरिविदुरकीदेहतें धर्मराजकोअंस ॥लीनजुधिष्ठिरमैंभ
यो सबदेखतरिखतंस ॥३६॥ गयोजुधिष्ठिरदेहपुनी एकव
रउपरांत ॥ दागल्योवनतातहितें भयोमातुपितुअंत ॥३७॥
दीआज्ञाधृतराष्ट्रनें संजयचद्रिनिकेत ॥ गयोबहुरितपकरनकूं
आयुर्दायकहेत ॥३८॥ मिलेकृष्णतेंबहुतादिन भयेपार्थजिय

जानि ॥ लैंआज्ञानृपपैंकस्यौ द्वारापुरीप्रयान ॥ ३९ ॥ मिलहरि तेकोउकाल तितकीनेविविधविहार ॥ लखिनासागमजदुनको बोलेकृष्णउदार ॥ ४० ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ नरकै हैसुनिजदुवंसनास ॥ पुनिलोकत्तजहूंप्रकास ॥ त्रियनजुतजा कुलेवज्रनाभ ॥ मधुपुरीराजदीजहुसलाभ ॥ दिनदसकबीच मरजादलोपि ॥ करिहेंपुरमज्जनउदधिकोपि ॥ मेरीयहइच्छा जानिमीत ॥ पुरस्वर्गमिलहुमोतेंसप्रीत ॥ ४१ ॥ अर्जुन० ॥ ॥ छंदललित ॥ ॥ अखिलजुक्तकेहेतुरूपहो ॥ नरसरीरविश्वभूपहो ॥ निगमगानतेंपारतोनर ॥ स्तुतिकरूंजथाबुधिमोरना ॥ बुधिविरंचसेभूलिजातहैं ॥ प्रबलतारमायूंदिखातहैं ॥ डरतसा सदातेजआपतें ॥ रहतकालकूंभीतितापतें ॥ तुमअधीनतेंदी नदासतें ॥ अनुगमेंजियोयाहुलासतें ॥ अवनदासकोंत्यागिकी जिये ॥ विरहनासकुंगैलली जिये ॥ मिलिरपोसदासेजयानहू ॥ कछुनमैंगिन्यौलाभहानहू ॥ विषमतापरीजअजअही ॥ सुलभ ताकरीतअनअही ॥ चरनदासकूंयूंनछारिये ॥ कलिकलंकमेंनाहिं बोरये ॥ जदुनकोयहांनासहोयहै ॥ रहतजा त्रियाबालरोयहैं ॥ न यनदेखिकैंयाअभद्रकूं ॥ कहहुकाकहुंकौरवेंद्रकूं ॥ विपतिऔरतो सीसडारिये ॥ चरनसंगतेंनाहिटारिये ॥ ४२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सु निविनतीयहपाथकी कृष्णकहीसमझाय ॥ पांचभ्रातगिरतुहिन पैंदेहगारियोजाय ॥ ४३ ॥ भयोतुम्हारोजक्तमेंविच कुलविनासअपवा द ॥ यहसांतिअपवादकी करहुनऔरविषाद ॥ ४४ ॥ तूंतोमेरोरूपहै मिलहैमोतेंआय ॥ लेंगेफिरअवतारकछु ऐसोइकारनपाय ॥ ४५ ॥ छंदपधरी ॥ सुनिचल्योपाथजदुतियलिवाय ॥ पथवीचलुटेरे मिलेआय ॥ उद्यमनाकिरीटीफुस्योरंच ॥ व्हैंगयेसरूअअस्त्रहिंप्रपंच ॥ लेगयेजदुनकीत्रियालटि ॥ परिपंथिबाणनसकेछूटि ॥ सुरन

असुरंगा।जीयअजेय ॥ तिहे छतेहर्योधनअप्रमेय ॥ अकुलाय-
आपघातहीविचार ॥ व्यासतेंकहे पूरबप्रकार ॥ श्रीव्यासकहे
निजघातनिष्ट ॥ बडनतेंबडीमायाबलिष्ट ॥ सोई माया प्रेरकजुक्त
ईस ॥ उनईसविनासारेअनीस ॥ कुतननतेंऐसीबकुतवेर ॥ व्हेजात
पुत्रविचित्रअंधेर ॥ सुनिव्यासवचनकछुतजिविषाद ॥ आयोह
धनापुरअप्रमाद ॥ गिरिपर्योजुधिष्ठिरचरनबीच ॥ अंशुनतेंदी
नीभूमिसीचि ॥ उठावतजुधिष्ठिरउठतनाहिं ॥ मिलिरह्योसीस
दोउचरनमाहि ॥ ॥ युधिष्ठिर० ॥ ॥ इतनोंप्रलापकिहिरीतता
न ॥ तूंकहतबातनहींकहीजात ॥ अनिमितभयेइनहअनेक ॥
रौधरीवृषाआदिककितेक ॥ हैसकुलकृष्णतोकुसलतात ॥ कछु
कहकुमोरहियफटतजात ॥ ॥ अर्जुन० ॥ ॥ नहिंसकुलकु
सलतेंकृष्णचंद्र ॥ जिनकेप्रतापजीत्योसुरेंद्र ॥ जिहिंकृपाद्रोन
भीषममिटाय ॥ इकछत्रराजलयकर्योन्याय ॥ जिह्विटपछां
हिसुरथमिल्योराज ॥ बाग्योकुबापुट हिपर्योआज ॥ ४६ ॥ ॥ क
वित्त ॥ ॥ भागोडरिउत्तरसोगह्योविपरीतदोरिताकूंवेषहूमेंपी
छ्यारिकूंवताईना ॥ अरबयनिरवंगरुचयभयवनबीचाशिवकपटनि
पादतातेंतोहूंक्षमाआईना ॥ नागदेवदैत्यनतें विजयकरैया मेरो
नामहीविजयकृष्णविनाविजैपाईना ॥ गांजिवअरवयतोनजुक्त
सोंछतेंहिलूटिजादोनकीसूरवगईवनंतावचाईना ॥ ४७ ॥ ॥ छंद
पधरी ॥ ॥ विजयसुखसुनतनृपविषमबात ॥ भोविवसजथा-
शनिनिपात ॥ कछुकापदीतिसुधिभईभूप ॥ कियदानमहीआ
दिकअनूप ॥ परिदननतरुनसिरछत्रधारि ॥ सौंप्योजुयुत्सुकूंराज
भारि ॥ ४८ ॥ ॥ छंदकुरंगडाए ॥ ॥ राजपैंविराजकेसब
धुधर्मकाज ॥ नामसनह्वर्षकीनएकछत्रराज ॥ दीनतेंअदीनओं
असुरनिलदंड ॥ आयकेपरंनपायदेसरवंडरवंड ॥ दैअनेकदानचि

प्रसंद कूं उदार ॥ तीनअश्वमेधकीनदारिभूमिभार ॥ नागनामग्रामपें परीक्षितेंबिठाय ॥ वज्रनाभिकूंपुरीसुमथुरापठाय ॥ पांचबंधुद्रौपदी समेत छांडि भोन ॥ हेमअद्रिकेंप्रवेसधारिस्वर्गगोन ॥ द्रौपदीसमेतचा रबंधुदेहक्षीन ॥ भयमृत्युदेहतेंसुनाकगोनकीन ॥ व्योमगंगन्हायके सुदिव्यदेहधारि ॥ वसंतेंमिल्योनरेंद्रइंद्रपेंपधारि ॥ जोनअंसजोन- कोसुतोनवीचलीन ॥ व्हेगयोसुधर्मराजगोनकेंअधीन ॥ ४९ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ वैष्णवानांयथाशंभुर्देवानांगरुडध्वजः ॥ नदीनांचय थागंगाशास्त्राणांभारतीकथा ॥ १ ॥ इदंभारतमाख्यानंयःपठेच्छृणु यान्नरः ॥ अश्वमेधाधिकंपुण्यंलभ्यतेनात्रसंशयः ॥ ५१ ॥ इदंश्रुत्वाय थाशक्त्याब्राह्मणान्भोजयेन्नरः ॥ हित्वासोघसमूहंचह्यंतेविष्णुप दंव्रजेत् ॥ ५२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मोहिजससुनोकिनासुनो जन जससुनोजरूर ॥ ऐसोश्रीमुखकोबचन सुन्योनिकटअरिदूर ॥ ५३ ॥ फिरचाकरजसहोनतें ठाकरकोअधिकार ॥ दरसतयहविख्यातहै मैकाकहूंपुकारि ॥ ५४ ॥ तातेंकीनीचंद्रिका मेरीमतिअनुमान ॥ भक्तसंगअरुभक्तको देहुकृपानिधिदान ॥ ५५ ॥ पंगुलगुंगोरोगजु त बनिकछुधातुरजीव ॥ भयजुतबालकप्रियंअचरच सुननअना थसदीव ॥ ५६ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ ज्ञानअरुविरागदोऊपायनवि नाकुपंगुभक्तिरसनातेंहीनगुंगहूनिहारोगे ॥ त्रिधातापरोगीकर्मवा नीजबनिकहूमें भूखोदसधाकोकेउजन्मकोबिचारोगे ॥ कालभीत बालबुधिआत्माहेअबलाओअंधतत्वअंजनबिनाहूंनेकधारोगे ॥ एकअंगकेअनाथताकेविवेकसुनेहाथआदिअंतमेंअनाथनाथक्यों विसारोगे ॥ ५७ ॥ ॥ छंदछप्पे ॥ ॥ पंगुकुबजासंपातिगुंगजम- लार्जुनगावत ॥ रोगीमाधवदासबनिकर्तिरलोचनध्यावत ॥ छुधि तसुदामाविप्रभीतजुतव्रजकीभामिनि ॥ बालकध्रुवप्रह्लाद- अबलद्रुपदादिककामनि ॥ हेअंधसूरलोहमसुनेहाथधिकेतिन

केहरी ॥ जगकेनिवाससबगुनन्अुतभूपदासविनती
॥ ॥दोहा॥ ॥ रसरुअलंकृतग्रंथमें लिखेन
य ॥ समझहिबुधिजनविनुलिखे अबुधलखेनल
॥ पिंगळडिंगलसंस्कृतसब समझनकेकाज ॥ मिश्र
धरी छिमाकरहुकविराज ॥ ६० ॥ ॥सोरठा॥
कोवलनीक भूषनधुनिआदिकभयो ॥ दूषनस्वरनज
स्वाहमेटहिकिभा ॥ ६१ ॥ ॥दोहा॥ ॥ कलिजु
कूं लिवेपढेसबलोक ॥ तातेश्लोकहजारत्रय सरव
क ॥ ६२ ॥ कवितांकीरचनाभई वाचछंदविचलीन ॥
कवित्तानमें कथासंकीरनकीन ॥ ६३ ॥ नहिंकविताक
हिंभारकीबात ॥ निकसेचंचलताकरी करहुछिमाका
॥ ६४ ॥ हन्नयनाजनतेंस्कंमत उक्तिचंद्रिकाथान ॥
अतिबोधते भूप्रदासकोंजान ॥ ६५ ॥ ॥ इतिश्रीप
चंद्रिकास्वरूपदासविरचितषोडशमयूखः ॥ १६ ॥

॥ पांडवयशेंदुचंद्रिकासंपूर्णः ॥

॥ छंदछप्पै ॥ गोडवंशकुमुदेंदुविप्रभागीरथतिनके ।
प्रसादपुत्रआत्मभित्रकविनके ॥ तिनकरिविनयप्रा
यह आशयहीका ॥ यहिपांडवयशेंदुचंद्रिकारचिये
लखिवरमणविहारीमुदितताहिहरिजनकुमुदविका
छंदरसालंकारकीटीकाप्रकाशिका ॥ १ ॥

समाप्त.